11

विश्वास की विजयें

(11:1-40)

''विश्वास ही से'' इब्रानियों 11 अध्याय के अठारह कथनों का आरम्भ है। इनसे उन लोगों का पता चलता है, जिन्होंने परमेश्वर में भरोसा रखते हुए परीक्षा, सताव और परेशानियों का सामना किया। फोकस उन लोगों पर है, जिनकी ''विश्वास ही के द्वारा अच्छी गवाही दी गई'' (आयत 39)। पुराना नियम उन पुरुषों तथा स्त्रियों की कहानियां बताता है, जिन्होंने अपने पूरे जीवनों को परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं से चलाया। उन्होंने उसे माना, जो उनसे कहा गया, चाहे उनमें से कुछ आशिषें जो उसने उन्हें बताई थीं, भविष्य में बहुत देर बाद मिलने वाली थीं। अक्सर उन बातों की उसकी प्रतिज्ञाएं उनकी समझ से बहुत बाहर थीं, यानी ऐसी बातें, जिन्हें देखने के लिए उन्होंने जीवित नहीं रहना था, फिर भी उन्होंने उन्हें ऐसे मान लिया, जैसे वे वास्तविक हों। उनके विश्वास को ''नज़र'' माना गया।

विश्वास का एक विवरण (11:1)

[1]अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है।

आयत 1. इस अध्याय में विश्वास का सार, परमेश्वर की बात को वैसे ही मान लेना है। इस आयत में विश्वास की परिभाषा के बजाय इस शब्द का विवरण है यानी यह कहना बेहतर है कि इस आयत में विश्वास की दो खूबियां हैं।[1] विश्वास निश्चय और प्रमाण की बात है।

विश्वास परमेश्वर के विषय में हमारी सोच को ''निश्चय'' या ''सार'' (KJV) देता है। यहां इस्तेमाल हुआ यूनानी शब्द *hupostasis* में कहीं और केवल 1:3 में मिलता है, जहां इसका अनुवाद ''तत्व'' (''व्यक्ति''; KJV) और 3:14 में जहां फिर इसका अनुवाद ''भरोसा'' (''यकीन''; KJV) हुआ है। यह शब्द नये नियम में केवल दो बार ही 2 कुरिन्थियों 9:4 और 11:17 में मिलता है, जहां NASB में इसका अनुवाद ''यकीन'' किया गया है।

विश्वास के ऐसे ही दूसरे गुण ''प्रमाण,'' *elegchos* या ''यकीन'' हैं। हमारे वर्तमान वचन में NIV में ''पक्का'' (*hupostasis* के लिए) और ''निश्चय'' (*elegchos*) शब्दों का इस्तेमाल हुआ है: ''अब विश्वास उसका पक्का निश्चय है, जिसकी हमें आशा है और उसका निश्चय है, जिसे हम देखते नहीं हैं।'' यह बात बेकार लग सकती है, क्योंकि यह एक ही महत्वपूर्ण सच्चाई पर दो अलग-अलग ढंगों से जोर देती है।

NIV विश्वास को ऐसी बात बनाने में, जो पूरी तरह से निश्चितता हो, बहुत दूर चला जाता है। यह विश्वास की वास्तविक प्रकृति के लिए लगभग कोई सम्भावना नहीं रहने देता। यह

असल में आशा करने के उस तत्व को खत्म कर देता है, जो दिखाई नहीं देता है। ''यदि व्याख्या को उस बात तक सीमित करना होता, जिसे परखा जा सकता है तो विश्वास की आवश्यकता न होती।'[12]

1:3 में *huptostasis* का इस्तेमाल परमेश्वर की ''प्रकृति'' अर्थात उसके अस्तित्व के रूप में यीशु के लिए किया गया है। ''अन्य शब्दों में, परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं का 'होना ही' है।'[13] NEB में है ''विश्वास हमारी आशाओं को अर्थ देता है।'' मेकोर्ड के अनुवाद में कहा गया है, ''अब विश्वास उन बातों को वास्तविकता देता है, जिसकी हम आशा करते हैं और उनका प्रमाण जो दिखाई नहीं देतीं।'' इस वाक्य-रचना से सहायता मिल सकती है: ''अपने सक्रिय स्वभाव के द्वारा विश्वास अर्थ देता है, यानी उन बातों की वास्तविकता को दिखाता है, जिनकी आशा की जाती है। यह उन बातों की सच्चाई को दिखाता है, जो अभी देखी नहीं गई।'[14]

इन सब का अर्थ है कि बाइबल के अर्थ में विश्वास इतना अद्‌भुत है कि ''इसमें पहले ही वह है, जिसकी परमेश्वर ने भविष्य के लिए प्रतिज्ञा की है।'[15] वास्तव में विश्वास को आमतौर पर भविष्य की बातों से जोड़ा जाता है। ''यह कहना कि 'विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का सार है' विश्वास को उस वर्तमान वस्तु के रूप में आनन्द लेने के योग्य होने के रूप में देखना है, जो मुख्यतया भविष्य के लिए है।'[16] विश्वास भविष्य के लिए की गई परमेश्वर की प्रतिज्ञा में हमारे भरोसे का निश्चय और प्रमाण है।

''विश्वास'' शब्द के विभिन्न पहलुओं को दिखाते हुए फिलिप एजकुम्ब ने ''पक्का निश्चय'' को सबसे संतुष्टिजनक अनुवाद माना।[17] एक और टीकाकार ने यह कहते हुए आपत्ति की, ''मुख्यतया जो दिखाई नहीं देता है, वह, वह निश्चय या आश्वासन है, जिससे हम अनुभव करते या जो हमारे पास है, बल्कि यह है कि विश्वास उसे जिसकी प्रतिज्ञा की गई है, किस प्रकार से साबित करता या उसे 'अर्थ' देता है, किस प्रकार से उसका प्रमाण देता, जिस अदृश्य पर विश्वास किया जाता और वास्तविकताओं के लिए आशा की जाती है।'[18]

बिना विश्वास के कोई वास्तविक आशा नहीं हो सकती और बिना आशा के कोई वास्तविक विश्वास नहीं हो सकता। अनदेखी वस्तुओं की राह देखने का अर्थ किसी उत्तम वस्तु की आशा करना है। विश्वास का यही मुख्य पहलू है। वास्तव में पुरखे, ''[परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को] दूर से आनन्दित हुए और मान लिया'' (आयत 13) जिसकी तलाश में थे, उसकी वास्तविकता को ''विश्वास से'' जानते थे। ''केवल विश्वास के द्वारा ही हम इस आश्चर्यजनक बात को मान सकते हैं कि 'जो प्रकट है वह अदृश्य से निकला है' (NEB)।'[19] परन्तु परमेश्वर के वचन की सच्चाई के प्रमाण से मिला हमारे पास अपने विश्वास का प्रमाण है (रोमियों 10:17)। हमें विश्वास है, क्योंकि परमेश्वर ने बार-बार विश्वास योग्य ठहराया है। ''शारीरिक दृष्टि से दिखाई देने वाली वस्तुओं का यकीन या प्रमाण मिलता है, विश्वास वह अंग है, जो लोगों को अदृश्य क्रम को देखने के योग्य बनाता है (आयत 27 में मूसा की तरह)।'[10]

विश्वास हमें ''दृष्टि'' दे देता है। बेशक यह अंधेरे में छलांग नहीं है। ''विश्वास उसे वास्तविक तथ्य के रूप में समझ लेता है, जो ज्ञानेंद्रियों को पता नहीं होता है। यह नहीं कहा जा सकता है कि विश्वास भौतिक है। यह वास्तविकता को समझ लेता है, यानी यह वह है जिसके लिए आशा की अदृश्य वस्तुएं वास्तविक और भौतिक बन जाती हैं।'[11] हमारे मनों में आशा की

हुई वस्तुओं का "प्रमाण" हमारा विश्वास ही है।

"विश्वास ही से हम जान जाते हैं" (आयत 3) इस बात पर ज़ोर देता है कि ज्ञान और विश्वास पूरी तरह से अलग नहीं हैं। हम आत्मिक वास्तविकताओं को देख नहीं सकते हैं, परन्तु प्रकट की गई बातों से उन वास्तविकताओं का निश्चय होता है। "यह यकीन ही है, जिसकी आशा की गई है, वह होगा।"[12]

विशेषकर जैसा कि इब्रानियों की पुस्तक में इस्तेमाल किया गया है, विश्वास की परिभाषा देने के लिए हम इसे "भरोसा," या "यथार्थवादी भरोसा" कह सकते हैं। मूलतया *pistis* का अर्थ केवल "विश्वास" है। परन्तु इब्रानियों की पुस्तक में आमतौर पर इसका अर्थ है कि किसी कार्य को, जो परमेश्वर के वचन में भरोसा दिखाता है विश्वास के कारण अंजाम देना। अध्याय 11 कइयों के बारे में बताता है, जिन्होंने "विश्वास ही से" काम किया। आज्ञाकारी कार्य परमेश्वर और उसकी प्रतिज्ञाओं में भरोसे के कारण किया गया। "परमेश्वर ने कहा, मैंने माना और मामला सुलझ गया!" बहुत सीधी सी बात है, परन्तु इस कथन में "विश्वास" का सार है। आज जब कोई परमेश्वर के वचन को मानते हुए अपना पूरा जीवन दे देता है तो उसे इब्रानियों की पुस्तक में "विश्वास का अर्थ वह करना है, जो परमेश्वर कहता है!" में "विश्वास" का अर्थ समझ आता है।[13] यह मात्र अन्धविश्वास या भोलापन नहीं है। यह दिए गए प्रमाण पर आधारित है, जैसा कि हम इब्रानियों 11 में कई बार देखेंगे।

अपनी आशा के सम्बन्ध में विश्वास हमारा "निश्चय" या आश्वासन है। बिना आशा के अपनी सांसारिक समस्याओं के सम्बन्ध में हमारी स्थिति बड़ी दयनीय होती। सुधारवादी अगुवे जॉन कैल्विन (1509–1564) ने पूछा था, "हमारा क्या होता यदि हम अपनी आशा पर निर्भर न होते और यदि हमारे मन परमेश्वर के वचन और उसकी आत्मा की चमक के द्वारा अन्धकार की सोच से हमें संसार से ऊपर न उठाते?"[14] यह विश्वास केवल चाह पर आधारित नहीं है बल्कि परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर आधारित है। विश्वास ही के कारण अब्राहम के लिए स्वर्ग वास्तविकता बन गई (आयत 10)।

यह विश्वास बिना प्रमाण के नहीं है यानी यह मजबूत नींव पर पक्का विश्वास है। यह वैसा प्रमाण नहीं है जैसा चट्टान को छूने से मिलता है; तौभी इसमें वास्तविक "अर्थ" है। जैसे हम यह साबित कर सकते हैं कि पत्थर है, वैसे यह साबित नहीं कर सकते कि परमेश्वर है, परन्तु अपने विश्वास के हमारे पास पक्के प्रमाण हैं। उदाहरण के लिए मसीह के पुनरुत्थान में और उसकी इस बात में विश्वास करने के हमारे पास ठोस कारण है कि उसने जी उठना था (यूहन्ना 5:28, 29)। हम इसे क्यों मानते हैं? क्योंकि मसीह ने कहा था कि वह जी उठेगा और उसने अपने जी उठने के द्वारा हमारे जी उठने की सम्भावना को दिखा दिया। अपने विश्वास के द्वारा हम समझ लेते हैं कि जो कुछ भी दिखाई देता है वह हमारे अदृश्य परमेश्वर की आज्ञा के कारण है।

विश्वास "अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण [*elegchos*]" या यकीन है। किसी भी प्रकार का तर्क कभी यह साबित नहीं कर सकता कि कोई बात होने वाली है, परन्तु ईश्वरीय प्रकाशन (पवित्र शास्त्र) के द्वारा मिलने वाला विश्वास का प्रमाण विश्वासी व्यक्ति के लिए बिना किसी संदेह के इसे साबित कर सकता है। उदाहरण के लिए 1 कुरिन्थियों 15:35–41 में पौलुस द्वारा इस्तेमाल किए गए रूपक पुनरुत्थान की सम्भावना का संकेत देते हैं। रूपक किसी बात को

प्रमाणित नहीं करते, परन्तु वे मरे हुओं के जी उठने के विश्वास करने को स्वीकार्य बना देते हैं। कम से कम रूपकों से यह पता चल सकता है कि यह बहस करना कितनी बड़ी मूर्खता है कि पुनरुत्थान हो ही नहीं सकता। प्राकृतिक असम्भावना के रूप में शारीरिक पुनरुत्थान को देखने की मूर्खता को समझाने के लिए पौलुस ने उदारहण देकर बताया कि बीज के साथ क्या होता है (मर जाता है ताकि एक नया पौधा निकल सके)। उसने दिखाया कि नई और अलग देह हो सकती है और वह "देह" ही रहेगी। उसने प्रकृति में पाए जाने वाले आम उदाहरणों का इस्तेमाल किया। यदि कोई इस बात से इनकार करता है कि मुर्दा देहों में जान डालने के लिए उन्हें जिलाया नहीं जा सकता तो वह "मूर्ख" है (1 कुरिन्थियों 15:36)। इसलिए परमेश्वर के प्रकाशन पर आधारित हमारा निश्चय ऐसे तर्कों के द्वारा तर्कसंगत दिखाया गया है।

ऐसा नहीं है कि "मैं विश्वास करता हूं क्योंकि मैं विश्वास करना चाहता हूं," जैसे कि केवल इच्छा करने से ही विश्वास होता हो, क्योंकि मसीही विश्वास का सार यह नहीं है, परन्तु बिना निष्कपट खोजी होने के कोई विश्वास नहीं करेगा (आयत 6)। व्यक्ति के लिए इसके अर्थ को समझने को मानने के लिए सच्चाई को समझने और मानने को तैयार होना आवश्यक है (यूहन्ना 7:17); परमेश्वर की आज्ञा मानने की इच्छा के बिना ऐसी समझ देने की कोई प्रतिज्ञा नहीं है। शैतान को उनके मनों को सच्चाई को न देखने देने की अनुमति दी गई है (2 कुरिन्थियों 4:3-5)। इब्रानियों 11 में विश्वास को हमारे भीतर निश्चय और आश्वासन के रूप में दिखाया गया है कि कुछ वास्तविकताओं का अस्तित्व है, चाहे हम उन्हें अपनी शारीरिक आंखों से देख नहीं सकते हैं।

इब्रानियों की पुस्तक में "विश्वास" और "आशा" को लगभग एक-दूसरे के स्थान पर इस्तेमाल होने वाले शब्दों के रूप में दिया गया है।[15] वास्तविक विश्वास भविष्य में मिलने वाली सम्पत्ति के लिए "स्वामित्व विलेख" ("निश्चय" या आश्वासन के लिए) जैसा है।[16] विश्वास पर आधारित और प्रमाण से बनी हमारी आशा हमें उद्धार तक लाती है (रोमियों 8:24, 25)। जो व्यक्ति कभी बाइबल को पढ़ता या इसका अध्ययन नहीं करता है या सुसमाचार को नहीं सुनता है उसे ऐसा विश्वास नहीं होगा।

विश्वास का प्रगटावा (11:2, 3)

[2]क्योंकि इसी के विषय में प्राचीनों की अच्छी गवाही दी गई।

[3]विश्वास ही से हम जान जाते हैं, कि सारी सृष्टि की रचना परमेश्वर के वचन के द्वारा हुई है। यह नहीं, कि जो कुछ देखने में आता है, वह देखी हुई वस्तुओं से बना हो।

आयत 2. कुछ विश्वासी पुरखाओं का नाम देने से पहले लेखक ने यह कहते हुए कि उनकी अच्छी गवाही दी गई (*martureō*) उनकी प्रशंसा की। प्राचीनों का अनुवाद *presbuteros* से लिया गया है, जिसका नये नियम में अक्सर अनुवाद "प्राचीन" होता है। इन पुरखाओं में हाबिल, हनोक, नूह और अब्राहम शमिल थे। ऐसे प्राचीनों को उनके गुणों, सम्पत्ति, शिक्षा या सांसारिक प्राप्ति के कारण नहीं, बल्कि उनके विश्वास के लिए सराहा गया। इस आयत का अर्थ

हो सकता है, ''और इन प्राचीनों के लिए परमेश्वर द्वारा गवाही दी गई।''[17] विचार सम्भवतया यह है कि ''पवित्र शास्त्र में वे अमर हो गए।''[18]

हाबिल (आयत 4) और शायद अन्यों की ''गवाही'' या ''साक्षी'' दी गई थी, परन्तु बाइबल में सबसे पहले ''धर्मी'' नूह को ही बताया गया (उत्पत्ति 6:9)। वह परमेश्वर के साथ अपनी विशेष स्थिति से अवगत था क्योंकि आने वाली बातों की चेतावनी केवल उसी को दी गई थी (आयत 7)। परमेश्वर ने उसकी ''धार्मिकता'' के लिए उसकी सराहना की हो सकती है। इन ''प्राचीनों'' से परमेश्वर सीधे बातचीत करता था, परन्तु हमसे नहीं करता। हमें जानकारी पवित्र शास्त्र में मिलने वाले अन्तिम प्रकाशन के द्वारा मिलती है। अपने विश्वास के लिए परमेश्वर के सामने हमारा भी अच्छा नाम हो सकता है और उसकी प्रकट इच्छा के द्वारा हम उसकी स्वीकृति के पक्का होने को मान सकते हैं। अध्याय 11 वाले पुरखों के लिए परमेश्वर की प्रशंसा को हमारे लिए नमूने के रूप में ''पक्के तौर पर रखा गया'' था।[19] उनके विश्वास ने उन्हें दूसरों से अलग कर दिया और उन्हें परमेश्वर की स्वीकृति मिल गई।

आयत 3. विश्वास ही से हम जान जाते हैं ... विश्वास ही से मसीही लोगों को समझ आता है कि एक ईश्वरीय दिमाग और सामर्थ ने हमारे संसार की सृष्टि की। यह आयत अनदेखी बातों का अच्छा उदाहरण देती है, क्योंकि सृष्टि की रचना होते किसी ने नहीं देखी। यह कैसे बनी, इसकी किसी भी शिक्षा के पक्का होने पर हमें शेखी मारने की आवश्यकता नहीं है; परन्तु लेखक ने कहा कि विश्वासी मन के लिए ''आदि में परमेश्वर ने सृष्टि की'' उतना ही पक्का और स्पष्ट है जितना यह कि ''सूर्य पूर्व में उदय होता है।''

बहुत से लोगों का मानना है कि ईश्वरीय सृष्टि की बात विज्ञान के तथ्यों के विपरीत है। विज्ञान हमें भौतिक गुणों और अन्य मिश्रणों के साथ इसकी रासायनिक प्रतिक्रिया के आधार पर बताता है कि मिश्रण क्या है, परन्तु यह हमें आरम्भ के बारे में कुछ नहीं बता सकता। शायद यही कारण है कि बहुत से लोगों को हमारे संसार के आरम्भ का अनुमान लगाना अच्छा लगता है। आरम्भ के समय, देखने के लिए कुछ भी नहीं था।[20] वैज्ञानिक थ्योरियां नई-नई खोजों के साथ बदलती रहती हैं। कई बार कोई खोज हमें पवित्र शास्त्र की अपनी समझ की फिर से समीक्षा करने को विवश करती है, क्योंकि हमने इसकी सही व्याख्या नहीं की थी। परन्तु यह हमारे विश्वास को खत्म नहीं कर सकती, क्योंकि विश्वास विज्ञान से आगे है।

विकासवाद विज्ञान की एक थ्योरी है, परन्तु यह विज्ञान नहीं है; क्योंकि सही ढंग से इस्तेमाल किए जाने पर ''विज्ञान'' शब्द का अर्थ ''ज्ञान'' होता है। केवल फिलॉसफ़ी ही यह कहने तक जा सकती है कि ''शून्य से कुछ नहीं बन सकता।'' विश्वास यह घोषणा करते हुए कि ''परमेश्वर के वचन के कारण हम दृढ़ता से पुष्टि करते हैं कि संसार शून्य से बना क्योंकि यह परमेश्वर के कहे गए वचन के द्वारा रचा गया।'' बाइबली विश्वास इस बात की पुष्टि करता है कि सारी सृष्टि की रचना परमेश्वर के वचन के द्वारा हुई है। और स्पष्टता से कहें तो संसार को ''परमेश्वर के वचन के द्वारा'' बनाया गया था। यहां ''वचन'' (*rhēma*) यूहन्ना 1 में *logos* के ख्रिस्तशास्त्रीय अर्थ में होने के बजाय परमेश्वर के कहे गए वचन के लिए है।

इब्रानियों की पुस्तक यह साबित करने का कोई प्रयास नहीं करती कि परमेश्वर में यह सामर्थ है और उसने सृष्टि के कार्य को किया है। बल्कि मूसा (उत्पत्ति 1:1) और भजन लिखने

वाले (भजन संहिता 33:6, 9) की तरह यह आत्मा के अधिकार से बात करती है। हमारे पास अनुभव का कुछ प्रमाण है कि संसार की सृष्टि इस प्रकार से हुई थी, परन्तु हमारा अन्तिम प्रमाण परमेश्वर का वचन ही है। अनुवादित शब्द ''जान जाते'' (*noeō* से) के एक रूप का इस्तेमाल रोमियों 1:20 में पौलुस द्वारा जो कुछ परमेश्वर ने बनाया है, उसे उसके स्वभाव को जानने की मनुष्य की स्वाभाविक योग्यता के लिए इस्तेमाल किया है।

परमेश्वर द्वारा बनाई गई चीज़ों में ''संसार'' (*aiōn* से, *aiōnas*) या ''युग'' शामिल हैं। इस शब्द का अर्थ है ''मसीह में सब बातों को इकट्ठा करने ... की ओर ले जाते इसके एक के बाद एक आने वाले प्रगतिशील चरण।''[21] इसमें ''समय और अवधि की परिस्थितियों में आने वाली सब बातें'' शामिल हैं।[22]

यह नहीं कि जो कुछ देखने में आता है का स्पष्ट अर्थ है ''शून्य से बना।'' संसार को पहले से मौजूद तत्व से नहीं बनाया गया था, बल्कि यह *creatio ex nihilo* था जो कि ''शून्य में से सृष्टि'' का एक लातीनी शब्द है। यूनानी विचार के साथ यह मेल नहीं खाता था। इब्रानियों के लेखक द्वारा *ex nihilo* का इस्तेमाल नहीं किया गया, परन्तु ''उसके इनकार में कि संसार की सृष्टि दिखाई देने वाली चीज़ों [ज्ञानेन्द्रियों द्वारा महसूस किए जाने वाले] से हुई में व्यवहारिक रूप में सही अर्थ मिलता है।''[23] सृष्टि परमेश्वर के वचन के द्वारा बनी थी: ''आकाश मंडल यहोवा के वचन से ... बने ... क्योंकि जब उसने कहा, तब हो गया; जब उसने आज्ञा दी, तब वास्तव में वैसा ही हो गया'' (भजन संहिता 33:6–9)।

धर्मी लोगों का एक चित्रण (11:4-7)

4विश्वास ही से हाबिल ने कैन से उत्तम बलिदान परमेश्वर के लिए चढ़ाया; और उसी के द्वारा उसके धर्मी होने की गवाही भी दी गई: क्योंकि परमेश्वर ने उसकी भेंटों के विषय में गवाही दी; और उसी के द्वारा वह मरने पर भी अब तक बातें करता है। 5विश्वास ही से हनोक उठा लिया गया, कि मृत्यु को न देखे, और उसका पता नहीं मिला; क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया था, और उसके उठाए जाने से पहिले उसकी यह गवाही दी गई थी, कि उसने परमेश्वर को प्रसन्न किया है। 6और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है, क्योंकि परमेश्वर के पास आने वाले को विश्वास करना चाहिए, कि वह है; और अपने खोजने वालों को प्रतिफल देता है। 7विश्वास ही से नूह ने उन बातों के विषय में जो उस समय दिखाई न पड़ती थीं, चितौनी पाकर भक्ति के साथ अपने घराने के बचाव के लिए जहाज़ बनाया, और उसके द्वारा उसने संसार को दोषी ठहराया; और उस धर्म का वारिस हुआ, जो विश्वास से होता है।

यहां पर लेखक ने विश्वास पर अपने विवरण में पुराने नियम के धर्मी लोगों के एक भाग को शामिल किया। उसने हाबिल, हनोक और नूह के साथ आरम्भ किया (आयतें 4, 5, 7)। फिर उसने अब्राहम, इसहाक, याकूब और सारा का नाम दिया जो विश्वास से आज्ञा मानते हुए चलते

रहे (आयतें 8–16)। तीसरा समूह अब्राहम, इसहाक, याकूब, यूसुफ और मूसा सहित कष्ट के द्वारा परखे जाने वालों का है (आयतें 17–28)।[24]

आयत 4. हाबिल ने कैन से उत्तम बलिदान परमेश्वर के लिए चढ़ाया (देखें उत्पत्ति 4:1–16)। ''उत्तम'' (*polus* से *pleiona*) का अर्थ ''बड़ा'' या ''अधिक महत्वपूर्ण'' हो सकता है।[25] कइयों का मानना है किउत्पत्ति 4:4 में वह ''भी ले आया'' और बहुवचन ''भेंट'' सुझाव देता है कि उसने कैन से बढ़कर दिया। मूल में इसका अर्थ हो सकता है कि हाबिल ने ''अधिक'' दिया, जो मूल्य या मात्रा में अधिक का अर्थ देता है।[26]

हाबिल ने विश्वास ही से काम किया परन्तु कैन ने अपने ही तर्क को माना होगा। स्पष्टतया उसे लगा, ''यदि यह भेंट मेरे लिए काफी है तो यह परमेश्वर के लिए भी काफी होनी चाहिए।'' उसका व्यवहार विश्वास वाला व्यवहार नहीं था, जिस कारण उसके बलिदान को हाबिल के बलिदान से निकम्मा माना गया। उसकी भेंट से संकेत मिलता है कि उसे पाप की वास्तविक समझ नहीं थी।[27] परमेश्वर को आदम के दोनों बेटों के दिल का पता था और कैन के उसके न्याय की पुष्टि बाद में अपने भाई के प्रति कैन के कार्य से होती है। हाबिल ने ''विश्वास ही से'' बलिदान भेंट किया था और वह धर्मी था, इसलिए हाबिल का मन सीधा था, जिससे उसे परमेश्वर के सामने धर्मी खड़े होने में सहायता मिली और उसके और उसके भाई के बीच मुख्य अन्तर किया।

हाबिल की गवाही भी दी गई (*martureō*)। यह गवाही कैसे दी गई हमें नहीं बताया गया। एक सभ्भावना यह है कि परमेश्वर ने आग को उस बलिदान को भस्म करने दिया; 1 राजाओं 18:38 में एलिय्याह की भेंट के साथ उसने यही किया था।[28] निश्चय ही कैन की भेंट के स्वीकृति किए जाने का कोई प्रमाण नहीं था। उत्पत्ति 4:6, 7 में परमेश्वर ने कैन से बात की। शायद उसने हाबिल से भी बात की जिसमें उसने उसे बताया कि उसकी भेंट स्वीकार कर ली गई है। हो सकता है कि उसने साफ कह दिया हो एक धर्मी है जबकि दूसरा दुष्ट है (1 यूहन्ना 3:12)। दुष्ट व्यक्ति भलाई से घृणा ही करता है।

इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने इन कुछ आयतों में इस बात की पुष्टि की कि वह उत्पत्ति की सारी पुस्तक को मानता था। यह कहना बेमेल है कि ''मैं नये नियम को तो मानता हूं, पर पुराने को नहीं।'' हाबिल पवित्र शास्त्र में सदा के लिए लिखे गए वचन के द्वारा अब तक बातें करता है।[29] उसके मरने के बहुत देर बाद भी उसके काम चलते रहते हैं (प्रकाशितवाक्य 14:13)। वे कहते हैं, ''मेरा उद्धार विश्वास से हुआ था। यदि तुम इब्रानी लोग उद्धार पाना चाहता हो तो तुम्हे भी वैसे ही विश्वास के साथ काम करना होगा जैसे मैंने किया।'' वास्तव में व्यक्ति अपनी मृत्यु के बाद उससे अधिक ''कह'' सकता है, जो उसने अपने जीवनकाल में कहा हो। क्योंकि किसी के जीवन और स्वभाव को दूसरे लोग उसके जीते जी माने न माने पर उसके चले जाने के बाद उससे अधिक मानते हैं। अपने अनुकरणीय विश्वास के द्वारा हाबिल आज भी पवित्र शास्त्र में प्रकाशन के द्वारा इक्कीसवीं सदी के लोगों को पिता की इच्छा को वैसे ही मानने की ताड़ना और प्रेरणा देते हुए, आज भी, उनसे बातें करता है। वह हमें आश्वासन देता है कि मृत्यु में भी प्रामाणिकता और न्याय होगा, जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि परमेश्वर सब कुछ भले के लिए करता है (देखें रोमियों 8:28)। हाबिल का लहू आज भी भूमि में से पुकारता है

(देखें उत्पत्ति 4:10)। न्याय के दिन पुकाराने वालों को पूरे न्याय के साथ उत्तर दिया जाएगा।

यीशु का लहू "हाबिल के लोहू से उत्तम बातें कहता है" (इब्रानियों 12:24), क्योंकि उसका लहू पुकारता है कि "अब क्षमा सम्भव है।" हाबिल नये नियम के समय के शहीद होने वाले पवित्र लोगों के साथ मिल जाता है, केवल यह जानने के लिए कि ऐसा शहीदों की हाजिरी पूरी हो जाने के बाद होगा (प्रकाशितवाक्य 6:9-11)।

आयत 5. हनोक का संक्षिप्त विवरण उत्पत्ति 5:21-24 में मिलता है; आयत 24 को हमारे वचन पाठ में उद्धृत किया गया है, उसका पता नहीं मिला; क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया था। यहूदा 14 हमें बताता है कि हनोक एक भविष्यद्वक्ता था। वह नूह की तरह ही धर्म का प्रचारक होगा (2 पतरस 2:5)। उत्पत्ति की पुस्तक से पता चलता है कि अपने पुत्र मतूशेलह के जन्म के बाद वह परमेश्वर के साथ-साथ चलता रहा। बहुत बार कोई व्यक्ति अपने बच्चे के जन्म के बाद ही परमेश्वर के साथ चलना चुनता है। वह कीमती उपहार उसे परमेश्वर के प्रति अपनी पूरी जवाबदेही और जिम्मेदारी को समझने में सहायता करता है। वह यह समझने लगता है कि उसे अपने बालक को जैसे उसका पालन पोषण करना चाहिए वैसा करने के लिए अपनी योग्यता से बढ़कर सहायता की आवश्यकता है (नीतिवचन 22:6)।

परमेश्वर के साथ अपनी धर्मी चाल के कारण हनोक को पृथ्वी से स्वर्ग में ले जाया गया ताकि उसे मृत्यु न मिले। (यह केवल उसके साथ और एलिय्याह के साथ हुआ; 2 राजाओं 2:1, 11.) यह सचमुच का "रैप्चर" था क्योंकि उसे "उठा लिया" (*metatithēmi*) गया था। ("उठा लिया" उस लातीनी शब्द का अर्थ है, जिससे "रैप्चर" शब्द लिया गया है।) LXX जिसमें से इब्रानियों के लेखक ने बार-बार उद्धृत किया, उत्पत्ति 5:24 में इसे "उठा लिया" गया बताता है। हनोक ने केवल शारीरिक रूप से आत्मिक या सांसारिक से स्वर्गीय में जाने के लिए "पासा ही बदला।"

शकेम में याकूब की लाश को ले जाए जाने के लिए प्रेरितों 7:16 में "उठाया गया" के लिए वही शब्द इस्तेमाल हुआ। गलातियों 1:6 में पौलुस ने इसका इस्तेमाल गलातियों द्वारा शिक्षा के विश्वासों में अचानक बदलाव के लिए किया (जैसे वे गलती में अचानक उठा लिए गए या बहा ले जाए गए)। व्यवस्था में बदलाव के लिए इब्रानियों 7:12 में भी इसी शब्द का इस्तेमाल हुआ।

हमें नहीं पता कि हनोक को जाते हुए किसी मित्र या भाई ने देखा हो, क्योंकि एलिय्याह की विदाई को देखने की अनुमति एलीशा को दी गई थी (2 राजाओं 2:1-14)। जिस प्रकार से बाद में कुछ लोग एलिय्याह की लाश ढूंढ़ते रहे क्या कुछ लोगों ने हनोक की लाश ढूंढ़नी चाही (2 राजाओं 2:17)? "नहीं मिला" से यह सुझाव दिया जा सकता है। हनोक को जीवन के दूसरी ओर ले जाया गया (जिसका सुझाव *metatithēmi* शब्द भी देता है) और मिला नहीं होगा। TEV के अनुवाद से संकेत मिलता है कि कुछ लोग यह कहते हुए उसकी लाश ढूंढ़ते थे कि "कोई उसे ढूंढ़ नहीं सकता।" वे यह पता नहीं लगा पाए कि वह कहां गया, परन्तु उन्हें उसके ठिकाने का कुछ पता चल जाता यदि उन्हें उसका पता चल जाता जिसके साथ गायब होने से पहले प्रतिदिन चला करता था। उसने अवश्य किसी को बताया होगा कि वह परमेश्वर के साथ और परमेश्वर उसके साथ बातें करता था।

आयत 5 यह नहीं कहती कि उसका "विश्वास उसे ले गया था।" बल्कि परमेश्वर की प्रेम

पूर्वक कृपा ने यह तय कर लिया कि उस समय के पृथ्वी के सब लोगों से बढ़कर इस व्यक्ति को मृत्यु की तराई में से गए बिना स्वर्ग में प्रवेश करने का सौभाग्य मिलेगा।

परमेश्वर के साथ होने के लिए अपने जाने से पहले हनोक को अपने आत्मिक चलन के सम्बन्ध में एक अतिरिक्त प्रकाशन मिला। पृथ्वी पर उसके धर्मी जीवन के प्रमाण के रूप में यह हमारे पास है।[30] क्या उसके पुत्र मतूशेलह को यह प्रकाशन बताया गया था, ताकि परमेश्वर के विषय में उसका ज्ञान भी उसे पूरा जीवन धर्मी रहने के लिए प्रेरित करता? यदि वह ऐसे ज्ञान के अनुसार चलता था तो हो सकता है कि इसी कारण परमेश्वर ने उसे किसी भी व्यक्ति से बढ़कर जिसका उल्लेख पवित्र शास्त्र में है, जीने की अनुमति दी (969 वर्ष; उत्पत्ति 5:27)। जो कुछ हनोक ने अपने पुत्र पर प्रकट किया उससे सुझाव मिला हो सकता है कि वह कहां जाना चाहता था और कहां गया। मसीह के द्वितीय आगमन के समय सभी जीवित धर्मी लोगों को ऐसे ही बदल दिया जाएगा (1 कुरिन्थियों 15:51, 52; 1 थिस्सलुनीकियों 4:13–18)।

पवित्र शास्त्र कहता है कि हनोक की संगति ऊपर उठाए जाने से पहले परमेश्वर के साथ थी। विश्वास के द्वारा, ज्योति में चलने के द्वारा व्यक्ति की ऐसी संगति होनी आवश्यक है वरना उसे मसीह की महिमा में मिलने के लिए बदला नहीं जा सकता है (1 यूहन्ना 1:6, 7; 3:2–6)।

मृत्यु से हनोक के अद्‌भुत ढंग से छुटकारे का कारण उसका विश्वास था। इब्रानियों 11:6 उस विश्वास की आवश्यकता को बताता है। उसके विश्वास और आज्ञा मानने ने परमेश्वर को प्रसन्न किया।

आयत 6. फिर लेखक बताता है कि हनोक का विश्वास उसे परमेश्वर की संगति की स्थिति से स्वर्ग में कैसे ले गया क्योंकि विश्वास बिना [परमेश्वर को] प्रसन्न करना अनहोना है। परमेश्वर में विश्वास किए बिना कभी किसी ने उसे प्रसन्न नहीं किया है। हनोक ने परमेश्वर को अत्यधिक प्रसन्न किया, जो स्पष्ट रूप में उसके विश्वास के केवल मानसिक सहमति से बढ़कर पूरी तरह से भरोसा रखकर आज्ञा मानने के कारण था। इब्रानियों की पुस्तक में मिलने वाले "विश्वास" में यह आवश्यक तत्व है। बिना विश्वास के उसे प्रसन्न करना "अनहोना" है, जिसका अर्थ यह नहीं है कि यह कठिन है बल्कि यह है कि कोई और अपवाद नहीं है। यह केवल किसी "देवता," "सीढ़ियों पर किसी आदमी" या "बड़ी आत्मा" में विश्वास जैसा नहीं है। यह एक सच्चे परमेश्वर में विश्वास है! यह उस परमेश्वर में विश्वास है जिसने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें कीं और अब मसीह के द्वारा बातें की हैं (1:1, 2)।

परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए दो सच्चाइयों पर विश्वास करना आवश्यक है: (1) यह कि वह है और (2) यह कि वह अपने खोजने वालों को प्रतिफल देता है। परमेश्वर की आवश्यक भलाई में जिस पर बहुत से लोग संदेह करते हैं और आमतौर पर संदेहवाद का कारण बताया जाता है, विश्वास में यह दूसरा विचार होना आवश्यक है। हम परमेश्वर को तभी "दिल से खोजेंगे" (NIV) यदि हमें अन्त में प्रतिफल मिलने का विश्वास होगा। "खोजना" (*ekzēteō*) शब्द का अर्थ "ढूंढ़ना, तलाश करना" है।[31] प्रतिफल निश्चय ही गाड़ियां, मकान तथा अन्य संपत्तियों को पाने से नहीं मिलता है। परमेश्वर को ढूंढ़ने का हमारा प्रतिफल पूरी तरह से अनन्तकाल में मिलेगा। तब तक हम उसके विपरीत उपाय के लिए आश्वस्त हो सकते हैं (रोमियों 8:28)। इसकी प्रतिज्ञा सच्चे मन से उसकी खोज करने वाले के लिए की गई है क्योंकि

ऐसा व्यक्ति ही उसे ढूंढ़ पाएगा।

इब्रानियों की पुस्तक में ''विश्वास'' का अर्थ वह भरोसा है जिससे व्यक्ति को परमेश्वर को ढूंढ़ने की तीव्र इच्छा होती है। ''परमेश्वर के पास *आने*'' वाला व्यक्ति वह है जो ''शरीर'' के अनुसार नहीं, बल्कि उसकी इच्छा के अनुसार जीवन बिताता है, क्योंकि ऐसा व्यक्ति ''परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर'' सकता (रोमियों 8:8)। ऐसे विश्वास से वह प्राप्त होता है जिसकी खोज दाऊद ने की थी: ''मैं यहोवा के पास गया, तब उस ने मेरी सुन ली, और मुझे पूरी रीति से निर्भय किया'' (भजन संहिता 34:4)।

कुछ लोग यह कहते हुए कि ''उन्होंने विश्वास किया पर उनका विश्वास नहीं था'' चाहे उनकी बात करते हैं जो विश्वास से फिर गए हैं, पर ऐसे विचार को आयत 6 में नकार दिया जाता है। ''विश्वास'' के लिए यूनानी शब्द (*pistis*) का हिन्दी अनुवाद ''विश्वास'' और ''प्रतीति'' दोनों हुआ है। हमारी भाषा में चाहे इसके दो शब्द हैं, परन्तु यूनानी भाषा में एक शब्द था। यह आयत स्पष्ट कहती है कि ''विश्वास बिना'' परमेश्वर को प्रसन्न नहीं किया जा सकता, ''विश्वास करना आवश्यक'' है। केवल विभिन्नता के लिए हिन्दी और अंग्रेज़ी के अनुवादों में दो अलग-अलग शब्दों का इस्तेमाल किया गया है। नये नियम में ''विश्वासियों'' पढ़ने का अर्थ उन्हें उनके साथ मिलाना है जिनका ''विश्वास'' है।[32] मूसा के विश्वास के कारण वह ''अनदेखे को'' देख पाया (आयत 27)।

परमेश्वर में विश्वास करना क्यों आवश्यक है? अन्य कारणों सहित ये कारण हैं: (1) वह सब वस्तुओं का सृष्टिकर्त्ता है (उत्पत्ति 1:1; यूहन्ना 1:3), और (2) उसने सब कुछ बनाया और अपनी इच्छा के अनुसार सब कुछ करता है (इफिसियों 1:11)। जो कुछ भी उसकी इच्छा के अनुसार है, वह सही है, और जो कुछ भी उसकी इच्छा के उलट है, वह गलत है। हर व्यक्ति जो परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध काम करता है संसार के अधिकार के देने वाले के विरुद्ध विद्रोह करता है। जब तक कोई परमेश्वर में और मनुष्य को दिए उसके प्रकाशन में विश्वास न करता हो तब तक वह उसकी इच्छा के अनुसार काम कैसे कर सकता है? विश्वास में परमेश्वर के पास आने के लिए, मन फिराकर बपतिस्मा लेने सहित उसकी आज्ञाओं के अधीन होना आवश्यक है (प्रेरितों 2:38; 3:19; मरकुस 16:16)। इब्रानियों वाला सच्चा विश्वासी वही है जो अपने आज्ञापालन के द्वारा अपने विश्वास को दिखाता है, क्योंकि बिना आज्ञापालन किए यह विश्वास ''मुर्दा'' हो सकता है (याकूब 2:17)। ये आज्ञाएं किसी भी बपतिस्मे को अमान्य कर देती हैं, जो विश्वास के बिना हो; बिना विश्वास के आज्ञा मानने वाले लोग झूठे दावे करने वाले, नास्तिक और बच्चे हैं।

कोई ''धर्म माता-पिता'' किसी बच्चे की ओर से विश्वास नहीं कर सकते, न ही कोई व्यक्ति किसी दूसरे की ओर से विश्वास कर सकता है। आज्ञापालन के आरम्भिक समय में व्यक्ति का विश्वास कितना मजबूत होना चाहिए यह तो परमेश्वर ही बता सकता है, क्योंकि निश्चय ही व्यक्ति के लिए इतना मजबूत होना आवश्यक है कि ''उपदेश के सांचे'' को मानने के लिए ''मन से [आज्ञा मानना]'' तैयार हो। सच्चा विश्वासी वह है जिसमें इतना विश्वास है कि वह बाइबल की शिक्षा मान सके (रोमियों 6:17)।

आयत 7. विश्वास का नूह का उदाहरण हमें दिखाता है कि परमेश्वर में विश्वास करने

वाले को पता है कि वह अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार करेगा, चाहे उसके होने का थोड़ा या कोई भी और प्रमाण न हो (उत्पत्ति 6—9; यहेजकेल 14:12-14)। नूह का विश्वास सचमुच में "अनदेखी वस्तुओं" का प्रमाण था (आयत 1)। पहली चेतावनी के बाद से प्रलय आने तक एक सौ बीस वर्ष बीत चुके होंगे (उत्पत्ति 6:3)। मानवीय दृष्टिकोण से यह मूर्खता लगती होगी, क्योंकि पानी के बड़े सैलाब के दूर होने (जैसा कि हम उसे मान लेते हैं) पर ऐसी बड़ी नाव अपने घराने के बचाव के लिए जहाज़ बनाया गया। वह प्रसिद्ध मूर्खता का पात्र था और उसके काम को "नूह की मूर्खता" कहा जाता होगा। परन्तु उसने उस प्रकाशन में अपने विश्वास को बनाए रखा जो परमेश्वर ने उसे दिया था और जहाज़ के पूरा होने तक उसे बनाने में लगा रहा।

जल प्रलय हमारे लिए उदाहरण बन गया। चेतावनियों के बावजूद यह चकित करने वाली और अनापेक्षित घटना थी, वैसे ही जैसे न्याय करने के लिए मसीह का द्वितीय आगमन होगा (मत्ती 24:37-39; लूका 17:26, 27)। नूह को उन बातों के विषय में, जो उस समय दिखाई न पड़ती थीं चेतावनी दी गई थी क्योंकि जल-प्रलय के आने का कोई भौतिक प्रमाण नहीं था और ऐसा भी नहीं होगा कि उससे पहले कोई इतना बड़ा जल-प्रलय आया हो। नूह ने अपने "भक्तिभाव" या "ईश्वरीय" भय के कारण परमेश्वर की आज्ञा मानी। ईश्वरीय क्रोध का भय निश्चय ही भक्ति का कारण होता है।[33] परमेश्वर और उसके वचन के प्रति नूह के मन में बड़ा आदर था। भक्ति या "भय" (KJV) के लिए शब्द *eulabeomai* है। इसका अर्थ वास्तविक भय हो सकता है, जो कि आने वाले प्रलय की खबर सुनने की स्वाभाविक प्रतिक्रिया होगी। भय था या नहीं परन्तु यह स्पष्ट है कि परमेश्वर के प्रति नूह के मन में भक्तिपूर्ण भय था।

जैसे नूह ने अपनी धार्मिकता के द्वारा संसार को दोषी ठहराया वैसे ही नीनवे ने किया जिसमें इसके लोगों ने योना की विनतियों को मान लिया। सही समय पर उनका आज्ञापालन करना यीशु की सुनने वाले अविश्वासियों को दोषी ठहराने में सहायक होगा (मत्ती 12:41, 42)। वास्तव में हर सच्चा विश्वासी उन्हें दोषी ठहराता है, जो विश्वास से आज्ञा नहीं मानते हैं, यह साबित करते हुए कि यदि उनमें "तंग फाटक" में से जाने की वही तीव्र इच्छा होती तो वे भी विश्वास करके आज्ञा मान सकते थे। हमें उसी मार्ग में से जाने का "हर प्रयास करना" (NIV) आवश्यक है (देखें लूका 13:23, 24)।

चेतावनी पाकर *chrēmatizō* शब्द का इस्तेमाल करते हुए एक और वाक्यांश है, जिसका इस आयत में स्पष्ट अर्थ "ईश्वरीय बुलाहट" (देखें प्रेरितों 11:26) या "ईश्वरीय चेतावनी" (देखें इब्रानियों 8:6) है। यह चेतावनी अपने आप में नूह की धार्मिकता की "गवाही" या साक्षी थी। इसमें कोई संदेह नहीं हो सकता कि यहां और कहीं और *chrēmatizō* का अर्थ कुछ प्रकट करते हुए परमेश्वर की ओर से संदेश है। यह स्पष्ट है, इस कारण सबको केवल "मसीही कहलाना" चाहिए, क्योंकि यह नाम "परमेश्वर का दिया" था। पूर्ण आज्ञापालन में नूह ने "भक्तिपूर्ण" ढंग से बात मानी। उत्पत्ति 6:22 कहता है, "परमेश्वर की इस आज्ञा के अनुसार नूह ने किया।" इब्रानियों की पुस्तक में एक बार फिर से यह दिखाते हुए कि विश्वास में आज्ञापालन शामिल है, उसके आज्ञापालन को उसका विश्वास बताया गया।

अपने आज्ञापालन के द्वारा उसने "संसार को दोषी ठहराया," जिससे यह समझ आता है कि भरोसेयोग्य परमेश्वर में विश्वास रखकर जीना संभव है। यदि वह जी सकता था तो दूसरे

लोग भी जी सकते थे, जिनमें उसने प्रचार किया (2 पतरस 2:5)। नूह ने संसार को यह दिखाते हुए कि यह पापी और बुरा है, दोषी ठहराया, परन्तु उसे वैसा ही बनने की आवश्यकता नहीं थी। परमेश्वर से चेतावनी पाने और धर्मी होने के कारण उसे अपने समाज के लोगों को चेतावनी देनी आवश्यक थी चाहे वे उसके मित्र हों या शत्रु। उसका प्रचार उसके द्वारा सुनाए गए वचन को मानने का इनकार करने वालों के लिए श्राप था। उसने उन्हें कुछ ऐसा संदेश दिया होगा: ''परमेश्वर ने मुझसे बात कि वह बड़े जल-प्रलय के द्वारा संसार को नष्ट कर देगा। मेरी तरह तुम्हें भी तैयार होना आवश्यक है।''

विश्वासियों को निजी तौर पर और व्यक्तिगत रूप में ''चुने हुओं'' में शामिल करने के लिए परमेश्वर द्वारा चुना नहीं जाता है। विश्वास करके हम सच्चाई की बात को मानकर अपने आप को उन में मिला लेते हैं। 2 थिस्सलुनीकियों 2:13, 14 में इसे अच्छी तरह से समझाया गया है। आयत 14 बताती है कि आयत 13 वाली आशिषों को पाने के लिए किस प्रकार से हमें ''हमारे सुसमाचार के द्वारा बुलाया'' जाता है। धर्मियों में शामिल होने के कारण हमें जो सुसमाचार की आज्ञा मानते हैं चुने हुए लोग बनकर अनन्त जीवन के लिए पहले से ठहराए गए समूह में मिल जाते हैं। जिस प्रकार नूह के विश्वास ने आज्ञा मानने में उसकी सहायता की वैसे ही हमारा विश्वास हमें बचाएगा यदि यह कर्म के साथ हो। अब्राहम की तरह, नूह के विश्वास के कारण उसे परमेश्वर द्वारा धर्मी घोषित किया गया (उत्पत्ति 15:6)।

हाबिल, हनोक और नूह धर्मी लोग थे, जो परमेश्वर के साथ साथ चलते थे। वे विश्वास के द्वारा चलते और परमेश्वर की इच्छा के अनुसार आराधना करते थे। हर किसी को कहा जा सकता है उस धर्म का वारिस हुआ, जो विश्वास से होता है। अपने विश्वास के कारण इन पुरखाओं का उद्धार हुआ जिससे वे धर्मी ठहरे। परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा उन पर कृपा हुई।

विश्वासियों का पिता (और माता) (11:8-12)

[8]विश्वास ही से अब्राहम जब बुलाया गया तो आज्ञा मानकर ऐसी जगह निकल गया जिसे मीरास में लेने वाला था, और यह न जानता था, कि मैं किधर जाता हूं; तौभी निकल गया। [9]विश्वास ही से उसने प्रतिज्ञा किए हुए देश में जैसे पराए देश में परदेशी रहकर इसहाक और याकूब समेत, जो उसके साथ उसी प्रतिज्ञा के वारिस थे, तम्बुओं में वास किया। [10]क्योंकि वह उस स्थिर नेव वाले नगर की बाट जोहता था, जिसका रचने वाला और बनाने वाला परमेश्वर है। [11]विश्वास से सारा ने आप बूढ़ी होने पर भी गर्भ धारण करने की सामर्थ पाई; क्योंकि उसने प्रतिज्ञा करने वाले को सच्चा जाना था। [12]इस कारण एक ही जन से जो मरा हुआ सा था, आकाश के तारों और समुद्र के तीर के बालू की नाईं, अनगिनित वंश उत्पन्न हुआ।

विश्वास काम करता है। 11:4-7 में दिए गए उदाहरणों में विश्वास को परमेश्वर की आराधना करने, परमेश्वर के साथ चलने और आने वाले बड़े जल-प्रलय को ध्यान में रखते हुए

जहाज़ बनाने में दिखाया गया। अब अब्राहम और सारा के सम्बन्ध में हम देखेंगे कि विश्वास परमेश्वर में भरोसा रखना है। वास्तव में असामान्य परिस्थितियों के बीच विश्वास परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के पूरा होने के लिए उसकी ओर देखता है।

आयत 8. विश्वास रखने वाले के रूप में विशेष तौर पर वर्णन करते हुए पुराने नियम में अब्राहम उत्तम पुरुष में मिलता है (उत्पत्ति 15:6; उसकी कहानी उत्पत्ति 12:1— 25:11 में बताई गई है)। विश्वास से उसके धर्मी ठहरने का अर्थ है कि उसे धर्मी माना गया।

अब्राहम का विश्वास इतना महत्वपूर्ण था कि इस विषय की नये नियम की चर्चाओं में बार-बार उसका नाम दिया गया (देखें रोमियों 4:9-25; गलातियों 3:7-14; याकूब 2:21-23)। वह पाप रहित सिद्ध नहीं था परन्तु उसने विश्वासी जीवन बिताया। जिस प्रकार इब्रानियों की पुस्तक के इन पाठकों ने यहूदीवाद को छोड़ा था और बाद में उन्हें यहूदीवाद की "छावनी" को छोड़ देने को कहा गया था (13:13), वैसे ही उसे भी "छोड़ने" के लिए बुलाया गया था। अनुवादित क्रिया शब्द का वर्तमान कृदंत रूप निकल गया (*exerchomai*) संकेत देता है कि बुलाए जाने पर वह निकल पड़ा। बी. एफ. वैस्टकोट ने टिप्पणी की है, "उसने बुलाहट को मान लिया, जबकि ... उसका स्वर अभी उसके कानों में ही था।"[34] इन आयतों में मुख्य क्रिया शब्द "आज्ञा मानी" है। अन्य कोई भी क्रिया मुख्य काम से छोटा है इसलिए उसका आज्ञा मानना मुख्य बात है।

यह पुरखा निकल पड़ा चाहे यह न जानता था, कि मैं किधर जाता हूं, जो कई बार परेशान करने वाला और भयभीत करने वाला रहा होगा। परमेश्वर द्वारा उसे हारान में बुलाया जाने के समय उसे उसके भविष्य की मीरास के बारे में स्पष्ट नहीं बताया गया था। उसका विश्वास उसके जीवन पर हावी था। उसने ऐसे विशेष निर्देशों के बिना जैसे नूह को दिए गए थे, आज्ञा मानी। शायद यही कारण है कि नूह के बजाय अब्राहम को "विश्वासियों का पिता" कहा जाता है।

आयतें 9, 10. अब्राहम एक मुसाफिर अर्थात एक धार्मिक घुमक्कड़ व्यक्ति के रूप में रहा जिसका कोई पक्का ठिकाना नहीं था। अपने शेष जीवन में वह प्रतिज्ञा किए हुए देश में जैसे पराए देश में परदेशी[35] रहा (प्रेरितों 7:2-5)। "परदेशी" के लिए शब्द (*paroikeō* से), जिसका अर्थ "के पास रहना" है, "स्थानीय प्रवासी" का विचार देता है।[36] ऐसे लोगों को आमतौर पर स्थानीय हाकिमों की सनक पर उपहास किए जाने और निकाले जाने का भय रहता था। पहली सदी में नगर में बेहतर जीवन पाने के लिए रोम में, जिसे संसार में सबसे सुन्दर नगर माना जाता था, बहुत से लोग परदेशी बनते थे। अब्राहम और इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने बेहतर संसार को देखा था।

प्रेरितों 7:2 में चाहे इसी की बात है परन्तु अब्राहम को की गई मूल बुलाहट उत्पत्ति की पुस्तक में नहीं है। उत्पत्ति 12:1-3 में हमें उसकी दूसरी बुलाहट मिलती है।[37] उसकी बुलाहट में वह प्रतिज्ञा भी शामिल थी, जो इसहाक और याकूब को भी मिली (आयत 9)।

प्रतिज्ञा केवल देश की नहीं बल्कि प्रतिज्ञा किए हुए वंश यीशु मसीह की और उन सब आशिषों की भी थी जो उसने हमारे लिए संभाल रखी हैं (गलातियों 3:16)। अब्राहम तम्बुओं में (या "डेरों"; आयत 9) रहने को तैयार था, क्योंकि वह एक स्वर्गीय नगर की बाट जोहता (*ekdechomai*) था, जो कि प्रतिज्ञा का भाग था (आयत 10)। यूनानी शब्द का अर्थ है कि

वह राह देखता रहा। उसके विश्वास का पक्का रहना दिखाई देता है। उसका जीवन "अनदेखी वस्तुओं" में विश्वास करने के रूप में विश्वासी होने को दिखाता है (आयत 1)। उसका विश्वास असाधारण था। किसी अनजान बात की ओर बढ़ते रहने के लिए अपने घर और सुरक्षा को छोड़ देना कितना कठिन था! चाहे हमारे पास इसका कोई लिखित रिकॉर्ड नहीं है, पर परमेश्वर ने पुरखाओं को स्वर्ग का कुछ ज्ञान अवश्य दिया होगा। "नींव" का विचार यह सुझाव देता है कि यह सदा तक रहने वाला नगर होना था जिसे प्रलय के द्वारा बहाया नहीं जा सकता था या मनुष्यों की दीवार गिराने वाली मशीनों से गिराया नहीं जा सकता था।

परमेश्वर में आरम्भिक विश्वासियों ने हनोक के स्वर्ग में उठा लिए जाने से अनुमान लगाया होगा कि एक बेहतर जीवन उनकी राह देखता होगा। वे अपने से आगे जाने वालों से सीख सकते थे, जैसे कि हम भी सीख सकते हैं। "जितनी बातें पहिले से लिखी गईं, वे हमारी ही शिक्षा के लिए लिखी गईं हैं" (रोमियों 15:4)। उनकी अधिकतर शिक्षा जबानी शिक्षा से हो सकती है। पुराने नियम की कई रीतियां हैं जिनके बारे में थोड़ा या बिल्कुल नहीं बताया गया है (जैसे बलिदान, दसमांश और पुरखाओं की याजकाई)।

किसी प्रकार परमेश्वर के मानने वालों को एक बड़े, अर्थात स्थाई नगर के रचने वाला और बनाने वाले का पता है। यह वही नगर था जिसकी बाट अब्राहम जोहता था। उसका कोई पृथ्वी का नगर नहीं था। हेब्रोन के निकट मकापेला वाला खेत खरीदने से पहले अब्राहम के पास कोई ज़मीन नहीं थी क्योंकि कब्रिस्तान को सम्पत्ति नहीं माना गया (देखें उत्पत्ति 23:6)। स्तिफनुस ने कहा कि अब्राहम के पास "पैर रखने की भी जगह न" थी (प्रेरितों 7:5)।

अब्राहम की तरह ही, हमारा विश्वास उस परमेश्वर पर है, जिसने विश्वासियों के लिए स्वर्ग को तैयार करके बनाया है (आयत 10)। ईश्वरीय "शिल्पकार" (*technitēs*), या "निर्माता" संसार का मूल "तकनीशियन" है, यानी हमारा परमेश्वर कारीगरों का कारीगर है। संसार की नींव रखने के समय से हमारे अनन्त निवास की बात है (मत्ती 25:34)। यीशु अब तैयार लोगों के लिए तैयार किए गए स्थान की अन्तिम तैयारी कर रहा है (यूहन्ना 14:1-3)।

परमेश्वर में विश्वास रखने और स्वर्गीय नगर को जानने से अब्राहम को आगे बढ़ने के लिए धीरज मिला (आयत 10)। उसकी आशा चाहे जो भी रही हो, "उसकी तड़प और उम्मीद तब तक पूरी नहीं होनी थी जब तक उसने ऊपर के स्वर्गीय नगर में प्रवेश नहीं करना था।"[138] उसका वास्तविक लक्ष्य अनन्त नगर था, जैसा कि हमारा भी होना चाहिए। स्वर्गीय देश पर उसके ध्यान ने उसे कुछ भी भूमि न होने के बावजूद अपने जीवन में धीरज से चलते रहने के योग्य बनाया, जिससे वह एक सौ के लगभग वर्ष तक प्रतिज्ञा किए हुए देश में रह पाया।[39]

इस पाठ में लेखक ने अब्राहम तथा अन्य सभी को बहुत पहले हुए, वास्तविक लोगों के रूप में पहचाना। एफ. एफ. ब्रूस ने टिप्पणी की है, "... हमारा लेखक अब्राहम तथा इस तालिका में दिए गए अन्य सभी लोगों के साथ वास्तविक ऐतिहासिक पात्रों के रूप में व्यवहार करके संतुष्ट है जिनके अनुभव से बाद की पीढ़ियां सीख सकती हैं।"[140] ये सभी आत्माएं आज भी जीवित हैं और "[परमेश्वर] के लिए जीवित" हैं (लूका 20:38; देखें मत्ती 22:32; मरकुस 12:27)। पुरातत्व वेता तथा इतिहासकार जो उत्पत्ति की पुस्तक के पुरखाओं के काल को "मिथ्य" या मनघड़न्त मानते हैं यीशु तथा नये नियम में विश्वास करने को नष्ट करने का प्रयास कर रहे हैं।

आयतें 11, 12. पहले सारा को बच्चे की स्वर्गदूत की प्रतिज्ञा पर संदेह था, शायद उसे पता भी नहीं था कि बोलने वाला व्यक्ति स्वर्गदूत था (उत्पत्ति 18:9–15)। अनुवाद की समस्याएं सारा के विश्वास से सम्बन्धित हैं, क्योंकि पुराने नियम में उसके विश्वास का उल्लेख नहीं है। एक समाधान इस आयत का अर्थ इस प्रकार से लेना है: "उस [अब्राहम] ने भी सारा के साथ वहां विश्वास के द्वारा बालक को जन्म देने की सामर्थ पाई जबकि उसकी उम्र निकल चुकी थी, क्योंकि उसने उसे विश्वासयोग्य माना जिसने प्रतिज्ञा की थी।"[41] सारा मन ही मन हंसी और फिर मुकर गई कि वह हंसी थी। उसे हंसने के लिए डांट लगाई गई जबकि अब्राहम के हंसने के लिए कोई डांट नहीं थी (उत्पत्ति 17:17; 18:12–15)। अब्राहम का हंसना विश्वास की दबी हुई हंसी होगा। अब्राहम का विश्वास साल दर साल सारा का विश्वास बनता गया और इस कारण उसने गर्भ धारण करने की सामर्थ पाई। जब बालक इसहाक का जन्म हो गया तो उसने घोषणा की कि परमेश्वर ने मुझे हंसाया था (उत्पत्ति 21:6)। उसकी बात से पता चल गया कि परमेश्वर में उसका पूरा विश्वास था जो उसके बालक के जन्म के द्वारा मज़बूत हो गया था।

अनोखी बात यह है कि इसहाक के जन्म के समय सारा लगभग नब्बे वर्ष की थी (उत्पत्ति 17:17)। रोमियों 4:18–21 में पौलुस ने एक घटना की बात की है। जहां तक अब्राहम के पिता बनने की बात थी उसका शरीर मरा हुआ सा था (आयत 12; रोमियों 4:19)। मानवीय दृष्टिकोण से, अब्राहम के किसी पुत्र का पिता बनने की वैसी ही सम्भावना थी जैसे किसी मुर्दा व्यक्ति से होती है।[42] तौभी परमेश्वर ने अब्राहम को तारों के समान अनगिनत वंश का पिता बनाने की अपनी प्रतिज्ञा पूरा किया (उत्पत्ति 22:17)।

प्रसिद्ध हब्बल दूरबीन तथा अन्य रंगों से हमें बाहरी अंतरिक्ष के बारे में बहुत कुछ पता चला है और अब हम पहले से कहीं बेहतर ढंग से समझते हैं कि तारे अनगिनत हैं (आयत 12)। जो प्रमाण हमारे पास है वह उनके लाखों करोड़ों में होने की ओर संकेत करता है। प्राचीन यूनानी उनकी संख्या लगभग तीन हज़ार मानते थे। "अब्राहम के वंश" के रूप में कितने लोगों का जन्म हुआ है? अरबी और इस्राएलियों की बहुत संख्या आज भी जन्म ले रही हैं जो अब्राहम से की गई परमेश्वर की प्रतिज्ञा का पूरा होना है। बेशक यह प्रतिज्ञा सब मसीही लोगों सहित, आत्मिक वंशजों के बड़े समूह में भी पूरी हुई है (गलातियों 3:26–29)।

ये विश्वासयोग्य थे, चाहे उन्हें परमेश्वर की प्रतिज्ञा प्राप्त नहीं हुई (11:13-16)

[13]ये सब विश्वास ही की दशा में मरे; और उन्होंने प्रतिज्ञा की हुई वस्तुएं नहीं पाई; पर उन्हें दूर से देखकर आनन्दित हुए और मान लिया, कि हम पृथ्वी पर परदेशी और बाहरी हैं। [14]जो ऐसी ऐसी बातें कहते हैं, वे प्रकट करते हैं, कि स्वदेश की खोज में हैं। [15]और जिस देश से वे निकल आए थे, यदि उसकी सुधि करते तो उन्हें लौट जाने का अवसर था। [16]पर वे एक उत्तम अर्थात स्वर्गीय देश के अभिलाषी हैं, इसी लिए परमेश्वर उनका परमेश्वर कहलाने में उनसे नहीं लजाता, सो उसने उनके लिए एक नगर तैयार किया है।

आयतें 13 से 16 में उस व्यक्ति के गुणों को दिखाने के लिए जो सचमुच में विश्वास से चलता है। एक तस्वीर दी गई है। यह चलना जीवन शैली के समर्पण से बढ़कर है। यानी यह जीने का ऐसा ढंग है जो विश्वास से चलने के कारण अन्त तक बने रहने का परिणाम होता है।

आयत 13. इस संदर्भ में बताए गए लोग विश्वास ही की दशा में मरे; और उन्होंने प्रतिज्ञा की हुई वस्तुएं नहीं पाई। यह आयत स्पष्ट करती है कि वे "विश्वास में [*kata*, जिसका अर्थ है 'से मेल खाते'] " जो कि "विश्वास से" अलग व्यक्ति है। उन्हें परमेश्वर से प्रतिज्ञाएं प्राप्त नहीं हुई, परन्तु वे सब "विश्वास में" मरने के समय "विश्वास से" रह रहे थे।[43]

आयतें 4 से 11 में वर्णित भक्त लोगों को अन्य लोगों के साथ मिलाया गया है जो प्रतिज्ञाओं को दूर से देखकर आनन्दित हुए और अन्त तक विश्वास में बने रहे। यह देखना शारीरिक नहीं हो सकता था; बल्कि इसका अर्थ यह है कि प्रतिज्ञाओं में उनका विश्वास इतना मज़बूत था कि उनके लिए स्वर्ग वास्तविकता बन गया था। यूहन्ना 8:56 में यीशु की बात पर विचार करें: "तुम्हारा पिता अब्राहम मेरा दिन देखने की आशा से बहुत मगन था; और उस ने देखा, और आनन्द किया।" काश हमारा विश्वास ऐसा होता!

उन्होंने नूह और हाबिल के साथ साथ अब्राहम, सारा, इसहाक और याकूब के लिए कहा गया है परन्तु हनोक के लिए नहीं, क्योंकि वह तो मरा ही नहीं था। इनमें से हर कोई परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को पूर्ण हुए प्राप्त किए बिना विश्वास में मर गया। तौभी विश्वास में जीना और मरना वह सबसे अद्भुत आशीष दिला सकता है, जो किसी को मिल सकती है।

विश्वास से उन्होंने दूर से परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को देख लिया। अलगज़ैंडर नेरन को पुरखाओं को "जंगल के पार किसी नगर को जाने वाले खानाबदोशा" कहना अच्छा लगता था, "जो दूर से इसके बुर्जों को पहचान लेते हैं पर उस दिन के आगे बढ़ने में वहां तक पहुंच नहीं सकते; वे देखकर स्वागत करते हैं पर एक बार फिर से दूर से ही पड़ाव डाल लेते हैं।"[44] अब्राहम और याकूब ने कहा कि वे तो केवल "पृथ्वी पर अतिथि और परदेशी" हैं (उत्पत्ति 23:4; 47:9)। "जो ऐसी बातें कहते हैं" (यह मानते हुए कि यह संसार उनका घर नहीं हैं; आयत 14) ही वे लोग हैं जो स्वर्ग में अपने अनन्त निवास की बात करते रहते हैं।

इन घुमक्कड़ों को दी गई परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं में संतान या भूमि जैसी थोड़ी देर की आशिषों से या इस आशीष से भी बढ़कर था कि वह उसका परमेश्वर होगा। अतिरिक्त आत्मिक आशिषें तो हैं ही थीं। अब्राहम के वंश के द्वारा सब जातियों ने आशीष पानी थीं (उत्पत्ति 12:3; 22:18)। गलातियों 3:16 बताता है कि यह "वंश" मसीह है। इसलिए अब्राहम दो परिवारों का पिता था जिनमें से एक तो शारीरिक है और दूसरा विश्वास का। मसीह में परमेश्वर का हर बालक विश्वास की आत्मा में अब अब्राहम की संतान है (गलातियों 3:26–29)।

यीशु ने यह कहते हुए अब्राहम के विश्वास पर टिप्पणी की कि इस पुरखे ने उस के दिन को देखा था और इस बात में आनन्द किया था (यूहन्ना 8:56–58)। यदि हमारा व्यवहार इस संसार के प्रति अब्राहम वाला हो तो इसके प्रलोभन हमें वैसे दूर नहीं कर सकते जैसे आम तौर पर करते हैं।

अब्राहम तथा अन्य लोगों ने मान लिया कि हम पृथ्वी पर परदेशी और बाहरी हैं। अब्राहम ने यह स्वीकृति अपने जी उठने के अन्त के निकट की (उत्पत्ति 23:4)। कनान में कभी

उसका घर नहीं था। उत्पत्ति 47:9 में फिरौन को यूसुफ ने लगभग यही शब्द कहे थे। उनका एक ही भाषा का इस्तेमाल करना यह सुझाव देता है कि यह एक सामान्य अभिव्यक्ति थी जिसका इस्तेमाल पुरखे अपनी प्रतिदिन की बातचीत में करते थे।

परदेशी होना जिसे कोई अधिकार न हो अब्राहम जैसे जंगल के शेख के लिए कठिन होगा, चाहे अन्त में अबीमलेक राजा के साथ उसके सम्बन्ध अच्छे हो गए थे (उत्पत्ति 20; 21)। उसके विश्वास ने उसे स्वर्ग में परमेश्वर की उपस्थिति में जाने को उत्सुक कर दिया।

आयतें 14-16. पुरखे स्वदेश (*patris*) या "पिता के घर" की तलाश में थे (आयत 14)। जिस कारण वे उसी ओर जाते थे जहां परमेश्वर कहता था। वे सब एक उत्तम अर्थात स्वर्गीय देश के अभिलाषी थे (आयत 16), जो उनका अपना होना था (आयत 14)। सदा के लिए ऊर को पीछे छोड़ देने के बाद पृथ्वी पर उनका अपना कोई घर नहीं था। उन्होंने मन में हमेशा अनन्त मूल्यों को रखा।

परमेश्वर को उन विश्वासी पुरखाओं पर गर्व था, क्योंकि वह पहले आत्मिक वस्तुओं की खोज करते थे और वह उनका परमेश्वर कहलाने में उन से नहीं लज्जाता था (आयत 16; देखें निर्गमन 3:6)। आयत 16 के शब्द 2:11, 12 तथा भजन संहिता 22:22 के उद्धरण का शेष भाग हैं जो यीशु के अपने चेलों को "भाई" कहलाने के लिए लागू होता है। सदियों बाद पौलुस की तरह, पुरखे स्वर्गीय प्रतिफल को पाने के लिए सब बातों की हानि उठाने को तैयार थे (देखें फिलिप्पियों 3:8)। उन्हें इस बात की समझ नहीं थी कि उन्हें उद्धार दिलाने के लिए सिद्ध बलिदान के रूप में मसीह कैसे मरेगा, परन्तु उनका विश्वास परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं में था।

इस देश में जिसकी प्रतिज्ञा की गई थी, उनका विश्वास था कि उन्हें "एक ऐसा भवन मिलेगा जो हाथों से बना हुआ घर नहीं" (2 कुरिन्थियों 5:1)। वे परमेश्वर की बुलाहट को मानते हुए इसी पर ध्यान लगाते थे और अपने पीछे छोड़े गए देश पर अधिक विचार नहीं करते थे (आयत 15)। यदि हमें इसका ध्यान हो तो पृथ्वी पर की बातों पर मन लगाने के बजाय स्वर्ग की बातों पर हम कितना ध्यान लगा सकते हैं!

आयत 16 स्वर्गीय देश यानी उस देश की बात खत्म कर देती है जिसके अब्राहम और उसके परिवार के लोग सचमुच में वासी थे उन्होंने अपने घर के रूप में ऊर या कनान को नहीं माना। स्वर्गीय देश में उनकी आशा ने अन्त में यह समझ आने पर कि आशा किए हुए नगर का पूरा होना उनके जीवन में ही होना था, निराशा नहीं होने दिया। "लेखक इस स्वर्गीय आशा की पूर्ति संसारिक जीवन में संतोष के बजाय दृढ़ता से बने रहने के आधार के रूप में करता है।"[145]

विश्वासी लोग जिन्हें दुख सहने के द्वारा परखा गया (11:17-29)

11:17-22

[17]विश्वास ही से अब्राहम ने, परखे जाने के समय में, इसहाक को बलिदान चढ़ाया, और जिसने प्रतिज्ञाओं को सच माना था। [18]और जिससे यह कहा गया था, कि इसहाक से तेरा वंश कहलाएगा; वह अपने एकलौते को चढ़ाने लगा। [19]क्योंकि उसने विचार किया, कि परमेश्वर सामर्थी है, कि मरे हुओं में से जिलाए, सो उन्हीं में से दृष्टान्त की रीति पर

वह उसे फिर मिला। [20]विश्वास ही से इसहाक ने याकूब और एसाव को आनेवाली बातों के विषय में आशीष दी। [21]विश्वास ही से याकूब ने मरते समय यूसुफ के दोनों पुत्रों में से एक एक को आशीष दी, और अपनी लाठी के सिरे पर सहारा लेकर दण्डवत किया। [22]विश्वास ही से यूसुफ ने, जब वह मरने पर था, तो इस्राइल की सन्तान के निकल जाने की चर्चा की, और अपनी हड्डियों के विषय में आज्ञा दी।

आयतें 17-19. बलिदान के रूप में इसहाक को चढ़ाने के सामने अब्राहम की सब परीक्षाएं छोटी थीं।[46] उससे अपने घर को छोड़ देने, अज्ञात देश में चले जाने, और केवल थोड़ी सी रोटी और पानी लेकर इस्माइल और उसकी माता को भगा देने को कहा गया था। परन्तु वेदी पर इसहाक को रखने को कहा जाना उसकी सबसे बड़ी परख थी।

अब्राहम इस आज्ञा के लिए कई तर्कसंगत दलीलें दे सकता था, जैसे यह कि "हे पिता, यह बात तेरे स्वभाव से मेल खाती नहीं लगती; यह तो तेरी प्रतिज्ञाओं के उलट लगती है।" परन्तु किसी भी आपत्ति की बात उसके विश्वास से बढ़कर नहीं हो सकती। तो अब्राहम लगभग चालीस मील (64 किलोमीटर) जाने के लिए दो दिन से अधिक चला, जिसके दौरान उसके पास सोचने के लिए काफी समय था। बेशक इन रातों में वह बेचैन रहा होगा, पर उसे एक प्रियजन के बलिदान में से गुज़रना था जो उसे अपने प्राण से भी प्रिय था। अब्राहम के यह दिखा देने पर कि वह इस मानवीय बलिदान के कार्य में भी वह आज्ञा को मानेगा, परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा को दोहराया (उत्पत्ति 22:11-18)।

आयत 17 में इस्तेमाल किया गया यूनानी काल इस बात का संकेत देता है कि यहोवा के स्वर्गदूत द्वारा उसे रोकने के समय वह इसहाक को बलिदान करने की प्रक्रिया में[47] ही था। वह इसहाक को "बलि करने का यत्न" कर रहा था। अब्राहम के विश्वास की सामर्थ में कोई संदेह नहीं है।

इसहाक परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं का एक अनमोल भाग था, इस कारण अब्राहम ने यह निष्कर्ष निकाला कि उसके बलिदान के बाद परमेश्वर उसे जिला देगा (आयत 19)। उसे मालूम था कि जीवन और मरण दोनों परमेश्वर के हाथ में हैं। लेखक ने इसहाक के बलिदान के समय नैतिक प्रश्न पर चर्चा नहीं की। अब्राहम ने यह तर्क लगा लिया होगा कि ऐसे बलिदान को स्वीकार करके अपनी सच्चाई को बनाए रखने का परमेश्वर का यही ढंग था।[48]

इस सच्चाई का संकेत उत्पत्ति 22:5 में अब्राहम की बात से मिल सकता है: "यह लड़का और मैं वहां तक जाकर, और दण्डवत् करके, फिर तुम्हारे पास लौट आऊंगा।" उसके पास कोई उदाहरण नहीं था कि यह आशावाद का आधार क्या है, जब तक लिखित वचन में कोई पिछली घटना न हो जिसमें परमेश्वर ने किसी को मुर्दों में से जिलाया हो। अब्राहम के लिए, उसके अतुलनीय विश्वास से, पुनरुत्थान सम्भव था।

एफ़. एफ़. ब्रूस ने ध्यान दिलाया कि अब्राहम ने इसे परमेश्वर की चिंता के रूप में माना लगता है, क्योंकि अब्राहम को नहीं बल्कि परमेश्वर को अपनी प्रतिज्ञा और अपनी आज्ञा के अनुसार काम करना था।[49] यदि ऐसा है तो (यह कुछ अधिक ही लगता है), विश्वास का यह और भी अद्‌भुत कार्य है। यदि उसने दलील दी हो जैसा कि लगता है कि उसने दी होगी, तो

उसने विचार किया होगा, "परमेश्वर ने सारा को और मुझे वचन दिया है कि वह हमें यह पुत्र देगा। उसके जीवन का मानवीय रूप में गर्भ में आना ही असम्भव बात थी, परन्तु परमेश्वर ने हमें ऐसा करने की शक्ति दी; इसलिए वह मुझे उसे फिर से वापस दे सकता है।" अब्राहम जो भी सोच रहा हो, पर हमें इतना ही बताया गया है कि आज्ञा दिए जाने पर अब्राहम आज्ञा मानने के लिए फुर्ती से निकल पड़ा।

अब्राहम को अपने पुत्र का बलिदान करने को कहने के मामले में परमेश्वर ने किस प्रकार उपाय करना था? अब्राहम ने मान लिया कि परमेश्वर सामर्थी है कि उसे मरे हुए में से जिलाए (आयत 19क), क्योंकि परमेश्वर के लिए सब कुछ सम्भव है (मत्ती 19:26; मरकुस 10:27; लूका 18:27)। वास्तव में आवयश्कता पड़ने पर वह पत्थरों से भी संतान उत्पन्न कर सकता है (देखें लूका 3:8)। यदि अब्राहम का विश्वास केवल उसी पर आधारित था जो उसने परमेश्वर की पिछली आशिषों से सीखा था, न कि एक और पुनरुत्थान के किसी ज्ञान पर, तो यह सचमुच में एक बड़ा विश्वास था।[50]

मोरिय्याह पहाड़ की यह घटना ऐसी असामान्य घटना थी कि आरम्भिक मसीही लोग इसहाक की तुलना मसीह से करते थे।[51] आयत 19 में दृष्टांत (*parabolē*) की असामान्य अभिव्यक्ति है। प्रतीक के रूप में इसहाक परमेश्वर के पुत्र की तरह जिसे पृथ्वी से छूट नहीं होनी थी, पर उसने "मरे हुओं में से जी उठना" था (रोमियों 6:4, 9)। परन्तु यह विवरण सब धर्मियों के पुनरुत्थान के दृष्टांत या प्रतिबिम्ब का काम भी कर सकता है।[52] कुछ लोगों का विचार है कि यूहन्ना 8:56 में यीशु अपनी इसी विशेष प्रतिनिधिता की बात कर रहा था। इसहाक का बलिदान होना और उसका मरे हुओं में से वापस आना प्रतीकात्मक अर्थ में ही था। अब्राहम ने इसहाक को मरा हुआ ही मान लिया था। इसलिए उसके लिए यह पुनरुत्थान ही था।

इकलौते शब्द का इस्तेमाल (आयत 18) उसी शब्द से हुआ है जिसका इस्तेमाल यूहन्ना 3:16 में हुआ है (*monogenēs*)। वहां इसका अर्थ और बेहतर अनुवाद "अपनी किस्म का इकलौता पुत्र" या "विलक्षण पुत्र" हो सकता है। इसहाक बलिदान के समय अब्राहम का इकलौता पुत्र नहीं था, परन्तु वह निश्चित रूप में "विलक्षण पुत्र" था।

आयत 20. इसहाक जिसे अपने पिता की ओर से पुरखा होने की आशीष मिली थी, ने भी उसी प्रकार से अपने पुत्रों को आशीष दी। इसलिए उसने प्रेरणा से परमेश्वर की इच्छा ही बताई।

इसहाक के याकूब और एसाव को आशीष देने की कहानी उत्पत्ति 27:26–40 में मिलती है। धोखा खाकर उसने गलती से याकूब को आशीष दे दी। परन्तु उसे विश्वास था कि परमेश्वर ने उसे रद्द करके यह देखा कि सही पुत्र को ही आशीष दी जाए, और स्पष्टतया यही कारण है कि उसने इसे बाद में बदला नहीं।

इसहाक ने यह मान लिया होगा कि परमेश्वर ने अपनी इच्छा के दायरे के भीतर ऐसा होने दिया होगा, बेशक लगता है कि यह चालाकी से हुआ था। निश्चय ही वह "भाग्य" में विश्वास नहीं रखता था। इसके बजाय उसे मालूम था कि अपने पुत्रों की समृद्धि की भविष्यवाणी करते हुए वह परमेश्वर के मन की बात ही कह रहा था। जैसा कि आम तौर पर लोग करते हैं उसने परमेश्वर की इच्छा को यह मानते हुए शायद गलत समझा कि दोनों में से बड़ा, बलिष्ठ, और अधिक शक्तिशाली परमेश्वर की पसन्द होगा। हाबिल कैन से कमज़ोर था; याकूब, इसाव से

कमज़ोर था; अभिषेक किए जाने के समय दाऊद अपने सब भाइयों से कमज़ोर और छोटा था। परमेश्वर ''शरीर को देखकर नहीं बल्कि विश्वास को देखकर'' चयन करता है।[53]

पहले तो अगली घटनाएं में एसाव की संतान (एदोमी) अधिक आशीष पाए हुए लगते हैं, परन्तु अन्त में शाऊल और दाऊद ने उन पर विजय पा ली (1 शमूएल 14:47; 2 शमूएल 8:14)। अन्त में दोनों नियमों के बीच के मक्काबी काल के दौरान 135–106 ई.पू. में इस्राएल से शासन करने वाले जॉन हिरकेनुस ने एदोमियों को जीत लिया और उन्हें यहूदी राज्य का भाग बनाते हुए खतना करवाने को विवश कर दिया।[54] यह हमें ''परमेश्वर की असीम बुद्धि, सर्वशक्तिमान होने और अद्‌भुत दयालु'' होने की समझ देता है।[55]

आयत 21. अपने जीवन के आरम्भ में याकूब अपनी इच्छा के अनुसार पाने के लिए अपनी ही चालाकियों पर निर्भर था। उसे आंख मूंदकर परमेश्वर पर भरोसा करने में दिक्कत थी। यह आयत उसके विश्वास के बढ़ने को दिखाती है।

पुरखे मरने से कुछ देर पहले अपनी संतान को आशिषें दे देते थे। यह परमेश्वर की ओर से प्रकाशन होते थे जिस में आशिषें विश्वास से दी जाती थीं। आशीष में सबसे बड़े बेटे को नज़रअन्दाज करके, जैसे रूबिन के साथ हुआ, उससे अधिक विश्वास वाले को दी जा सकती थी। यूसुफ के दोनों पुत्रों को मिलने वाली आशीष से युसूफ को अपने भाइयों से बढ़कर मिला जैसा कि बहुत पहले उसके अपने स्वप्नों को बताने पूरा संकेत मिला था (उत्पत्ति 37:5–11)। वास्तव में याकूब ने यूसुफ के पुत्रों को अपने पुत्रों के रूप में गोद लेकर उन दोनों में से निकलने वाले दो गोत्रों के द्वारा आशीष देते हुए यूसुफ दोहरा भाग देकर उसे आशीष दी।

यूसुफ के पुत्रों के नाम मनश्शै और एप्रैम थे, जिनमें एप्रैम छोटा था। याकूब ने उन्हें आशीष देते हुए जानबूझकर उन पर उलटे हाथ रखे, जो कि भविष्यवाणी के वचन के अनुसार उसके बड़े बेटे के बजाय एप्रैम को अधिक आशीष देना था (उत्पत्ति 48:5–20)। एप्रैम दोनों गोत्रों में बड़ा बन गया; वास्तव में कई बार नबी समस्त उत्तरी राज्य को ''एप्रैम'' ही कह देते थे (देखें होशे 11:1–3, 8, 9)। परमेश्वर के इस्राएलियों को कनान देश देने की प्रतिज्ञाओं में अपने भरोसे के कारण विश्वास ही से याकूब ने अपने पुत्रों को आशीष दी। बाद में उसने प्रत्येक पुत्रों की संतान की भविष्य की भविष्यवाणी की (उत्पत्ति 49)।

उन्हें कितनी जबर्दस्त विरासत दी गई! याकूब के पुत्र भविष्यद्वाणियों की ओर पीछे को देख सकते थे जिनमें उनके भविष्य की भविष्यवाणी थी। इस्राएली लोग वास्तव में भाग्यशाली थे। परमेश्वर के चुने हुए लोगों के रूप में उनके रुतबे ने उन्हें गर्व करने की पर्याप्त मात्रा दी चाहे यह यहूदी अहंकार में बदल गई।

याकूब ने ... अपनी लाठी के सिरे पर सहारा लेकर दण्डवत किया। एक बार फिर से यह आयत LXX से ली गई है, परन्तु मूसा के वचन में एक स्वर शब्द है जिससे इस शब्द का अर्थ ''बिस्तर'' हो जाता है।[56] लातीनी बाइबल में पढ़ने से यह सुझाव मिलता है कि याकूब ने ''अपनी लाठी के सिरे को पूजा'' यानी वह अपनी लाठी के सामने ऐसे झुका जैसे किसी मूर्ति के सामने झुकते हैं। ''यूनानी भाषा दण्डवत किए जाने वाली चीज़ का संकेत नहीं देती, परन्तु दण्डवत किए जाने की मुद्रा का संकेत देती है।''[57] परमेश्वर की भविष्यवाणी की इच्छा को बताते हुए बूढ़ा होने के कारण, याकूब अपनी लाठी या अपनी बिस्तर पर झुका होगा (उत्पत्ति 49)।

आयत 22. विश्वास की इस बात का ब्यान बेशक उत्पत्ति 50:24, 25 में किया गया है। यूसुफ़ को परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं में पूरा भरोसा था कि कनान देश उसके लोगों के लिए उसका उपहार होगा। मिस्र में यूसुफ की बड़ी समृद्धि में प्रतिज्ञा किए हुए देश में परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को पाने की उसकी इच्छा को कम नहीं किया। अपनी सब परीक्षाओं के दौरान उसने वफ़ादारी बनाए रखी, क्योंकि "परमेश्वर उसके साथ था" (प्रेरितों 7:9, 10)। सत्रह साल की उम्र से मिस्र में लगभग अपना पूरा जीवन बिता देने के बावजूद उसे मालूम था कि यह उसका देश नहीं है। उसके पिता ने उसे अच्छी तरह से समझाया था, जिस कारण वह किसी और निवास की तलाश करता रहा। उसे मालूम था कि परमेश्वर ने इब्रानियों के मिस्र में दास बनने से बहुत पहले प्रतिज्ञा की थी कि यह लोग कनान में उसकी सेवा करेंगे (उत्पत्ति 15:13–16)।

विश्वास से यूसुफ ने निकल जाने की चर्चा की (मिस्र से "विदाई" [AB]; उत्पत्ति 50:24, 25)। उसने अपने लोगों को प्रतिज्ञा किए हुए देश को पाने के लिए लौटने पर (यह नहीं कि "यदि लौटें") उसकी लाश अपने साथ ले जाने को कहा। उसका शव परिरक्षित किया गया था ताकि समय आने पर उसकी हड्डियों को कनान में दफ़न किया जाए (निर्गमन 13:19)। यहोशू 24:32 के अनुसार अन्त में यूसुफ की हड्डियों को शकेम में दफना दिया गया। यह उदाहरण "आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय" और "अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण" (11:1) भी दिखाता है। यूसुफ़ उस बड़ी घटना की राह विश्वास से देखता था जो डेढ़ सदी बाद घटी।

पुराने और नये दोनों नियमों में निर्गमन का वर्णन भविष्यवाणी तथा पूरा होने और दोनों में (देखें 1 कुरिन्थियों 10:1, 2) बताया गया है। जो लोग संदेह करते हैं कि ऐसा वास्तव में हुआ या नहीं, उन्हें ध्यान देना चाहिए कि यह यहूदी इतिहास का केन्द्रबिन्दु था। "निर्गमन" या "प्रस्थान" के लिए नये नियम में बहुत कम शब्द मिलता है। इसका इस्तेमाल केवल यीशु की मृत्यु के सम्बन्ध में लूका 9:31 और पतरस की मृत्यु के सम्बन्ध में 2 पतरस 1:15 में मिलता है। नये नियम के विश्वास का मुख्य विचार यह है कि मृत्यु केवल "निरगम" ही नहीं बल्कि वास्तव में "विजयी छुटकारा" है।[58]

11:23–29

[23]विश्वास ही से मूसा के माता पिता ने उसको, उत्पन्न होने के बाद तीन महीने तक छिपा रखा; क्योंकि उन्होंने देखा, कि बालक सुन्दर है, और वे राजा की आज्ञा से न डरे। [24] विश्वास ही से मूसा ने सयाना होकर फिरौन की बेटी का पुत्र कहलाने से इन्कार किया। [25]इसलिए वे उसे पाप में थोड़े दिन के सुख भोगने से परमेश्वर के लोगों के साथ दुख भोगना और उत्तम लगा। [26]और मसीह के कारण निन्दित होने को मिसर के भण्डार से बड़ा धन समझा: क्योंकि उसकी आंखें फल पाने की ओर लगी थीं। [27]विश्वास ही से राजा के क्रोध से न डरकर उसने मिसर को छोड़ दिया, क्योंकि वह अनदेखे को मानो देखता हुआ दृढ़ रहा। [28]विश्वास ही से उसने फसह और लोहू छिड़कने की विधि मानी, कि पहिलौठों का नाश करने वाला इस्राएलियों पर हाथ न डाले। [29]विश्वास ही से वे लाल समुद्र के पार ऐसे उतर गए, जैसे सूखी भूमि पर से; और जब मिस्रियों ने वैसा ही करना चाहा, तो सब डूब मरे।

पुराने नियम में अब्राहम के बाद विश्वास के सबसे बड़े व्यक्ति के रूप में मूसा आता है। मूसा की कहानी "यूनानी नाटक में दमदार तरीके से बताई जाती है।"[59] मूसा के जीवन के विवरण में बताए गए पहले विश्वास का उदाहरण उसके माता-पिता अम्राम और योकेबेद है (जिनके नाम निर्गमन 6:20 में बताए गए हैं)। उनका विश्वास सचमुच में साहसिक था जिससे वे फिरौन के आदेश के विरुद्ध काम कर सके।

आयत 23. पुराना नियम पुराना नियम उन बातों पर ध्यान दिलाता है जो मूसा की माता ने विश्वास के द्वारा किया (निर्गमन 2:1-10), परन्तु निश्चय ही उसका पिता भी विश्वास व्यक्ति था।[60] माता पिता दोनों ने मिलकर उसे छुपाया था।

परमेश्वर ने अम्राम और योकेबेद पर प्रकट किया हो सकता है कि उनके पुत्र में एक विशेष बालक होना था जिसका जीवन का उद्देश्य ईश्वरीय था। इब्रानी लोगों की तरह उनका भी विचार कुछ ऐसा होगा कि एक छुटकारा दिलाने वाला उनके लोगों के पास भेजा जाएगा। माता पिता के रूप में वे जानते थे कि अपने बच्चे को मरने देना परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध हैं, इस कारण उन्होंने उसे बचाने का निश्चय किया। हमारा वचन पाठ मुख्यतया उसके "परमेश्वर की दृष्टि में बहुत ही सुन्दर" होने की बात कर सकता है (प्रेरितों 7:20)।

मूसा के माता पिता यदि राजा के आदेश से डर जाते तो उन्होंने उसे मिस्रियों को सौंप देना था। परन्तु वे उन काफिर माता पिता जैसे नहीं थे जो अपने नवजन्मे बच्चे को मरने के लिए दे देते। इसके बजाय उन्होंने अपने बेटे के तैरने वाली एक छोटी टोकरी में रख दिया। यह परमेश्वर में और उसके उपाय करने में भरोसे का एक कार्य था। उन्होंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वह बालक सुन्दर था (देखें निर्गमन 2:2) और **वे राजा की आज्ञा से न डरे**। उनका न डरना इस बात का संकेत होना चाहिए कि उन्होंने फिरौन से डरने के बजाय परमेश्वर को आदर किया और उस पर भरोसा किया।

यहूदी दन्तकथा में मूसा की सुन्दरता और समझ को लगभग विश्वास से परे बढ़ाया गया है। फिलो ने लिखा है, "जन्म लेते ही [वह] आम बच्चों से अधिक सुन्दर और सुशील लग रहा था।"[61] "सुन्दरता" के विचार से केवल यह सुझाव मिल सकता है कि वह कोई साधारण बच्चा नहीं था। उसके बारे में किसी बात से यह संकेत मिला कि वह बड़ा आदमी बनेगा, परन्तु इसके अलावा कुछ और कहना केवल अनुमान है। मूसा को शिक्षा की हर बात में माहिर दिखाया गया है।[62] जोसेफस ने मिस्री सेना के सेनापति के रूप में इथोपिया के विरुद्ध इसके एक अभियान की बात बताई है।[63] एक यूनानी भाषी यहूदी लेखक यूपोलेमिस ने उसे वर्णमाला का आविष्कार करने वाला बताया है।[64]

क्या अम्राम और योकेबेद चकित हुए होंगे कि "यदि लहर हमारे बच्चे को समुद्र में बहा ले जाए और आंधी आने से यदि उस टोकरी में पानी भर जाए तो?" उन्होंने विश्वास से काम किया था, इसलिए लगता है कि उन्हें इन सम्भावनाओं ने परेशान नहीं करना था। इस्राएली लोग एक उद्धारकर्त्ता की राह तब उतनी ही उतावली से देख रहे होंगे जितनी उतावली से उनकी संतान यीशु के आने को देख रही थी। प्रार्थना में उनकी पुकारों को सुनकर उनका उत्तर दिया गया (निर्गमन 3:9)।

मूसा के माता-पिता के इस संक्षिप्त हवाले में हमें परमेश्वर में मज़बूत, पक्के विश्वास की

बातें मिलती हैं। यह वह विश्वास था जिसने परमेश्वर द्वारा दी गई पेशकश की सम्भावनाओं को देखा, वह विश्वास जिसने राजा के आदेश के बावजूद काम करने का साहस दिया, और वह विश्वास जिसने परमेश्वर के उपाय में भरोसा रखा।

बड़ा होने पर मूसा के माता पिता का विश्वास उसका अपना विश्वास बन गया। वचन मूसा के विश्वासी होने की पांच अलग अलग घटनाओं को बताता है।

आयत 24. मूसा उस समय के सबसे बड़े देश में राजकुमार के रूप में रहना चुन सकता था, परन्तु उसने चुना नहीं। विश्वास ही से मूसा ने सयाना होकर फिरौन की बेटी का पुत्र कहलाने से इन्कार किया। ''इनकार किया'' के लिए यूनानी शब्द अनिश्चित भूतकाल है और मिस्र को ठुकराना चुनने के विशेष कार्य को बताता है।

यह पसन्द चुनकर मूसा वास्तव में कि इस बात का इनकार कर रहा था? कुछ लेखकों का मानना है कि मूसा फिरौन ठुतमोस प्रथम की इकलौती बेटी हैशएप्सुट का लेपालक पुत्र था,[65] और चाहे उसका विवाह बहुत पहले हुआ था पर उसकी कोई संतान नहीं थी। सम्भव है कि मिस्र का ताज मूसा को ही पहनाया जाता, यदि वह फिरौन के घर में रहा होता।

आयत 25. मिस्र से मुंह फेरने की पसन्द बिना सोचे नहीं की गई थी, बल्कि यह एक अटल निर्णय था। फिरौन के घराने में अपनी पदवी को छोड़कर मूसा ने परमेश्वर के लोगों के साथ दुख भोगना चुना। मूसा के समय में गुलामों के साथ किया जाने वाला अपमानजनक व्यवहार बहुत कठोर था। यीशु की तरह मूसा को अपने लोगों में पाए जाने वाली निर्धनता और दुखियों पर दया आती होगी।

अपनी पसन्द चुनते हुए मूसा ने मिस्र की दौलत की तुलना उस ''कलंक, जो परमेश्वर के अभिषिक्त पर रहता है'' से की (NEB)। यह इस बात का सुझाव देता है कि इस्राएली लोग ''परमेश्वर के अभिषिक्त'' थे, परन्तु मसीह को छोड़ किसी और के लिए इब्रानियों की पुस्तक में न तो यहां और न कहीं और *christos* शब्द का इस्तेमाल किया गया। यदि यह वाक्यांश ''चुने हुए लोगों'' के सम्बन्ध में है तो इस आयत का अर्थ है कि मूसा ने उनके साथ दुख सहना चुना। उसे वैसे ही दुख सहना था जैसे बाद की सदियों में परमेश्वर के ठहराए (या अभिषिक्त) बहुत से अन्य लोगों को सहना था। वह ''मसीह'' के साथ मिल गया, अनुवाद बेहतर लगता है। मसीहा का दुख सहना अपमान की हद तक होना था। मसीह के साथ जुड़े कलंक के कारण जिस यहूदी मसीही लोगों की निष्ठा के लड़खड़ाने का खतरा था। उन्हें परमेश्वर के कार्य के लिए मूसा के समर्पण को पढ़ने से बड़ी दिलेरी मिलनी थी।

पाप में थोड़े दिन के सुख का शिकार होना आसान है। इसके अलावा कोई ''पाप के छल में आकर कठोर'' हो सकता है (इब्रानियों 3:13)। मूसा के पास मिस्र या इस्राएलियों की अगुआई करना चुनने की पसन्द थी और उसने इस्राएलियों की अगुआई करना चुना। वह तर्क दे सकता था, ''यूसुफ इस देश में बड़ा सामर्थी हुआ और मरने तक यहां रहा। उसने परमेश्वर और अपने लोगों की सेवा बड़े अच्छे ढंग से की, तो मैं वही सेवा क्यों नहीं कर सकता?'' परन्तु यदि मूसा ने इस प्रकार से सोचा होगा तो निश्चय ही उसने अपने विश्वास के कारण इसे अपने मन से निकाल दिया होगा। उसने मिस्र को इसकी अस्थाई समृद्धि और अनैतिक जीवन के साथ बहुत देख लिया था।

आयत 26क. मूसा ने परमेश्वर की बातों को मिस्र के भण्डार से कहीं अधिक मूल्यवान समझा।[66] मिस्र की सम्पत्ति पहले ही समृद्ध थी। इस बड़ी सम्पत्ति में से कुछ का पता छह साल की खुदाई के बाद हॉवर्ड कार्टर और लॉर्ड कार्निवल द्वारा 1922 में राजा टुटनखामेन की कब्र में लगाया था। कब्र लगभग 3500 सालों से बंद थी। अन्त में युवा राजा की कब्र के ताबूत और अन्य चीज़ों को जो इतनी अधिक थीं कि उनका उल्लेख करना कठिन है, दिखाने के लिए खोला गया। कब्र में से निकाला सोने का एक मुखौटा सरकार के सबसे सुन्दर खज़ानों में से है। लड़के राजा का शव दो बड़े ताबूतों में रखा मिला था, जिसमें से एक ताबूत को दूसरे के अन्दर रखा गया था, और दोनों ही खरे सोने से बनाए गए थे। राजा टुट, जैसा कि उसे जाना जाता है, अठारह या उन्नीस वर्ष की आयु में मरने के कारण स्वयं महत्वहीन; परन्तु उसकी कब्र से ज़बर्दस्त प्राचीन मिस्र की दौलत का पता चलता है।

मूसा और राजा टुट के रहने के समय में केवल एक सौ वर्ष का अंतर है। टुट अपनी सम्पत्ति की समृति में रहता है; जबकि मूसा सदा के लिए परमेश्वर और विश्वासियों की समृति में रहता है। मूसा ने दीन हीन इस्राएलियों का पक्ष चुना क्योंकि यह परमेश्वर का पक्ष था। राजा टुट का जीवन इस बात की घोषणा करता है कि प्रसिद्धि और सम्पत्ति केवल थोड़ी देर के लिए होती है। मिस्र की सम्पत्ति और सामर्थ नष्ट हो गई थी, परन्तु परमेश्वर की सम्पत्ति और सामर्थ बनी रहती है। सांसारिक धन की लालसा लग सकती है और यह विनाशकारी हो सकती है। मूसा ने दबे कुचले लोगों का भाग चुना और पूरी तरह से उनके दुख सहने में उनके जैसा हो गया।

मसीह के कारण निन्दित होने का अर्थ वैसी ही निंदा हो सकता है जैसी मसीह को स्वयं सहनी पड़ी (देखें 13:13)। कुछ सीमा तक हर पवित्र जन के लिए इसे सहना आवश्यक है (2 तीमुथियुस 3:12)। इब्रानियों की पत्री प्राप्त करने वाले मसीही लोगों ने मसीह के प्रति अपनी निष्ठा के कारण दुख उठाया था, इस कारण उनके लिए मूसा का उदाहरण बड़ा महत्वपूर्ण होना था।

मूसा के काम ने ही उसे मसीह की ओर बढ़ने में अगुआई की। इसका अर्थ है कि मूसा को किसी प्रकार का कोई प्रकाशन मिला था, जो मसीह के उसके काम से सम्बन्धित था। चुनौती को स्वीकार करते हुए उसने परमेश्वर के लोगों के साथ अपने आप को, पर इससे भी बढ़कर उस लज्जा से जो बाद में उसने सहनी थी, मसीह के साथ मिला लिया।[67] हो सकता है कि इसी अर्थ में उसने "मसीह के कारण निन्दित होने" को और भी उत्तम जाना। यदि उसे तब पता नहीं था तो बाद में पता चल गया कि वह आने वाले मसीहा के जैसा है (व्यवस्थाविवरण 18:15–18)। यदि अब्राहम को मसीह का पता था (यूहन्ना 8:56), तो निश्चय ही मूसा को भी मसीहा का पता था। शायद पौलुस की तरह जिसे दूसरे लोग लाभ मानते हैं पौलुस उसे मसीह के लिए हानि मानता था (फिलिप्पियों 3:7–10)। हमें वही जानना आवश्यक है जिसका पता मूसा को था और जो अय्यूब ने देखा "कि दुष्टों का ताली बजाना जल्दी बन्द हो जाता और भक्तिहीनों का आनन्द पल भर का होता है" (अय्यूब 20:5)।

आयत 26ख. हमें मूसा के निर्णय कि उसकी आंखें फल पाने को लगीं की प्रेरणा दिखाई देती है। *Misthapodosia* से लिया गया "फल" के लिए यूनानी शब्द 2:2 और 10:35 में भी मिलता है। यह इब्रानियों की पुस्तक में एक महत्वपूर्ण विचार को दिखाता है जिसका अर्थ या तो

''पुरस्कार'' है या ''दण्ड।'' KJV में इसका अनुवाद ''पुरस्कार का मुआवज़ा'' है।

अपने विकल्पों को देख लेने के बाद मूसा ने भावी फल को संसारिक धन से कहीं अधिक देखा और मान लिया कि मिस्र की सम्पत्ति और सामर्थ को ठुकराने के लिए उसके रास्ते में आने वाले वह अस्थाई खतरे और बदनामी की परवाह नहीं करेगा। उसने यह निर्णय मिस्री की हत्या करने से भी पहले लिया होगा।

आयत 27. राजा के क्रोध से न डरकर निर्गमन 2:11–15 का उलट प्रतीत होता है, जो यह सुझाव देता है कि मूसा मिस्री की हत्या करने के बाद डरकर भाग गया। उसे अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा का डर हो सकता है, चाहे उसे मिस्र के बजाय परमेश्वर की सेवा करने की अपनी पसन्द चुनने का कोई डर नहीं था।[68] ''सचमुच, वह डरा था, परन्तु डर के कारण वह मिस्र से नहीं भागा था। मिस्र से उसका जाना विश्वास का एक कार्य था।''[69] क्रूर हाकिम के क्रोध से भागने के लिए जो उसका पीछा करके कहीं भी उसे मार सकता था, बड़ी दिलेरी चाहिए थी; परन्तु उसका विश्वास उसकी दिलेरी से कहीं बढ़कर है। परमेश्वर ने उसकी रक्षा की क्योंकि उसने विश्वास से काम किया। ''मिस्र को पीछे छोड़कर वह अपने पूर्वजों के साथ मिल गया जो बेघर होकर पृथ्वी पर मारे मारे फिरते थे।''[70] अब तक इस्राएल के परमेश्वर में उसका विश्वास पूरी तरह से विकसित हो गया था और उसका डर कम हो गया था।

यह दिखाने के लिए कि अपने पहले प्रस्थान पर मूसा राजा से डरा नहीं, दिए गए तर्क युक्ति लगते हैं। परन्तु जैसा कि वचन कहता है, मिस्र से यह जाना विश्वास का एक कार्य था, फिर वह अपने उस विश्वास के कारण गया कि परमेश्वर ने उसके लिए रखा है। जो भी डर था वह परमेश्वर की सेवा करने की उसकी इच्छा के सामने कम महत्व का था।

मूसा के डर के सम्बन्ध में लगने वाले विरोधाभास को सुलझाने के लिए एक वैकल्पिक विचार यह मानने के लिए सुझाया गया है कि मूसा दो अवसरों पर मिस्र से भागा था। एक बार वह फिरौन के डर से भागा था (निर्गमन 2), परन्तु एक और बार तब गया जब वह इस्राएलियों को मिस्र में से बाहर ले गया था (निर्गमन 13)। यदि इब्रानियों 11 के विवरण वाली घटनाओं को निर्गमन की घटनाओं से जोड़कर कालक्रम में रखा जाए तो आयत 27 वाला प्रस्थान मिद्यान के लिए था न कि कनान के लिए।[71] परन्तु यह सम्भावना अधिक लगती है कि यह आयत निर्गमन की बात करती है।[72]

बेशक उसने फिरौन के सामने जाने के लिए अयोग्य होने का दावा किया था (निर्गमन 4:10), परन्तु मूसा को राजदरबार की भाषा और इसका इस्तेमाल करने में कुशलता मिल गई थी। शायद वह जंगल में रहने के चालीस वर्षों के दौरान अपने राजसी कौशल को थोड़ा बहुत भूल गया था परन्तु शीघ्र ही वह फिरौन से भयरहित हो गया (निर्गमन 5—12)। दूसरे अवसर पर फिरौन के सामने भयभीत होकर ही विश्वास ही से उसने मिस्र को छोड़ दिया। लाल समुद्र पार करके उसने परमेश्वर की आराधना करने के लिए जंगल में प्रवेश किया।

पुराना नियम निर्गमन के समय राजा के क्रोध का उल्लेख नहीं करता, परन्तु गुलामों के चले जाने के बाद उसके द्वारा उनका पीछा किया जाना इस बात का सुझाव देता है कि उन्होंने अपने प्रस्थान के द्वारा राजा की इच्छाओं को ललकारा था (निर्गमन 14:5–9)। यहीं पर मूसा दृढ़ रहा। वह उसके बाद से लोगों की अगुआई करते हुए विश्वास में ''दृढ़ रहा'' परमेश्वर के साथ अपने

दृढ़ता से खड़े होने में वह लगभग अकेला होता था।

उसके दृढ़ होने का एक कारण यह था कि अनदेखे को मानो देखता। वास्तव में जलती झाड़ी के अनुभव में मूसा ने परमेश्वर को "देखा" था (निर्गमन 3:2-6)। निर्गमन में कई बार मूसा के परमेश्वर के साथ उस विशेष सम्बन्ध की बात मिलती है जैसे दोस्त "आमने सामने" बातें करते हैं (33:11; देखें गिनती 12:7, 8)।

न बुझने वाली, परन्तु न भस्म करने वाली आग में मूसा ने जो कुछ देखा उसे "परमेश्वर का दूत" कहा गया है (निर्गमन 3:2)। फिर जो कुछ उसने देखा वह परमेश्वर का स्वरूप था न कि स्वयं परमेश्वर। परन्तु वचन यह बताता है कि उसने अपना मुंह ढांप लिया ताकि परमेश्वर को न देखे (निर्गमन 3:6)। स्पष्टतया मूसा को परमेश्वर के विशेष प्रदर्शन को देखने की अनुमति दी गई थी, परन्तु परमेश्वर के चेहरे को नहीं। प्रेरित यूहन्ना को निश्चय ही मूसा के अनुभव का पता था जब उसने लिखा, "परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा, इकलौता पुत्र जो पिता की गोद में है, उसी ने परमेश्वर को प्रकट किया" (यूहन्ना 1:18)। जो कुछ मूसा ने देखा वह परमेश्वर की "पीठ" देखी (निर्गमन 33:20-23), जिसे "ईश्वरीय महिमा की लाली" कह सकते हैं।[73] यह दृश्य रात के समय जेट इंजन में से निकलती लपटों को देखने जैसा हो सकता है। इसमें आग तो दिखाई देती है पर इंजन की शक्ति नहीं जो वास्तव में जहाज को आगे धकेलती है। परमेश्वर के विवरण के लिए यह रूपक पर्याप्त नहीं है परन्तु यह विचार शायद समझने में सहायता कर सकता है।

एक और सम्भावना यह है कि आयत 27 मूसा के जलती हुई झाड़ी वाले अनुभव की कोई बात नहीं करता। लेखक "मूसा के विश्वास से" देखने की बात पर ही विचार कर रहा हो सकता है जो कि "अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण" है (11:1)।

आयतें 28, 29. फसह को मनाने में इब्रानियों की अगुआई के समय मूसा ने परमेश्वर की इच्छा के अनुसार काम किया (आयत 28)। वह बहुत करके आने वाली प्रलय की चेतावनी मिलने के बाद वाले नूह के जैसा था। यानी दोनों ने परमेश्वर की आज्ञा से मेल खाते हुए पूरी तरह से बात मानी, चाहे उन्होंने आने वाली चीज़ को आंखों से नहीं देखा था। **विश्वास ही से** [मूसा] ने फसह की विधि मानी या इसे स्थापित किया (जैसा कि ASV वाली मेरी प्रति में एक टिप्पणी है)। "मानी" शब्द *poieō* ("बनाना" या "करना") है, जिसका अर्थ यहां पर "स्थापित करना" हो सकता है।[74] क्रिया शब्द पूर्णकाल में है जिसका अर्थ यह है कि फसह आरम्भ हो चुका और इसके बाद से लेकर इब्रानियों की पुस्तक के लिखे जाने के समय तक लगातार मनाया जाता था।

फसह की भेंट का आरम्भ मानवीय तर्क से नहीं हुआ। मेमने को काटने, उसके लोहू छिड़कने, इसके मांस को खाने का सीधा सम्बन्ध इस्राएलियों के पहलौठे के छोड़े जाने के साथ नहीं होना था। मूसा ने परमेश्वर की आज्ञाओं के सम्बन्ध में उसके वचन को वैसे ही लिया। उसने लोगों को बताया कि क्या करना है और आज्ञाकारी विश्वास के कारण पहलौठों का बचाव हुआ। मसीह के बलिदान का नमूना था जिसे हमारा "फसह" कहा गया है (आयत 28; 1 कुरिन्थियों 5:7)।

पुराने नियम में "मृत्यु के दूत" का उल्लेख नहीं है। निर्गमन 12:11-14 में किसी

''स्वर्गदूत'' को यह नाम नहीं दिया गया, नाश करने वाला वहां परमेश्वर ही लगता है। आयत 13 कहती है, ''मैं उस लोहू को देखकर तुम को छोड़ जाऊंगा, ...।'' निर्गमन 12:23 एक ''नाश करने वाले'' की बात करता है जो स्पष्टतया परमेश्वर नहीं था। परन्तु जो कुछ स्वर्गदूत उसकी आज्ञा से करते हैं उसे परमेश्वर का किया हुआ ही कहा जा सकता है (देखें उत्पत्ति 22:15–18)। मिस्र पर मृत्यु आने के समय इस्राएली पूरी सुरक्षा में भोजन खा रहे थे। विश्वास ही से इस्राएलियों को छोड़ा गया था (आयतें 28, 29)।

लोगों के भोजन खा लेने के लगभग तुरन्त बात फिरौन की ओर से उन्हें जाने देने का आदेश दिया गया (निर्गमन 12:29–32)। शीघ्र ही लोग लाल समुद्र तक पहुंच गए (आयत 29), जो इब्रानी भाषा में मूलतया ''सरकंडों का समुद्र'' है। LXX में इस वाक्यांश को बदलकर ''लाल समुद्र'' किया गया है।[75] फिरौन की सेना द्वारा इस्राएलियों को पकड़ लेने पर उनका विनाश पक्का ही था, यदि परमेश्वर फिर से उन्हें छुटकारा न दिलाता (निर्गमन 14:10–14)।

परमेश्वर ने समुद्र को सूखी भूमि में बदल दिया (निर्गमन 14:16)। लोगों का विश्वास कम हो गया परन्तु फिर भी वह समुद्र में से ऐसे आगे बढ़ते रहे जैसे सूखी भूमि पर से जा रहे हों। आगे बढ़ने की परमेश्वर की आज्ञा के कारण विश्वास ही से वे ऐसा कर सके। विश्वास से और उतर जाने पर उन्हें यहोवा के छुटकारे का पता चलना था। ध्यान दें कि विश्वास के द्वारा उन्हें छुड़ाया और बचाया गया था, जबकि सब मिस्री सिपाही डूब (निर्गमन 14:28, 30) गए। मिस्र केवल देखकर चला जबकि वे समुद्र के खुलने को देख पाए थे। ढीठ होकर वे परमेश्वर की ओर से मिले वचन के बिना आगे बढ़ गए जिस कारण उन्हें वास्तविक ''विश्वास'' नहीं था जिस पर उन्हें काम करना था। स्वाभाविक परिणाम वही हुआ जिसकी उम्मीद थी, वे सब डूब मरे।

इस्राएलियों का और रहाब का विश्वास (11:30, 31)

[30]विश्वास ही से यरीहो की शहरपनाह, जब वे सात दिन तक उसका चक्कर लगा चुके तो वह गिर पड़ी [31]विश्वास ही से राहाब वेश्या आज्ञा न मानने वालों के साथ नाश नहीं हुई; इसलिए कि उसने भेदियों को कुशल से रखा था।

आयत 30. प्रतिज्ञा किए हुए देश पर विजय पा लेने से बड़े अनुभवों में इस्राएलियों के विश्वास को फिर से देहराया गया है। यह घटना इस्राएल जाति को परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार संगठित विश्वास में एक होते हुए दिखाती है।

शैली के दृष्टिकोण से 11:29–38 को इब्रानियों की पुस्तक के सबसे सुन्दर और सबसे प्रभावित करने वाले वचनों में से एक के रूप में दोहराया जाता है। यह उस विश्वास को दिखाता है ''जो निर्णय बदलने की विलासिता की कभी अनुमति न देते हुए आगे को भी बढ़ाता है।''[76]

आयत 29 के आधार पर हमारा वचन पाठ बड़े अन्तर को दिखाता है। लेखक ने अभी अभी बताया था कि इस्राएली समुद्र में से निकल गए और बच गए, जबकि मिस्री डूब गए थे। इस्राएल में यह घटना राष्ट्रीय गाथा बन गई थी जिसे कई साल बाद भजन संहिता में यादगारी बनाया गया

(78:13; 135:8, 9; 136:10–15)।

विश्वास से यरीहो के **चक्कर लगाने** वाले धर्मियों और उसके अंदर नष्ट हो जाने वाले अविश्वासियों में दूसरा अन्तर देखा जाता है (आयतें 30, 31)। आगे बढ़ने और चिल्लाने से किलानुमा शहरपनाह वैसे ही नहीं गिरनी थी जैसे बिखरे हुए लहू ने पहलौठों के प्राण नहीं बचाने थे। परन्तु विश्वास से इस्राएलियों ने परमेश्वर की आज्ञाओं को माना और उसने उन्हें अपने वचन के अनुसार आशीष दी।

विश्वास से यानी आज्ञाकारी विश्वास से यरीहो की शहरपनाह गिर पड़ी। इस्राएलियों की भीड़ चाहे जितनी आगे बढ़ती रहती, ऐसी शहरपनाह को गिरा नहीं सकती थी। यह सच है कि पुल पार करते हुए सिपाही ताल बनाने से रोकने के लिए जिससे पुल हिलकर गिर जाए कदम न मिलाएं, परन्तु शहरपनाह अपने आस पास जमीन पर चक्कर लगाते हुए आगे बढ़ने या कदमताल करने के कारण गिरती नहीं है (यहोशू 6)।

एक मिस्री विद्रोही जिसका उल्लेख प्रेरितों 21:38 में है, ने दावा किया था कि उसके बोलने से यरूशलेम की शहरपनाह गिर जाएगी, परन्तु वह नहीं गिरी।[77] सेना के किले की दीवार तोड़ने के यंत्रों से नहीं बल्कि परमेश्वर में विश्वास से इस्राएलियों के नगर के गिर्द सात दिन तक चक्कर लगाते हुए जयकारे लगाने से यरूशलेम की शहरपनाह गिरनी थी (यहोशू 6:1–5, 12–20)। उन सात दिनों के दौरान उनके आगे बढ़ते हुए नगर वासियों के उनकी हंसी उड़ाने पर जो कुछ हुआ होगा, उससे उनका विश्वास बढ़ा। यरीहो पर विजय से इस्राएलियों के दुष्ट काफिरों से उनकी बुराई के पूरा हो जाने पर, प्रतिज्ञा किए हुए देश पर कब्जा करने की स्वीकृति की मोहर लग गई (उत्पत्ति 15:13–16)।

यरीहो पर विजय पाने से समस्त इस्राएलियों को बड़ा प्रोत्साहन मिला होगा। यदि परमेश्वर की सहायता के बिना होता तो इस्राएलियों के लिए बड़ी बड़ी दीवारों और सूरमाओं के सामने लड़ना दिल दहलाने वाला होता।[78] किले के बाहर कनान की आंतरिक तराई पर कब्जा करने से पहले यरीहो की सैनिक चौंकी को हराना आवश्यक था। शहरपनाह के गिरने से इस्राएलियों को फुर्ती से आगे बढ़कर पूरे देश पर विजय पाने के लिए पर्याप्त विश्वास हो गया होगा।

आयत 31. रहाब वेश्या ने इस्राएल के खोजियों के सामने अपने विश्वास को माना। वह विश्वास केवल किसी से सुना सुनाया नहीं था बल्कि उसने परमेश्वर को "ऊपर के आकाश का और नीचे की पृथ्वी का परमेश्वर" माना (यहोशू 2:8–11; 6:22–25)। यह बात उस सब से उलट थी जो आम तौर पर यरीहो के लोगों द्वारा माना जाता था। उसके विश्वास ने भेदियों को बचाने और उनके चले जाने के बारे में झूठ बुलाया, जिससे उसके परिवार का बचाव हो गया और उसका उद्धार हो गया। यरीहोवासियों के आज्ञा न मानने के कारण उनकी पराजय हो गई। उस विश्वास के द्वारा जिसके आज्ञापालन ने उसे धर्मी ठहराया (याकूब 2:25) उसका जीवन बदल गया। बाद में रहाब सलमोन की पत्नी और बोअज की माता बनी जो यिशै के पिता ओबेद का पिता था। इस प्रकार वह राजा दाऊद की लकड़दादी थी और इस प्रकार मसीह की पूर्वज थी (मत्ती 1:5, 6)। यरीहो के शेष लोगों ने इस बात पर विश्वास नहीं किया कि परमेश्वर इस्राएलियों के साथ है, इस का परिणाम यह हुआ है कि वह नष्ट हो गए।

विश्वास के विजयी नायक और क्लेश उठाने वाले नायक (11:32-38)

[32]अब और क्या कहूं? क्योंकि समय नहीं रहा, कि गिदोन का, और बाराक और शिमशोन का, और यिफतह का, और दाऊद और शमूएल का, और भविष्यद्वक्ताओं का वर्णन करूं। [33]इन्होंने विश्वास ही के द्वारा राज्य जीते; धर्म के काम किए; प्रतिज्ञा की हुई वस्तुएं प्राप्त कीं, सिंहों के मुंह बन्द किए। [34]आग की ज्वाला को ठंडा किया; तलवार की धार से बच निकले, निर्बलता में बलवन्त हुए; लड़ाई में वीर निकले; विदेशियों की फौजों को मार भगाया। [35]स्त्रियों ने अपने मरे हुओं को फिर जीवते पाया; कितने तो मार खाते खाते मर गए; और छुटकारा न चाहा; इसलिए कि उत्तम पुनरुत्थान के भागी हों। [36]कई एक ठट्ठों में उड़ाए जाने; और कोड़े खाने; वरन बान्धे जाने; और कैद में पड़ने के द्वारा परखे गए। [37]पत्थरवाह किए गए; आरे से चीरे गए; उनकी परीक्षा की गई; तलवार से मारे गए; वे कंगाली में और क्लेश में और दुख भोगते हुए भेड़ों और बकरियों की खालें ओढ़े हुए, इधर उधर मारे मारे फिरे। [38]और जंगलों, और पहाड़ों, और गुफाओं में, और पृथ्वी की दरारों में भटकते फिरे।

आयत 32 से आरम्भ करते हुए नायकों को तीन समूहों में दिखाया गया है। पहले समूह में उन विजयी नायकों के नाम हैं, जिन्होंने सैनिक विजयें पाईं या गम्भीर खतरों से निकले थे (आयतें 32–34)। दूसरे समूह में क्लेश सहने वाले नायक हैं (आयतें 35–38)। तीसरा जो कि संक्षिप्त कथन है (आयतें 39, 40), युगों के सब विश्वासियों को इकट्ठा कर देता है।[79] मसीह की कलीसिया के बिना इनमें से कोई भी "सिद्ध हो" नहीं पाया। विजय उनके और हमारे लिए हमारे प्रभु मसीह के द्वारा मिली थी।

आयत 32. परमेश्वर द्वारा विजय पाए गए राज्य, जहां संकेत से हम मान लेते हैं कि अधर्मियों को पराजित किया गया (आयतें 32–38)। यहां दिए गए इब्रानी इतिहास की हर घटना में बड़े सबक मिलते हैं। यह वचन इस्राएल के किसी भी बालक द्वारा दोहराए जाने वाले देशभक्ति के बड़े भाषण का भाग हो सकता है।

लेखक ने यह कहते हुए कि अब और क्या कहूं? क्योंकि समय नहीं रहा उन शब्दों का चयन किया जिनका इस्तेमाल किसी प्रचारक द्वारा किया जा सकता है। लिखने के समय रोकने वाला समय नहीं बल्कि स्थान है। यहां लगता है कि हम एक प्रवचन की बात कर रहे हैं जिसके लिए समय निकला जा रहा है।

बाइबल में विश्वास के अद्भुत उदाहरणों की भरमार है, वास्तव में वे इतने हैं कि लेखक उन सब उदाहरणों का इस्तेमाल नहीं कर पाया जो उसके पास थे। न ही उसे इसकी आवश्यकता थी। इसके बाद उन नामों और कामों की सूची है जिनका पत्र के प्राप्त करने वाले हर किसी को पता था। लोगों के कुछ विवरण हो सकते हैं कि जिनका उल्लेख पवित्र शास्त्र में नहीं हैं। इस वचन के आधार पर अनन्तकाल में परिचित होने तक हम उन्हें सम्भालकर रख सकते हैं। लेखक मनमाने ढंग से काम करने वाला नहीं होना चाहता था इस कारण उसने अपनी सूची में

से अनावश्यक बातें निकाल दीं।

न्यायियों और 1 तथा 2 शमूएल में से छह स्पष्ट नाम यहां दिए गए हैं। इन्हें तीन जोड़ों में बांटा जा सकता है, जिसमें प्रत्येक जोड़े को उलटे कालक्रमिक क्रम में अनोखे ढंग से दिखाया गया है: **बाराक** ने **गिदोन** से पहले इस्राएल की अगुआई की, यिफतह शिमशोन से पहले था, शमूएल की सेवा दाऊद का अभिषेक करने के समय खत्म होने के निकट थी। यह नाम तीन महत्वपूर्ण वर्गों को दिखाते हैं जिनमें पहला न्यायी, दूसरा राजा और तीसरा भविष्यद्वक्ता है।

पहला व्यक्ति जिसका नाम गिदोन है (न्यायियों 6:11—8:32) वह पांचवां न्यायी है और उसने विश्वास से मिद्यानियों को पराजित किया था। केवल तीन सौ पुरुषों वाली गिदोन की सेना बहुत बढ़ गई जिसने मिद्यान के कम से कम 1,35,000 सिपाहियों का सामना किया (देखें न्यायियों 7:6; 8:10)।

बाराक (न्यायियों 4:1—5:31) और उसके दस हज़ार पुरुषों ने कनानियों को जिनके पास नौ सौ लोहे के रथ और इस्राएल से कहीं अधिक बड़ी सेना थी हरा दिया। कनानियों के सेनापति सिसरा की हत्या उस समय हो गई थी, परन्तु सेनापति बाराक के द्वारा नहीं, क्योंकि उसने नबिया दबोरा की सलाह नहीं मानी थी जो कि इस्राएल में चौथी न्यायी थी। इसके बजाय सिसरा को एक स्त्री द्वारा मार डाला गया था (न्यायियों 4:8, 9, 21)। युद्ध के लिए दबोरा को साथ लेने की बाराक की इच्छा निश्चय ही यह संकेत देती है कि उसे परमेश्वर पर जिसने उसे संदेश दिया था विश्वास था, परन्तु उसका विश्वास उतना मज़बूत नहीं था जितना हो सकता था। चाहे उसे विजय का सम्मान नहीं दिया गया परन्तु परमेश्वर और इस्राएल की महिमा के लिए युद्ध में सेना की अगुआई उसी ने की।[80]

तेरहवां न्यायी शिमशोन (न्यायियों 13:24—16:31), जन्म से नाज़ीर था और उसने कई पलिश्तियों को मारा था। शिमशोन एक पापी था परन्तु इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने उसकी प्रशंसा उसके पापों के लिए नहीं की। शिमशोन की सबसे बड़ी कमज़ोरी दुष्ट स्त्रियों के साथ रंगरलियां मनाना था। उसे नये सिरे से सामर्थ मिलने की आशीष मिली परन्तु उन पलिश्तियों के साथ जिन्हें उसने मारा था, उसे अपने प्राण को खोकर। परमेश्वर ने उसे अपने विश्वास से उसे शक्ति का एक अन्तिम प्रदर्शन करने के योग्य बनाया।

नौवां न्यायी यिफतह (न्यायियों 11:1—12:7) (शिमशोन की तरह) सिद्ध नहीं था। अपनी बेटी के सम्बन्ध में उसने अविवेकपूर्ण मन्नत मान ली, पर वह उसे पूरी करने में वायदे का पक्का रहा। चाहे जल्दबाजी में ही मानी गई थी पर उसकी मन्नत विश्वास से भरी थी। स्पष्टतया उसने दिखा दिया कि उसने परमेश्वर के सामने मन्नत मानी थी और वह उससे मुकर नहीं सकता था। यह बहस का मुद्दा है कि उसकी बेटी को नर बली के रूप में दिया गया या केवल अविवाहित जीवन के लिए ("अपने कुंवारेपन के कारण रोती हुई"; न्यायियों 11:37)। नाजायज पुत्र होने के कारण यिफतह की कोई विरासत नहीं थी, परन्तु यदि उसकी बेटी उसे वारिस दे देती तो उसकी वंशावली चलती रह सकती थी। इस कारण उसका कुंवारा रहना और भी निराशाजनक है। यह तय करने के लिए कि इस्राएल का उस समय कोई राजा न हो परमेश्वर ने उपाय के द्वारा इस स्थिति का प्रबन्ध किया हो सकता है। यिफतह ने अमोनियों को पराजित किया और स्पष्टतया इससे इस्राएल में वह शान्ति आई जो कुछ समय तक उसके उत्तराधिकारियों को मिली।

इस्राएल के दूसरे राजा दाऊद (1 शमूएल 16—2 शमूएल 24) ने एक कहानी छोड़ी जिसे बाइबल का हर पाठक जानता है। यह कहते हुए कि परमेश्वर मनुष्यों पर ''धार्मिकता से'' शासन किया जाना पसन्द करता है, अपने अन्तिम गीत में वह ईमानदारी से शासन करने में चौकस था (2 शमूएल 23:2-7)। दाऊद ही था जो आने वाले मसीह का प्रतीक था। उसके बड़े विश्वास को भविष्यवाणी के उसके भजनों के द्वारा दिखाया गया है; उसके जीवन और उसके लेखों में हम उसकी उम्मीदों को देखते हैं, जो उसके बड़े पुत्र यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान में पूरी होनी थीं। ''दाऊद पर की अटल करुणा की वाचा'' (यशायाह 55:3, 4) वाक्यांश मसीह के पुनरुत्थान की ओर आगे को देखता है (प्रेरितों 13:32-35)। दाऊद का विश्वास उसकी नैतिक निर्बलता से बढ़कर था ताकि यदि कोई भी नाशवान मनुष्य यहां नाम दिए जाने का हकदार है, तो उसका नाम भी दिया जाए।

शमूएल (1 शमूएल 2:21—25:1) इस्राएल का पन्द्रहवां और अन्तिम न्यायी था, परन्तु वह नबी भी था। वह भला व्यक्ति था परन्तु अपने पूर्वाधिकारी एली की तरह उसने अपने बेटों को सही प्रशिक्षण नहीं दिया या उन्हें रोका नहीं (1 शमूएल 3:12, 13; 8:1-7)। इसलिए उसके मरने के बाद उसकी संतान में से कोई उसका उत्तराधिकारी नहीं बन सका। शमूएल ही था जिसने लोगों को याद दिलाया था कि परमेश्वर उनके साथ था, तब भी जब संदूक पलिश्तियों के पास था। संदूक के वापस आने पर शमूएल ''गुमनाम स्थान में रह गया ताकि लोगों का विश्वास एक बार फिर से परमेश्वर के बजाय संदूक में न हो जाए।''[81] अपने बेटों पर अपने प्रभाव को छोड़ वह हर बात में विश्वासयोग्य था।

ध्यान दें कि इस सूची में दिए गए हर व्यक्ति में कोई न कोई वह आत्मिक कमी थी, जिसका उल्लेख पवित्र शास्त्र में किया गया है। इन लोगों ने चाहे अपने लोगों को विजय, शान्ति और न्याय दिलाया था, परन्तु विश्वास के यह नायक पाप के दोषी थे:

> वे साधारण पुरुष और स्त्रियां थे, जिनके द्वारा परमेश्वर ने अपने उद्देश्यों को पूरा किया, परन्तु इन सब में कमज़ोरियां थीं। नूह शराबी हो गया था, अब्राहम ने अपनी पत्नी के विषय में झूठ बोला था, सारा हाजरा पर निर्दयी हो गई और उसे बाहर निकाल दिया, इसहाक ने अपनी पत्नी के बारे में झूठ बोला था, याकूब ने अपने पिता को धोखा दिया, यूसुफ बचपन में गप्पी था, मूसा ने एक मिस्री की हत्या की और मरीबा में परमेश्वर की आज्ञा तोड़ी थी, इस्राएलियों ने कई प्रकार की बुराइयां की थीं, रहाब और शिमशोन दोनों ही व्यभिचार के दोषी थे। बाराक ने दबोरा की सहायता के बिना युद्ध में जाने से इनकार कर दिया, यिफतह अपने जीवन का छापा मारने वाला भाग था और उसने मूर्खता भरी मन्नत मान ली, दाऊद ने बतशेबा के साथ व्यभिचार किया था और शमूएल ने प्रभु के काम के लिए अपने बेटों को खो दिया।[82]

इन पापों से केवल परमेश्वर के अनुग्रह का ही पता चलता है। उसने इन लोगों को उनकी नाकामियों के बावजूद उनके विश्वास के कारण, बड़े नायक बनाया।

आयतें 33, 34. इब्रानी इतिहास के प्रमुख लोगों के नाम देने के अलावा लेखक ने उन आम लोगों का नाम भी लिया, जिन्होंने बड़े बड़े काम किए थे। दिए गए नौ कार्य इन तीनों समूहों में

आते हैं। राज्यों को जीतने, न्याय स्थापित करने और प्रतिज्ञाओं को पाने की प्राप्तियों के सम्बन्ध में पहले समूह का नाम दिया गया है। विदेशी राज्यों की पराज्य आम तौर पर होती थी जब कम शक्ति वाला इस्राएल विश्वास से युद्ध के लिए जाता था। विश्वास के इन लोगों ने धार्मिकता को चुना क्योंकि वह उनके परमेश्वर के स्वभाव में है (आयतें 33, 34)।

दूसरे समूह का सम्बन्ध सहनशीलता से है (आयतें 35, 36)। परमेश्वर के पीछे वफ़ादारी से चलने वालों को बड़े सताव का सामना करना पड़ा, परन्तु फिर भी उन्होंने विजय पा ली। तीसरे समूह को भी बहुत कष्ट सहने वाले के रूप में दिखाया गया है, परन्तु उन्हें भी अद्भुत छुटकारे मिले (आयतें 37, 38)।[83]

इन तथा अन्य लोगों की विभिन्न गतिविधियों का बड़ा महत्व है, क्योंकि वे विश्वास ही के द्वारा की गई थीं (आयत 33)।[84] कइयों ने राज्य जीते। ऐसी विजयें उन लोगों द्वारा पाई गई थीं जिनका नाम पहले भी लेखक ने लिया है, जैसे गिदोन, बाराक और यिफतह, और शिमशोन। औरों ने धर्म के काम किए। यह शमूएल (1 शमूएल 12:1-5) और दाऊद जैसे सरकारी अधिकारियों द्वारा किए जाने वाले न्याय की बात हो सकती है जिन्होंने, "अपनी समस्त प्रजा के साथ न्याय और धर्म के काम" किए (2 शमूएल 8:15)।

प्रतिज्ञा की हुई वस्तुएं प्राप्त कीं का अर्थ सम्भवतया परमेश्वर की कुछ प्रतिज्ञाएं हैं जो उनके जीवन में पूरी हो गई थीं। इब्रानियों 11:13, 39 हमें बताता है कि पुराने नियम के अधीन रहने वाले लोगों ने "प्रतिज्ञा की हुई वस्तुएं नहीं पाईं" और "उन्हें प्रतिज्ञा की हुई वस्तुएं न मिलीं" परन्तु इसमें कोई विरोधाभास नहीं है। ये दोनों आयतें अलग अलग प्रतिज्ञा की बात करती हैं जिसमें अंत में मसीह में हमें दी गई प्रतिज्ञा की आशीष शामिल है। विश्वासी पुरुषों और स्त्रियों ने निश्चय ही पुराने नियम की अन्य प्रकार की "प्रतिज्ञाएं प्राप्त कीं।" परमेश्वर ने इस्राएल के साथ अपने वचन को पूरा किया जब यहोशू की अगुआई में लोगों ने कनान को प्राप्त करके "वह सारा देश" पाया जिसे देने की प्रतिज्ञा परमेश्वर ने उन से की (यहोशू 21:43)। यशायाह ने यरूशलेम को उस हमले और विनाश से छूटते हुए देखा जो सनहेरीब करना चाहता था (2 राजाओं 19)। दानिय्येल ने बाबुल की दासता के अंत को देखा (दानिय्येल 9)। विश्वासियों ने मसीहा को भेजने की परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर विश्वास किया, चाहे उन्होंने अपने जीते जी उसे नहीं देखा। परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के अन्तिम रूप में पूरा होने को 11:35 में देखा जाता है जिसमें अनन्तकाल का "उत्तम पुनरुत्थान" है।

यहां उन लोगों के नाम भी हैं जिन्होंने सिंहों के मुंह बन्द किए। इनमें शिमशोन (न्यायियों 14:6, जिसकी कहानी अध्याय 13 से 16 में बताई गई है) और दाऊद (1 शमूएल 17:34, 35) शामिल हैं। विशेषकर दानिय्येल पर विचार करें। यदि ऐसा है तो दानिय्येल के विश्वास ने ही परमेश्वर को उसके बचाव के लिए स्वर्गदूत को भेजने को मजबूर किया था (दानिय्येल 6:22)।

कुछ विश्वासियों के लिए परमेश्वर ने आग की ज्वाला को ठण्डा किया (आयत 34)। निश्चित रूप में यह दानिय्येल 3 अध्याय वाले शद्रक, मेशक और अबेदनगो की बात की। उनका विश्वास इतना बड़ा था कि चाहे उन्हें पता था कि परमेश्वर चाहे तो उन्हें न छुड़ाए, परन्तु उन्होंने मूर्ति के कदमों में झुककर उसका इनकार न करना चुना। और भी कई घटनाएं हो सकती हैं जिसका हमें कुछ पता नहीं।

विश्वास के कई नायक **तलवार की धार से बच निकले**। पुराने नियम में मौत से बच जाने वालों में गोलियत पर दाऊद की विजय और शाऊल के सामने से उसका भाग जाना शामिल था (1 शमूएल 18:10, 11; 19:10)। एलिय्याह ईज़ेबेल द्वारा उसकी हत्या किए जाने से बच गया (1 राजाओं 19:1-6), और एलीशा (2 राजाओं 6:14-23, 31-33) 2 राजाओं 6:18 में अरामियों के दल को अंधा कर देने के समय ईज़ेबेल के बेटे याहोराम के हाथ से बच गया। लेखक रानी एस्तेर और यहूदियों का भी विचार कर रहा हो सकता है जिन्हें एस्तेर 4:13, 14 में परमेश्वर के उपाय के द्वारा बचाया गया था।

कुछ निर्बलता में बलवंत हुए लड़ाई में बलवंत निकले, विदेशों की फौजों को मार भगाया। ये विवरण राजा अहाब का भी हो सकता है जिसकी सेना "बकरियों के दो छोटे झुण्ड" जैसी थी, परन्तु फिर भी उसने शक्तिशाली अरामियों को हरा दिया (1 राजाओं 20:27)। दाऊद उन निर्बल लोगों में ही था जिन्हें बलवंत बनाया गया (1 शमूएल 17:49-51), जैसे बाराक को भी (न्यायियों 4:14)। हम शिमशोन पर भी विचार कर सकते हैं जिसे एक काफिर मन्दिर और निर्बलता के समय के बाद पलिश्तियों के दल को खत्म करने की शक्ति दी गई थी (न्यायियों 16:19-30)।

उन घटनाओं की भी बात की जा सकती है जिनका वर्णन पवित्र शास्त्र में नहीं है। दूसरी शताब्दी ई.पू. में यूदाह मक्काबी ने सीरिया की शक्तिशाली सेनाओं को भगाकर यहूदियों पर से उदासी के जुए को उतार दिया। अंतियोकुस एपिफेनस के शासन में सीरिया (अराम) ने सब यहूदियों को यूनानी संस्कृति और धर्म को अपनाने को विवश करने का प्रयास किया। यूदाह मक्काबी ने छोटी सी सेना के साथ ही सीरिया पर बड़ी विजय पा ली। बेशक यह विवरण बाइबल का नहीं है।[85] परन्तु इस्राएली लोग इसे बखूबी जानते थे, जो उस छुटकारे में बड़ा गर्व करते थे।

इस अध्याय में बताए गए सभी लोग मरने तक विश्वासी बने रहे और उनकी "गवाही दी गई" (आयत 39क)। परमेश्वर में अपने भरोसे के कारण उन्हें आत्मिक रूप में, और कुछ मामलों में शारीरिक रूप में मज़बूत किया।

आयत 35. इस आयत का आरम्भ कहानी के दूसरे पहलू को बताने के लिए होता है कि अपने विश्वास के बावजूद कइयों ने बड़ा दुख उठाया। परन्तु अपनी समझ से परमेश्वर ने उपाय किया ताकि धर्मी लोग पुनरुत्थान की ओर आगे को देख सकें। कुछ मामलों में मरे हुओं को जिलाया गया। दो ऐसे आश्चर्यकर्म एलिय्याह (1 राजाओं 17:17-24) और एलीशा (2 राजाओं 4:18-37) के द्वारा किए गए। जिलाए जाने वाले बच्चों की शोक में डूबी माताओं के विश्वास के बिना उन्हें जीवते पाना शायद सम्भव न होता। नये नियम में स्त्रियां किसी प्रकार से मरे हुओं में से हर जिलाए जाने से सम्बन्धित घटनाएं जुड़ी हुई थीं। लूका 7:11-17 में जिलाया गया नाइन नगर की विधवा का बेटा था। मरकुस 5:22-24, 35-42 में याइर की बेटी को जिलाया गया था (मत्ती 9:18, 19, 24, 25; लूका 8:41, 42, 49-56 भी देखें)। 11:1-44 में लाज़र को जिलाए जाने के समय मरियम और मारथा यीशु के साथ थीं। मृत्यु के बाद के जीवन के सम्बन्ध में चाहे पुराने नियम में बहुत कम बताया गया था, परन्तु बहुत से यहूदी इसमें विश्वास रखते थे। आम लोग वह देखते थे जिसे बहुत से विद्वान नहीं देख पाते थे।

पवित्र शास्त्र में जिन और लोगों का नाम बताया गया है वे मार खाते खाते मर गए और

छुटकारा न चाहा। यहां प्रयुक्त शब्द (*tumpanizō,* "ढोल") आम तौर पर जानवर की खाल से बनाए गए ढोल को कहा गया है, परन्तु मार खाने के संदर्भ में इसका अर्थ वह पहिया है जिसके ऊपर डालकर व्यक्ति को खींचा जाता था और पीटा जाता था, जिससे आम तौर पर उस व्यक्ति की मौत हो जाती थी। यहूदियों के एक शास्त्री एलआज़ार के साथ यही हुआ था, जिसने मक्काबियों के समय में अवैध भोजन चखने के बजाय कोड़े खाने के लिए चढ़ाए जाकर मर जाने को पहल दी। यहां बताई गई घटना में आम तौर पर ऐसा ही हुआ माना जाता है।[86] दोनों नियमों के बीच के अन्तराल के इस समय में ही पुनरुत्थान में अपनी पक्की आशा के कारण सात भाइयों ने अंग को कटवाकर मरना स्वीकार किया।[87]

इन लोगों को परमेश्वर में अपने विश्वास का केवल इनकार करना था और इनका सताव खत्म हो जाना था; परन्तु परमेश्वर का भय मानने वालों के लिए यह कीमत बहुत बड़ी थी। उन्होंने सब सह लिया क्योंकि वे उत्तम पुनरुत्थान के भागी होना चाहते थे। यह "उत्तम पुनरुत्थान" क्या था? क्या वे सब मुर्दों के पुनरुत्थान में विश्वास रखते थे और अपने सांसारिक जीवनों में छोड़े जाने के बजाय परमेश्वर के साथ अनन्तकाल में जाने को प्राथमिकता देते थे? हो सकता है। हमें एक संकेत मिल सकता है कि इस पुस्तक में इब्रानी मसीही जिन्हें सम्बोधित किया गया, इसके विपरीत अपने विश्वास के लिए दुख उठाने को तैयार नहीं थे।

आयत 36. आम तौर पर परमेश्वर के लोगों को ठट्ठों में उड़ाया जाता था जैसे क्रूस पर यीशु के साथ हुआ (मत्ती 27:41-44; मरकुस 15:31, 32; लूका 23:35-39)। यिर्मयाह ने शिकायत की कि लोगों में से और उसके अपने परिवार के लोग उसका मज़ाक उड़ाने गए थे और बेशक परमेश्वर के नाम में बोलना छोड़ने की उसकी इच्छा का कारण ताना ही था (यिर्मयाह 20:7-10)। बाद में उसे पीटा गया और जेल में डाल दिया गया (यिर्मयाह 37:15)। फिर उसे दलदल भरे गड्हे में डाल दिया गया, जिसमें से उसे एबेदमेलेक कूशी द्वारा बचाया गया (यिर्मयाह 38:6-13)। परम्परा के अनुसार यिर्मयाह पर निकट के यहूदियों द्वारा पथराव किया गया (आयत 37)। यहोयादा के पुत्र जकर्याह को यहूदा के राजा योआश द्वारा मार डाला गया था (2 इतिहास 24:20-22)। मत्ती 23:37 में प्रभु ने स्वयं इस प्रकार के व्यवहार का संकेत दिया। स्पष्टतया कुछ इब्रानी मसीही लोगों के साथ ऐसा व्यवहार हुआ था (इब्रानियों 10:33; 13:13)।

कोड़े मारने के लिए कई-कई चाबुकों वाली लकड़ी की मुट्ठी का इस्तेमाल किया जाता था; पीड़ित व्यक्ति की पीठ पर घाव करने के लिए धातु के छोटे-छोटे टुकड़े या गोलियां डाली जाती थीं। कई बार भीतरी अंग दिखाई देने लगते थे और इससे कोड़े खाने वाले कई लोग मर जाते थे। कोड़े मारने में प्रशिक्षित लोग अन्तिम परहार इस प्रकार करने में कुशल होते थे ताकि कोड़े खाने वाला व्यक्ति थोड़ी दूर आगे तक क्रूस को उठाकर ले जा सके।[88]

बांधे जाने और कैद में पड़ने का इस्तेमाल आमतौर पर धार्मिक पूर्वधारणा के पीड़ितों के साथ किया जाता था (यिर्मयाह, यिर्मयाह 37:4-21; हनानी, 2 इतिहास 16:7-10)। मीकायाह नबी उन बहुत से लोगों में से एक था जो प्रभु का संदेश बताने पर जेल में डाले गए (1 राजाओं 22:26, 27)।

आयत 37. पत्थरवाह किए गए पुराने नियम के समय के मृत्यु दण्ड का आधिकारिक रूप लगता है (लैव्यव्यवस्था 20:27; व्यवस्थाविवरण 21:21; यूहन्ना 8:3-5)। यीशु ने यरूशलेम

पर विलाप किया और परमेश्वर के उन नबियों की बात की जिन पर पथराव किया गया था (मत्ती 23:37; लूका 13:34)। यीशु के पीछे चलने वाले पहले शहीद स्तिफनुस की मृत्यु नये नियम के समयों में इसी प्रकार से हुई थी (प्रेरितों 7:58, 59)।

कुछ लोग आरे से चीरे गए। पुराने नियम या अपोक्रिफा में इसका कोई हवाला नहीं है; परन्तु एक प्रसिद्ध परम्परा के अनुसार मनश्शै के शासन में यशायाह के साथ यही हुआ था। हम देख सकते हैं कि बाद में अपनी पश्चात्तापी प्रार्थना के कारण परमेश्वर द्वारा मनश्शै को क्षमा करके उसका सिंहासन बहाल कर दिया गया था (2 इतिहास 33:9–13)। कहने का अर्थ यह है कि वह ऐसे भयंकर अपराध का दोषी था परन्तु बाद में उसे क्षमा कर दिया जाना परमेश्वर की अतिकरुणा को दिखाता है।

उनकी परीक्षा की गई का अर्थ यह हो सकता है कि इन लोगों को ऐसे सताव से बचने की पेशकश की गई थी परन्तु उन्होंने इनकार कर दिया। परमेश्वर में विश्वास इस जीवन में आशीषित होने की गारंटी नहीं देता परन्तु "ईनाम की भरपाई" की गारंटी है (इब्रानियों 11:26; KJV)। RSV ने इस आधार पर कि कुछ हस्तलेखों में यह शब्द नहीं है "परीक्षा की गई" शब्द नहीं दिया गया। जिन हस्तलेखों में यह है उन में प्रतिलिपिक की गलती के कारण हो सकता है। "परीक्षा की गई" के लिए *peirazō* शब्द है जबकि "आरे से चीरे गए" का अनुवाद बहुत मिलते-जुलते शब्द *prizō* से किया गया है।[89]

अन्य लोग तलवार से मारे गए। युगों से इस प्रकार मारे जाने वाले विश्वासियों की संख्या केवल परमेश्वर को मालूम है। वर्षों से अपने विश्वास के लिए बहुत से लोग मारे जाते रहे हैं। आज भी संसार के कुछ भागों में मसीह के प्रति अपनी निष्ठा के कारण मसीही लोगों को मृत्यु का खतरा और धमकी बरकरार है। उन्हें इब्रानियों 11 में वफ़ादार बने रहने की सांत्वना, सामर्थ और प्रोत्साहन मिलता है।

अहाब के शासनकाल में बहुत से लोग मारे गए थे (1 राजाओं 19:10)। एक भले जवान राजा योशियाह को फिरौन नको द्वारा कत्ल कर दिया गया था (2 राजाओं 23:29)। लेखक के विचार में शायद दोएग द्वारा मारे गए परमेश्वर के पच्चासी याजक ही थे (1 शमूएल 22:18)। शहीद के रूप में मरने वालों में यिर्मयाह भी हो सकता है। (यिर्मयाह 26:14–16 में संकेत हैं कि उसे हत्या किए जाने की उम्मीद थी।) इसके अलावा हम उन यहूदियों पर भी विचार कर सकते हैं जिन्होंने मक्काबी विद्रोह के आरम्भ में सब्त के दिन हत्या किए जाने के लिए अपने आपको दे दिया।[90] लोगों पर पथराव किए जाने और अन्य क्लेशों के आने की बातें पुराने नियम की प्रामाणिक पुस्तकों में दी गई हैं, परन्तु ऐसी ही कहानियां अप्रामाणिक पुस्तकों में भी दी गई हैं। वे "रहस्यपूर्ण" पुस्तकें चाहे पवित्र शास्त्र का भाग नहीं हैं परन्तु यहूदी लोगों को उन कहानियों का पता था।

भेड़ों और बकरियों की खालें पहनना निर्धनता की निशानी थी और समाज में इसे तुच्छ माना जाता था। चरवाहे के रूप में दाऊद को तुच्छ माना गया जो केवल भेड़ बकरियों की देखभाल करने के योग्य था (1 शमूएल 17:15, 28, 34–36)। इस पत्र के प्राप्तकर्त्ताओं में से कई निर्धन वर्ग के लोग होंगे। आम तौर पर उन्हें सहायता की आवश्यकता रहती थी, जिसे पौलुस इकट्ठा करना चाहता था (रोमियों 15:26; गलातियों 2:10)।

''भेड़ों की खालें'' एलिय्याह के लिए भी कहा गया हो सकता है, जिसे अपने घर से निकाल दिया गया था (1 राजाओं 17:3-9; 19:3-14; 2 राजाओं 1:8)। उसका चोगा भेड़ की खाल का या किसी प्रकार के खुदरे रोमिल चमड़े से बने वस्त्र का था। नबी आम तौर पर खुदरे, रोयंदार वस्त्र पहनते थे (जकर्याह 13:4)। वे कंगाल (*hustereō*) हो जाते थे, जिसका अर्थ है ''कमी होना'' या ''घटिया होना।'' यह इस बात का संकेत है कि वे समाज से निकाले हुए होते थे और बहुत ही साधारण ढंग से रहते थे।

आयत 38. समाज के संसार को छोड़कर वे पृथ्वी की दरारों (*opē*) यानी गुफ़ाओं या खोहों में रहते। एलिय्याह ईज़ेबेल से भागकर कुछ देर के लिए गुफ़ा में रहा था (1 राजाओं 19:9)। अहाब के भण्डारी ओबद्याह ने एक सौ नबियों को ईज़ेबेल के क्रोध से बचाने के लिए उनकी सहायता के लिए एक गुफ़ा में छिपा दिया था (1 राजाओं 18:4, 13)। अलग थलग पड़ जाना, परिवार और समान धार्मिक विश्वास वाले लोगों की संगति छूट जाना अपने आप में बड़ा कठिनाई भरा हो सकता है।

सब विश्वासियों का सार (11:39, 40)

[39]संसार उनके योग्य न था: और विश्वास ही के द्वारा इन सब के विषय में अच्छी गवाही दी गई, तौभी उन्हें प्रतिज्ञा की हुई वस्तु न मिली। [40]क्योंकि परमेश्वर ने हमारे लिए पहिले से एक उत्तम बात ठहराई, कि वे हमारे बिना सिद्धता को न पहुंचें।

आयत 39. संसार उनके योग्य न था का अर्थ यह है कि परमेश्वर के काम के लिए दुख उठाने वाले लोगों को समाज के अयोग्य माना गया, चाहे वास्तव में समाज उनके ''अयोग्य'' या उनके लिए बेकार था। ऐसे विश्वासी संसार के लोगों से बेहद ऊपर थे, संसार के लोगों की सम्पत्ति और पदवी के बावजूद सांसारिक लोग भक्तों से तुलना के योग्य नहीं हैं। नबी इस्राएल को बचाने के लिए आते थे परन्तु इस्राएलियों ने अयोग्य होना साबित कर दिया और आम तौर पर उन्हें या उनके संदेश को ग्रहण नहीं करते थे। संसार ने आम तौर पर उन्हें जो बहुत भले थे, ठुकराया ही है। इब्रानियों 11 वाले लोगों का चरित्र उनके सुनने वालों के मनों में अंधकार के मुकाबले बड़ी तेजी से चमकता है।

इन सब के लिए सांसारिक वस्तुओं और इच्छाओं के बजाय बेहतर वस्तुएं आने वाली थीं। उन्हें प्रतिज्ञा की हुई वस्तु न मिली का अर्थ है कि उन्हें आने वाले मसीहा की पूर्ण हुई प्रतिज्ञा नहीं मिली। जो कुछ नई वाचा के अधीन होने वाला था वह विश्वास के पुराने नियम के किसी नायक को नहीं मिला। क्रेग आर. कोस्टर ने लिखा है:

> यीशु द्वारा स्थापित की गई श्रेष्ठ वाचा सही ढंग से परमेश्वर के निकट आने के लिए लोगों के लिए आवश्यक शुद्धिकरण और पवित्रीकरण देती है (7:22; 8:6)। इस आधार पर लोग स्वर्गीय यरूशलेम (12:22-24) अर्थात उस नगर में जो अब्राहम और उसकी संतान के लिए विश्वास की यात्रा का अन्त है (11:10, 16), परमेश्वर की सब प्रतिज्ञाओं के

पूरी तरह से पूरा होने को देखते हैं।[1]

उसे पाने के लिए जो हमें मसीह में मिला है व्यवस्था के विश्वास योग्य लोगों को उसके आने और प्रायश्चित के उसके कार्य तक प्रतीक्षा करनी आवश्यक थी। विश्वास के पुराने नियम के नायकों को अपने जीते जी वह अन्तिम प्रतिज्ञा प्राप्त नहीं हुई। अब हम ईश्वरीय रूप में पूरी हुई प्रतिज्ञाओं के युग में रहते हैं। इसके आगे संसार के अन्त में केवल पुनरुत्थान ही है जिसके बाद अनन्तकाल होगा। हाबिल के बाद से अध्याय 11 में जिनका नाम दिया गया है और जिनका नहीं दिया गया उन्हें वफ़ादारी के लिए अच्छा नाम मिला; यानी अपने आप में यह एक अच्छा प्रतिफल था। इसका अर्थ यह नहीं है कि व्यवस्था के अधीन लोगों को अन्तिम उद्धार की गारंटी दी गई। पुरानी वाचा के अधीन रहने वाले कुछ लोगों पर बाद में दोष लगाया गया (1 कुरिन्थियों 10:5)।

आयत 40. उत्तम बात सम्भवतया अपनी सारी सहायक आशिषों के साथ नई और उत्तम वाचा होगी। व्यवस्था के अधीन लोगों को मसीह का इतना ज्ञान नहीं था जितना हमें है। निश्चय ही हमें उत्तम आश्वासन, आशाएं और प्रतिज्ञाएं दी गई हैं। उन्हें उस सारी आशा के साथ जो मसीह में हमें मिली हैं, उत्तम राज्य नहीं मिला। यह वचन लेखक के "उत्तम" नई वाचा के विषय की ओर वापस ले जाता है।

वे हमारे बिना सिद्धता को न पहुंचें सुझाव देता है कि दोनों वाचाओं के अधीन सभी विश्वासी अन्तिम प्रतिफल के लिए महिमा में इकट्ठा होंगे। परमेश्वर के छुड़ाए हुओं की पूरी संख्या व्यवस्था के अधीन विश्वासियों के बिना अधूरी है। हम विश्वास में सचमुच में उनके साथ एक लोग हैं। इब्रानियों 12:23 संकेत देता है कि हम "सिद्ध किए हुए धर्मियों की आत्माओं" से मिलते हैं जो विश्वासियों के एक बड़े समूह का भाग ही हैं, जो आज भी कलीसिया में है। पुराने नियम के पवित्र लोग विश्वास में थे चाहे उन्हें और अद्भुत आशिषों का पता नहीं था। चार्ल्स वैसली की अवधारणा सही थी जब उसने इस भजन के शब्दों को लिखा:

विश्वास अब भी से हम
उन पहले चले जाने वालों से हाथ मिलाते हैं,
और अनन्त किनारे पर
लहू छिड़के हुए दलों को सलाम करते हैं।[2]

विश्वास में हम उन लोगों के साथ हैं जो हम से पहले चले गए हैं। हम उनके साथ "अनन्त किनारे पर" आमने-सामने मिलेंगे।

मसीह के बिना वास्तव में किसी का उद्धार नहीं हुआ था, चाहे उनके बलिदान देने के समय परमेश्वर उनके पापों के ऊपर से गुजर गया (आयत 40; रोमियों 3:25, 26)। प्राचीन लोगों को आत्मिक अर्थ में हमारी ही तरह मसीह के साथ मिलाया गया था। परन्तु उसके लहू के शुद्ध करने वाले प्रभाव के बिना वे सिद्ध नहीं हुए और न हो सकते थे। यह कहना सही हो सकता है कि पुरखे "हमारे बिना" और "उत्तम बात" से सिद्ध नहीं किया गया था, जो अब हमारे पास परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा है।

व्यवस्था के अधीन लोग जो यीशु के राज्य के निकट कभी नहीं आए, यदि उसके वफ़ादार रहे, जिसे वह जानते थे, तो हमें विश्वास को और कितना कसकर पकड़ना चाहिए। लेखक ने अपने पाठकों को और आज हमें अपने प्रभु और उद्धारकर्त्ता के वफ़ादार बने रहने का आग्रह किया।

और अध्ययन के लिए: इब्रानियों में "गवाह"

नये नियम में "गवाह" का अनुवाद *martureō* शब्द के रूपों से किया गया है। क्रिया के रूप में इस शब्द में "किसी चीज़ के होने को देखना" का आधुनिक विचार नहीं था। संज्ञा शब्द का अर्थ अवश्य ही "जो गवाही देता है" या "गवाही देने वाला" है। 11:2, 39 में "अच्छी गवाही दी गई" अभिव्यक्ति *martureō* से ली गई है। 11:4 में इसी शब्द का अनुवाद "गवाही दी गई" और आयत 5 में "गवाही दी गई" है। प्रेरितों 22:20 में KJV और NIV में इस शब्द का अनुवाद "शहीद" किया गया है और प्रकाशितवाक्य 2:13; 17:6 में KJV में यही अर्थ देता है। यह अर्थ आरम्भिक मसीही जगत से लिया गया था।

पवित्र शास्त्र की गवाही यीशु के कामों की और विशेषकर उसके पुनरुत्थान की गवाही होती है। यह गवाही हमारे लिए हर उस आवश्यक चीज़ को उपलब्ध कराती है, जो हमें उस विश्वास में बढ़ने के लिए आवश्यक है जो अनन्त जीवन की ओर ले जाता है।

इब्रानियों 11 में वर्णित विश्वास के अद्भुत गुण पुराने नियम के विश्वासी नायकों द्वारा पाई गई "गवाही" से जुड़े हो सकते हैं। हाबिल, हनोक और नूह के पास परमेश्वर द्वारा उन्हें दी गई ऐसी ही गवाही ("साक्षी") थी ताकि उसकी दृष्टि में उनके धर्मी होने से आश्वस्त किया जा सके। अब्राहम ने जो अपने व्यक्तिगत जीवन में सिद्धता पाने के सम्पूर्ण अर्थ में धर्मी नहीं था, "उन बातों के विषय में जो उस समय दिखाई न पड़ती थीं" परमेश्वर के वचन को स्वीकार किया (नूह की तरह; 11:7)। उसने पूरी तरह से उसमें विश्वास किया और इस प्रकार उसका विश्वास उसके "लेखे में धर्म गिना गया" या "उसके लिए धार्मिकता माना गया" (KJV; उत्पत्ति 15:6)।

हनोक के विषय में यह कहते हुए कि "उसने परमेश्वर को प्रसन्न किया" इब्रानियों 11:5 में सीधी गवाही दी गई। "गवाही" बिना शब्दों के ईश्वरीय कार्यवाही के द्वारा दी जा सकती थी, परन्तु विश्वास से धर्मी होने की स्पष्ट बात के लिए उसके लिए उन्हीं शब्दों का होना आवश्यक था। आज बहुत से लोग यही चाहते हैं, इतना शिद्दत से कि उन्हें लगता है कि उन्हें परमेश्वर की ओर से गवाही मिली है। "गवाह" या किसी की गवाही से आम तौर पर अभिप्राय विशेष संदेश होता है न कि केवल भावना।

प्रासंगिकता

विश्वास की प्रकृति (11:1)

इब्रानियों 11 में से मिलती परिभाषा के साथ "विश्वास" पक्की निश्चित्ता पर बना भरोसा

है। ऐसा नहीं है कि "तुम्हारे पास विश्वास है, परन्तु मेरे पास तथ्य है।" मसीहियत वास्तविक ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित धर्म है जिनमें से कुछ घटनाएं चमत्कारी थीं। ऐतिहासिक तथ्य हमारे विश्वास को अर्थ देते हैं। विश्वास दिलाने वाले के अर्थ की पुष्टि रोमियों 10:17 में पौलुस द्वारा की गई है: "सो विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है।" विश्वास अतीत की उन घटनाओं पर आधारित है जिनका हमें बहुत कम पता चलता या चलता ही नहीं यदि उनका वर्णन परमेश्वर के वचन में सम्भालकर न रखा गया होता। पवित्र शास्त्र हमें विश्वास दिलाने के लिए ऐसा प्रमाण देता है जिससे मसीही व्यक्ति पक्के भरोसे के साथ गड़बड़ भरे संसार के सामने ठोस विश्वास के साथ संसार का सामना कर सकता है। 11:1 में NIV में कहा गया है, "अब विश्वास उन बातों का यकीन है जिनकी हम उम्मीद रखते हैं और जिन्हें हम देखते नहीं हैं।" विश्वास यह भरोसा है कि "हम विजयी होंगे।" विश्वास यह आश्वासन है कि "[परमेश्वर] उनकी आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा" (प्रकाशितवाक्य 21:4)। बाइबल के अनुसार विश्वास यह पक्का यकीन है कि यदि हम परमेश्वर पर यकीन करते हैं तो परमेश्वर सब बातों से हमारे लिए भलाई करवाता है (रोमियों 8:28)।

विश्वास हमारे लिए अद्‌भुत काम करता है। यदि हमें विश्वास है, तो हमें भरोसा है। यदि हमें विश्वास है तो हमें स्वर्ग की समझ है। यदि हमें विश्वास है तो हम पौलुस के साथ कह सकते हैं, "मैं उसे जिस पर मैंने विश्वास किया है, जानता हूं; और मुझे निश्चय है कि वह मेरी धरोहर उस दिन तक रखवाली कर सकता है" (2 तीमुथियुस 1:12)। विश्वास में समर्पण शामिल है। विश्वास में समर्पण होने के कारण इब्रानियों 11 में वर्णित हर विश्वास ने अपने विश्वास के लिए कुछ न कुछ किया। उसी समर्पण के कारण, "परमेश्वर उनका परमेश्वर कहलाने में उनसे नहीं लजाता" (आयत 16)। उसी समर्पण के कारण, उसे जिसे विश्वास है "मसीही" कहा जा सकता है, जिसका अर्थ है कि यह वह व्यक्ति है जो "मसीह का साथी" या "छोटा मसीह" है।[93]

किसी को उसका जिसे वह देख न सकता हो यकीन कैसे हो सकता है? "देखने से विश्वास आता है" अभिव्यक्ति इब्रानियों की पुस्तक का विचार नहीं। इसके बजाय यह "विश्वास करना देखना है।" हम उसमें विश्वास करते हैं जिसे हमने देखा नहीं और विश्वास के कारण उसे उत्सुक्ता से देखने की उम्मीद करते हैं। परन्तु बाइबल का विश्वास दी हुई सच्चाइयों पर इतना पक्का है कि व्यक्ति उन्हें पहले से "देखता" है। मूसा "अनदेखे" को देख पाया था (आयत 27)। अब्राहम "नगर की बाट जोहता था" (आयत 10) क्योंकि उसे विश्वास था कि वह है। वह इसे "विश्वास की आंख" से "देख" सकता था। परमेश्वर ने उसके साथ बात की थी, इसलिए उसे पता होना आवश्यक था कि परमेश्वर कहीं है; वह परमेश्वर के उस नगर में रहने की बात पर विचार कर पाया जिसे हम "स्वर्ग" कहते हैं। बेशक उसे विश्वास उस प्रमाण से हुआ था जो उसे दिया गया था। मैं कभी टोकियो नहीं गया हूं, पर मेरा विश्वास है कि यह नगर है। समाचारों में आता है, और मैंने उन लोगों से बात की है जिन्होंने इसे देखा है। मेरा रिश्ते का भाई कई साल से जापान में मिशनरी रहा है। जापान के बारे में कही गई उसकी बातों पर मैं यकीन करता हूं क्योंकि मुझे उसकी ईमानदारी का भरोसा है। जो व्यक्ति गवाहों की विश्वसनीयता को मान लेता है वह उसका जो उसे बताया गया विश्वासी है और उनमें वैसे ही भरोसा कर सकता

है। हमें उन में जिन्होंने अपने प्राण दे दिए हैं भरोसेयोग्य गवाह मिले हैं, जिनका उस गवाही के कारण जो उस सच्चाई के लिए जो उन्होंने देखी थी गवाही देने का कोई सांसारिक उद्देश्य नहीं था (1 यूहन्ना 1:1-3)।

विश्वास वह नहीं है जो "अपने उद्धार के लिए मेरी भावना है" बल्कि बाइबल का वह विश्वास है जो उसका जिसकी प्रतिज्ञा हमें दी गई है, वास्तविक सार है। इब्रानियों की पुस्तक में विश्वास की धारणा में वह कार्यवाही है जो परमेश्वर हम से चाहता है। "परमेश्वर के काम" जिसका अर्थ वह काम है जो परमेश्वर लोगों से करवाना चाहता है, के सम्बन्ध में पूछे जाने पर यीशु ने यह उत्तर दिया: "परमेश्वर का कार्य्य यह है, कि तुम उस पर जिसे उस ने भेजा है, विश्वास करो" (यूहन्ना 6:29)। विश्वास वह काम नहीं है जो चमतकारी ढंग से हमारे मनों में ईश्वरीय दान के रूप में कुछ डालता हो। इसके बजाय यह उस आधार के रूप में दिए जाने वाले प्रमाण से खुले हृदय में होता है। आज जब बहुत से सेवकों से पूछा जाता है, "मैं विश्वास कैसे करूं?" तो उनका उत्तर होता है, "आप इसे मांगो।" यीशु ने यह नहीं सिखाया था। उसने तो ऐसा कहा था कि "विश्वास वह कार्य है जो परमेश्वर आप से करवाना चाहता है। उद्धार दिलाने वाले विश्वास को पाने के लिए परमेश्वर आप से कुछ करवाना चाहता है। यह विश्वास पाने के लिए आवश्यक काम को करना है।" (पढ़ें यूहन्ना 6:28, 29.)

परीक्षाओं का सामना करने और बाद में यह देखने पर कि परमेश्वर ने हमारी भलाई के लिए उन्हें इस्तेमाल कैसे किया है, हमारा विश्वास मज़बूत हो जाता है। परन्तु हमारे विश्वास का आधार परमेश्वर के वचन में भरोसा है। उन्हें विश्वास दिलाने के लिए अलौकिक घटना की राह देखने वाले लोग राह ही देखते रहेंगे।

विश्वास ही से हम जान जाते हैं (11:3)

इब्रानियों 2:8 में "पर हम अब तक नहीं देखते" वाक्यांश है परन्तु 11:3 में हम उसे "देखते" या समझते हैं जो कुछ परमेश्वर ने इस संसार में किया है। जो कुछ हम शारीरिक आंख से देखते हैं वह दुख और परेशानी से भरा संसार है। परन्तु "विश्वास की आंख" से हम उससे आगे देख सकते हैं जो दिखाई देता है, जहां परमेश्वर उन का ध्यान रखता है जो उसके हैं।

बुराई का काम चाहे बढ़ जाता है,
पर मज़बूत केवल सच्चाई ही होती है,
और आज चाहे वह अकेली हुई घूमती फिरती है,
मैं उसके गिर्द उसे हर बुराई से बचाने के लिए
सुन्दर, लम्बे स्वर्गदूतों की टुकड़ियों का पहरा देखता हूं।

.....

सच्चाई हमेशा ही फांसी के तख़्ते पर रहती है,
बुराई हमेशा ही राज करती है,
पर फांसी का वह तख़्ता भविष्य का ओर झुक जाता है,

और, धुंधली सी गहराई के पीछे
उसके अपनों पर नज़र रखते हुए,
परछाई के पीछे परमेश्वर खड़ा है।[94]

मसीही लोगों को मालूम है कि ऐसा ही है!

बाइबल यह कैसे साबित करती है कि परमेश्वर है? (11:6)

बाइबल यह साबित करने का कोई योजनाबद्ध प्रयास नहीं करती कि परमेश्वर है। इन आयतों में मिलने वाली परमेश्वर की गतिविधि के सब दावों में उसके अस्तित्व पर संदेह करने वाले को यकीन दिलाने के लिए कोई तर्क नहीं दिया गया। वचन केवल इतना कहता है कि कोई "मूर्ख" है यदि वह इस बात का इनकार करे कि परमेश्वर है (भजन संहिता 14:1)। परमेश्वर अन्त में यह उन्हीं पर छोड़ देता है जो ढिठाई से ज़िद करते हुए उसका इनकार करते हैं (रोमियों 1:18-24)। बाइबल परमेश्वर के बारे में किसी अनिश्चित्ता के साथ आरम्भ नहीं हुई बल्कि इस निश्चित्ता के साथ आरम्भ होती है कि वह है और सब कुछ उसी का बनाया हुआ है (उत्पत्ति 1:1-3; यूहन्ना 1:1-3)।

परमेश्वर की अवधारणा मन के दार्शनिक घुमावों के लिए नहीं बनाई गई है। वह संसार की बड़ी वास्तविकता है। हम उसके निकट आना तब तक आरम्भ नहीं कर सकते जब तक हम मानते नहीं कि वह है। जब किसी को विश्वास, मन फिराव, अंगीकार और बपतिस्मे के द्वारा मसीह को ग्रहण करने के लिए बुलाया जाता है (यूहन्ना 1:11, 12) और वह आ जाता है, तो वह अंधकार में नहीं बल्कि ज्योति में कदम रख रहा होता है। विश्वास अंधा नहीं है, न ही यह अज्ञानी मनों द्वारा स्वीकार की गई मनोवैज्ञानिक भूल है। परमेश्वर के अस्तित्व का इनकार करना "उतना ही अनैतिक है जितना यह तर्कहीन है।"[95]

हाबिल का विश्वास बनाम कैन के विश्वास की कमी (11:4)

1966 में न्यू यॉर्क विश्व मेले में मैंने मसीह की कलीसियाओं की एक प्रदर्शनी में काम किया। एक कैनेडियन व्यक्ति आकर पुराने नियम और उसके आश्चर्यकर्मों की चर्चा में शामिल हो गया। उसने योना और बड़ी मछली की कहानी को नकार दिया। मैंने पूछा कि वह यीशु में और उसकी शिक्षा में विश्वास रखता है तो उसने उत्तर दिया कि हां। मैंने उसे ध्यान दिलाया कि यीशु योना की कहानी में विश्वास रखता था और उसने अपने दफ़नाए जाने और जी उठने के नमूने के रूप में उसका इस्तेमाल किया (मत्ती 12:38-40)। नया नियम पुराने नियम को इसके ऐतिहासिक और नबियों के कथनों को पूरी तरह से मानते हुए लगातार दिखाता है। पुराने नियम के बिना नये नियम में विश्वास नहीं किया जा सकता और न ही नये नियम के बिना वास्तव में पुराने नियम में विश्वास किया जा सकता है। हाबिल को दोनों ही नियमों में ऐतिहासिक व्यक्ति के रूप में दिखाया गया है (मत्ती 23:35; लूका 11:51; इब्रानियों 12:24)। बाइबल की इन बातों को हम यह अर्थ निकालने के लिए स्वीकार करते हैं कि वह ऐसा व्यक्ति था जो वास्तविक था और भाई द्वारा मारा गया संसार का पहला व्यक्ति था। एक अर्थ में तब से लेकर हर हत्या वही

पाप है जिसमें भाई या बहन की हत्या की जाती है।

हम नहीं जानते कि हाबिल की विश्वास से दी गई भेंट की परमेश्वर ने क्या गवाही दी पर उसने कैन को कुछ अलग ही कहा: ''यदि तू भला करे, तो क्या तेरी भेंट ग्रहण न की जाएगी? और यदि तू भला न करे, तो पाप द्वार पर छिपा रहता है; और उसकी ललसा तेरी ओर होती है, और तुच्छे उस पर प्रभुता करनी है'' (उत्पत्ति 4:7)। कैन परमेश्वर द्वारा अपने भाई को ग्रहण किए जाने से जलने लगा और प्रभु को यह मालूम था कि वह एक गम्भीर पाप करने के कगार पर है। उसने पाप को शेर के रूप को दिखाते हुए जो अपने शिकार को लपक लेने के लिए तैयार हो, चेतावनी दी कि ''पाप द्वार पर छिपा रहता है'' (उत्पत्ति 4:7)। अभी भी परमेश्वर ने संकेत दिया कि कैन अपनी पापूर्ण इच्छाओं पर काबू पा सकता है। यदि परमेश्वर में हमारा विश्वास सही हो तो हमारे अन्दर पाप पर काबू पाने की शक्ति होती है। ये शब्द मनुष्य के पाप में गिरने के बाद कहे गए, इसका अर्थ यह हुआ कि आदम की संतान में ''पूर्ण दुष्टता'' नहीं थी जिसने मनुष्य जाति को धर्म के मार्ग पर चलने के अयोग्य कर दिया हो। संसार और इसके पाप पर जय पाने वाला हमारा विश्वास है (1 यूहन्ना 5:4)। परमेश्वर ने हाबिल से कुछ ऐसा कहा होगा: ''जिस विश्वास से तू ने बलिदान किया है उससे तेरे मन की गुणवत्ता और संजीदगी पता चल गई है। तूने अच्छा किया है। विश्वास में बना रह!''

कैन को परमेश्वर का दण्ड करुणा से भरा था, चाहे उसे यह बहुत कठोर लगा। कैन और हाबिल के सबक से हमें यह समझ में आना चाहिए कि हमारे अपने तरीके से की गई आराधना अत्यधिक खतरनाक है। पुराने नियम के ये उदाहरण इस बात को दिखाते हैं कि आराधना में और जीवन में जो कुछ हम करते हैं, उस सब में सक्रिय विश्वास के लिए आज्ञापालन आवश्यक है (कुलुस्सियों 3:17)।

परमेश्वर ने गवाही दी (11:4)

11:4 वाली हाबिल की गवाही किसने दी? परमेश्वर ने! किस अदालत में या किस शपथ से यह गवाही या शपथ दी गई? परमेश्वर की कचहरी में हम बाइबल को बुलाते हैं। ''परमेश्वर ने बाइबल *पर* शपथ नहीं दी। उसने गवाही देते हुए बाइबल *में* गवाही दी: 'मैंने देखा कि इन लोगों ने क्या किया, और मैं गवाही देता हूं कि वे सच्चे और सही मार्ग पर थे।' ''[96]

हाबिल मरकर प्रचार करता है (11:4)

मृत्यु से हाबिल की कहानी का अन्त नहीं हुआ, न ही यह हमारे जीवनों और प्रभाव का अन्त है। इस आयत में ज़ोर उस बात पर है जो हाबिल आज भी कहता है! बहुत से लोगों को मृत्यु के बाद और भी अधिक सम्मान दिया जाता है। मैंने बहुत से लोगों को उनकी मृत्यु के बाद सम्मान देना सीखा है।

हमारे कर्म हमारे पीछे चलते हैं (प्रकाशितवाक्य 14:13) और अपने जीते जी हम ने जो कुछ बोला था शायद वे उन से अधिक ऊंचे स्वर में प्रचार करते हैं। हाबिल का लहू भूमि में से पुकारता है (उत्पत्ति 4:10)। यह भाषा चाहे अत्यधिक शायराना लग सकती है परन्तु यह

इस सच्चाई को दिखाती है कि अन्त में परमेश्वर धर्मियों का न्याय करेगा। हाबिल के लहू का बड़ा अर्थ है, परन्तु यीशु का लहू हाबिल के लहू से उत्तम बातें कहता है (इब्रानियों 12:24)। हाबिल को यीशु की *परछाई* के रूप में देखा जा सकता है। उसका लहू न्याय की पुकार करता है परन्तु यीशु का लहू करुणा, क्षमा और मानवीय बदला लेने के अंत की पुकार करता है (रोमियों 12:17–21)।

आदमी जो मरा नहीं (11:5)

हम यह मान सकते हैं कि हनोक धर्मी था क्योंकि "उसने परमेश्वर को प्रसन्न किया" (आयत 5)। पुराने नियम में बिना मरे केवल दो व्यक्ति ही थे: हनोक और एलिय्याह। मृत्यु के द्वार में से गुज़रे बिना अपने पिता से मिलना कितना आदर योग्य होगा! हम में से बहुत लोग मृत्यु से डरते हैं, परन्तु मृत्यु की तराई में से होते हुए गुज़रने के बावजूद हम परमेश्वर के साथ होना चाहते हैं। इन दो जनों को इतना सम्मान देकर स्वर्ग में हमारे पिता ने कितना अद्‌भुत प्रेम दिखाया!

यदि नूह वैसा न करता जैसा उससे कहा गया था तो? (11:7)

मान लीजिए कि नूह ने यह कहा होता, "हे प्रभु, तेरे साथ अपने निजी सम्बन्ध के कारण मुझे भरोसा है कि तू मुझे बचा लेगा, पर जहाज़ बनाने के लिए मैं इतनी देर तक काम नहीं कर सकता।" क्या वह अपने आप को और अपने परिवार को प्रलय से बचा लेता? बेशक नहीं। विश्वास के लिए स्वीकृत होने के लिए प्रेम में काम करना आवश्यक है (गलातियों 5:6)। व्यक्ति का आरम्भिक आज्ञापालन हो सकता है कि भय से प्रेरित हो, पर वह अधिक परिपक्व विश्वास में बढ़ सकता है। आने वाले न्याय के ज्ञान के द्वारा ही पौलुस को "प्रभु के भय" का पता चला, जिस कारण वह मनुष्यों को मनाता था (2 कुरिन्थियों 5:10, 11)। उसके कहने का अर्थ यही होगा कि फेलिक्स की तरह वह अपने सुनने वालों में प्रभु का भय डालना चाहता था (प्रेरितों 24:25)।

नूह का विश्वास बपतिस्मे में हमारे आज्ञापालन का नमूना था (1 पतरस 3:20, 21)। विश्वास से उसने वैसी ही धार्मिकता पाई जैसी अब्राहम को मिली (उत्पत्ति 15:6)। नूह सचमुच में "विश्वास से रहा"; इससे भी बढ़कर उसे "धर्मी" कहा गया। वास्तव में उसे प्रशंसा की सबसे बड़ी तिहरी प्रति मिली। उत्पत्ति 6:9 बताता है कि "नूह धर्मी और अपने समय के लोगों में खरा था, और नूह परमेश्वर ही के साथ साथ चलता रहा।"

क्या नूह विश्वास के द्वारा उद्धार को कमा रहा था? (11:7)

"समुद्र से दूर बड़े जहाज को बनाना कितनी मूर्खता की बात है!" नूह समाज का हंसी का पात्र रहा होगा। विश्वासी व्यक्ति के साथ समाज द्वारा आम तौर पर ऐसे ही व्यवहार किया जाता है।

नूह उन लोगों का उदाहरण है जो इस बात की समझ रखते थे कि परमेश्वर की ओर से मिला कोई वचन श्रेष्ठ अधिकार के साथ आता है। उसने न तो इसमें कुछ जोड़ने और न इसमें से घटाने का साहस किया। पवित्र शास्त्र नूह के आज्ञापालन पर विशेष ज़ोर देता है: "परमेश्वर की

इस आज्ञा के अनुसार नूह ने किया'' (उत्पत्ति 6:22)।

नूह ने जहाज को तीन सौ पांच हाथ लम्बा बनाने की हिम्मत नहीं की (देखें उत्पत्ति 6:15)। मौंटगोमरी, अलाबामा के निकट एक जेल में मैंने जहाज और प्रलय के कलात्मक विवरणों के साथ बाइबल की कुछ तस्वीरें दिखाईं। एक जगह पर मैंने लोगों से यह प्रश्न पूछा: ''यदि नूह केवल तीन सौ हाथ के बजाय तीन सौ पांच हाथ लम्बा बना देता तो क्या होता?'' एक जन बोल उठा, ''यह चट्टान की तरह डूब जाता!''

नूह ने जहाज बनाने में आज्ञा का पालन किया। उसने फट्टे के साथ फलूत का फट्टा नहीं जोड़ा। उसने बाहर की ओर केवल राल लगाने की हिम्मत नहीं की। परमेश्वर की हर आज्ञा को हू-ब-हू मानने में उसके विश्वास को दिखाया गया। यदि हम उससे कम करते हैं जो परमेश्वर ने अपने वचन में बताया है, तो वह स्वीकृत आज्ञापालन नहीं है। असली विश्वास वैसे ही आज्ञा मानता है जैसे आज्ञा दी गई थी।

क्या इस प्रकार आज्ञा मानने से नूह कर्मकाण्डी बन गया? क्या आपको लगता है कि हर तख्ता जहाज के ढांचे पर लगाते हुए वह सोचता होगा कि वह प्रलय से अपने उद्धार को *कमा रहा* है? जो लोग यह कि कुछ लोग यह सोचकर कि वह बपतिस्मे के द्वारा उद्धार को कमा रहे हैं दावा करते हैं कि लोगों को बपतिस्मे के कर्मकाण्ड के लिए मनाते हैं, अपने ऊपर दोष लगा रहे हैं। ध्यान से परमेश्वर की आज्ञा को मानने का अर्थ आवश्यक नहीं कि कर्मकाण्डी होना हो, जिसकी परिभाषा ''केवल नियम की खातिर किसी नियम को मानना'' के रूप में हो सकती है।

नूह के पास परमेश्वर के वचन का ही प्रमाण था कि प्रलय आ रही है, परन्तु उसके लिए इस पर विश्वास करने और वैसा ही करने के लिए जैसा परमेश्वर ने कहा था, इतना काफ़ी नहीं था। आपके लिए कितना काफी है? लगता है कि नूह अपने समाज तक नहीं पहुंच पाया क्योंकि उसने अपने परिवार के बाहर किसी को परिवर्तित नही किया, परन्तु वह शायद ही असफल हो। उसने उन्हें प्रचार करने का प्रयास किया (2 पतरस 2:5)। यदि हम परमेश्वर के वचन के साथ ईमानदार हैं तो हम असफल नहीं हैं, चाहे हमारे आस पास के लोग खोए हुए रहना ही चुनें। ''पुरुष और स्त्रियां न केवल उससे जो हम कहते हैं प्रभावित होते हैं बल्कि जो कुछ परमेश्वर हम से कहता है उसे मानने के हमारे ढंग से भी प्रभावित होते हैं।''[97] यदि जहाज की खिड़कियां बंद होने के बाद और बारिश तेज होने के बाद उन्हें मन फिराने का थोड़ा सा भी समय मिल जाता तो हम शेखी मार रहे होते, ''हमें नूह कितना बड़ा प्रचारक था!'' परन्तु मन फिराव के लिए परमेश्वर के समय का हमेशा अन्त होता है और जिसमें वह कहेगा, ''बस, अब और नहीं!'' अभी ''वह उद्धार का दिन है'' (2 कुरिन्थियों 6:2)।

दुख के इस संसार में से घूमना (11:8)

विश्वास की हर यात्रा एक तीर्थ यात्रा है। कुछ लोगों को लगता है कि ''नदी पार करने'' की तरह ''इब्रानी'' शब्द का अर्थ ''पार करना'' है। अब्राहम ने अज्ञात स्थानों में जाते हुए परमेश्वर में भरोसा रखा।[98] वह हमेशा आज्ञाकारी विश्वास आगे बढ़ता रहा (आयत 8)। अधिकतर विदेशी लोग अन्त में घर जाना चाहते हैं परन्तु पुरखे नहीं जाना चाहते थे। जंगल में इस्राएल का यही पाप था। इस्राएली लोग दासता के अपने देश को घर के रूप में देखने लगे और वापस जाना चाहते

थे, चाहे उन्हें वहां बाहरी लोग ही माना जाता था। अब्राहम, इसहाक और याकूब ने कभी ऐसा नहीं सोचा था (11:8, 15)।

अपने शेष जीवन में तम्बुओं में रहने की सम्भावना को ध्यान में रखते हुए अब्राहम और सारा के लिए घर छोड़ना कठिन रहा होगा। सारा के लिए एक नये देश और संस्कृति में जाने के लिए घर छोड़ना विशेषकर दिल दुखाने वाला होगा। एक खुशहाल घर दिलाने के लिए पत्नी के लिए आवश्यक है कि वह अपने पति के पीछे जहां भी वह जाए चलने को तैयार हो। यहां परमेश्वर की ओर सीधी बुलाहट थी; अब्राहम के पास उस बुलाहट को मानने के अलावा और कोई रास्ता नहीं था। कनान में अब्राहम पर परेशानियां आई और कब्र की भूमि के अलावा उसके पास कोई अपनी भूमि नहीं थी। उसकी संतान मुसाफ़िर ही थे जो मिस्र से निकलने के बाद चालीस वर्ष तक घूमते रहे।

मानवीय सोच के अनुसार अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करने के लिए परमेश्वर कई बार बहुत समय ले लेता है; परन्तु वह उन्हें पूरा अवश्य करता है। यह संसार हमारा घर नहीं है तो हम इसमें कहां रहते हैं इससे क्या फ़र्क पड़ता है? हम यहां विदेशी ही रहते हैं (फिलिप्पियों 3:20)। आयत 8 से सीखने वाली आवश्यक बात यह है कि इस सब के दौरान अब्राहम ने परमेश्वर पर भरोसा किया। हमें भी वैसा ही भरोसा रखना आवश्यक है। वह जानता था कि वह कनान से कहीं बेहतर दूर देश में एक नगर की बाट जो रहा है (आयतें 10, 16)।

उम्मीद रखें कि जहां भी हम हैं वहां बिना संदेह के, यह कहने के योग्य हों कि "मैं परमेश्वर में विश्वास करता हूं। मैं उसकी प्रतिज्ञाओं पर भरोसा करता हूं। मैं उसे कभी नहीं छोड़ूंगा बल्कि अन्त तक उसकी इच्छा को मानता रहूंगा।"

विश्वास करने से संदेह करना आसान है (11:11)

सारा के लिए पहली बार यहोवा के दूत से यह सुनकर हंस पड़ना स्वाभाविक था कि उसके एक बेटा होगा। परन्तु समय बीतने के साथ उसका संदेह विश्वास में बदल गया। इसहाक का जन्म लगभग पुनरुत्थान के जैसा ही था क्योंकि उसका जन्म उसकी कोख के मरे हुए में से हुआ था। हर मामले में, खासकर आत्मिक मामलों में यकीन करने के बजाय शक करना आसान होता है। जैसे जैसे सारा की कोख में बच्चा बड़ा हो रहा था, उसका शक खत्म हो रहा था।

शक करने वाला व्यक्ति विश्वास के लिए दिए गए सभी प्रमाणों की ओर ध्यान नहीं देता। अधिकतर लोग संदेह करने वालों की अधिकतर मात्रा के कारण स्थिर नहीं रह पाते जिस कारण कम से कम बाहरी रूप में वे भीड़ के साथ चलने का निर्णय लेते हैं।

"कम विरोध वाले मार्ग पर चलना बड़ी बड़ी नदियां और निर्धन लोग बना देता है।" इसी कारण नूह, अब्राहम, यूसुफ और मूसा का विश्वास पवित्र शास्त्र में और परमेश्वर के मन में अलग से दिखाई देता है। हमें साहसी पसंद चुनने, अपने मनों में सही और तंग मार्ग पर चलने का निर्णय लेने को तैयार होना आवश्यक है। भीड़ के लोग विनाश के चौड़े मार्ग पर चलते हैं, जबकि थोड़े लोग हैं जो उस तंग मार्ग पर चलते हैं जो जीवन की ओर ले जाता है (मत्ती 7:13, 14)।

परदेशी और बाहरी (11:13)

विदेशी होने का अर्थ आम तौर पर समाज से निकाले जाना होता है। मसीही लोगों के रूप में हमारे साथ यही होगा (देखें 1 पतरस 1:1; 2:11) और हमें संसार की शत्रुता का सामना करना पड़ेगा। इसकी उम्मीद रखें! इस विचार से घुल-मिल जाएं! क्यों? क्योंकि संसार के साथ, इसके घटियापन के साथ, परमेश्वर के श्राप, अशुद्धता और उसके नाम और उसकी इच्छा की निंदा के साथ हमारा कोई सम्बन्ध नहीं है। हमें संसार में से बुलाया गया है और इसी तथ्य को ध्यान में रखकर हमें जीवन बिताना आवश्यक है (यूहन्ना 15:19; 17:14, 16)। प्राचीन पुरखे चलते रहे। शत्रुओं ने उनके कुंओं को भर दिया और उनका वास्तव में कभी कोई अपना घर नहीं था। अपने जन्म स्थान वाले देश में पराया होने का अहसास सब लोगों के लिए परेशानी भरा होगा। प्रतिज्ञा किए हुए देश में भी पुरखाओं ने अपने आपको "परदेशी" या "मुसाफिर" माना (उत्पत्ति 23:4; 28:4; 47:9)। हमें अपने आपको इस प्रकार से कितना मानना चाहिए और बताना चाहिए! यह हमें "स्वर्ग को जाने वाले" बनने पर अधिक ज़ोर देने में सहायता करेगा।

बिना देश वाला व्यक्ति होना अधिकतर लोगों के लिए एक त्रासदी लगता है। किसी देश के नागरिक हुए बिना पासपोर्ट, वीजा तथा यात्रा के अन्य दस्तावेज, प्रवास, और अप्रवास असम्भव है।

मसीही व्यक्ति के साथ कुछ ऐसा भी होता है। आरम्भिक पवित्र लोगों के व्यवहार का वर्णन दूसरी या तीसरी सदी के दस्तावेज में बाखूबी किया गया है: "वे अपने देशों में रहते हैं, पर वे परदेशी हैं; नागरिकों के रूप में उन्हें सब अधिकार मिले हैं, और परदेशियों की तरह वह हर कठिनाई का सामना करते हैं। उनके लिए हर पराया देश अपना वतन है, और हर देश पराया देश है।"[99]

यह विरोधावासी बात हर पवित्र जन की आत्मा होनी चाहिए। पौलुस एक रोमी नागरिक के रूप में अपने अधिकारों के बचाव के लिए कैसर के सामने अपील कर सकता था (प्रेरितों 25:10), पर स्पष्टतया उसने सीनेट के किसी मत को प्रभावित करने के लिए कुछ नहीं किया। अपने मनपरिवर्तन से पहले इस नये "सम्प्रदाय" को मिटाने के लिए एक प्रकार से राजनैतिक का प्रयास सक्रिय था। उसके विचार से मसीही लोगों का "पंथ" कानून व्यवस्था के लिए इतना खतरनाक था कि उसने जहां भी यहूदी संत पाए जाएं वहां मसीही लोगों को पकड़ने का कानूनी अधिकार पा लिया था। उसने उन्हें कठोरता से दण्ड दिया, कई तो मर भी गए (प्रेरितों 22:4; 26:10)।

ये सब विश्वास ही की दशा में मरे (11:13)

प्रभु में मरने वाले लोग सबसे धन्य हैं (प्रकाशितवाक्य 14:13)। मृत्यु की एक अन्तिम स्थिति है जो हम में से अधिकतर लोगों के लिए भयंकर है; हम अपने प्रियजनों को, शायद सदा के लिए छोड़ देने से डरते हैं और हमें डर रहता है कि मृत्यु के बाद क्या होगा। हम जानते हैं कि हमारी शारीरिक देहें, जिन से हम जुड़े हुए हैं, नष्ट हो जाएंगी; और हम जानते हैं कि बाइबल बताती है कि हम आत्मिक देहों में जीवित रहेंगे। हमें सचमुचम में विजयी बनाने के लिए हमारा विश्वास मृत्यु पर विजय में जय पाता है। "विश्वास जय है!" यह हमारे लिए संसार पर विजय

पाता है (1 यूहन्ना 5:4)। ''जय'' शब्द *nikos* में से निकला है जिससे ''Nike'' नामक कम्पनी का नाम लिया गया है। जीवन की परीक्षाओं पर विश्वास से जय पाई जाती है। मृत्यु में अन्त में हम वह देखेंगे जो सबसे अद्‌भुत है; फिर यह चीज़ें उससे भी स्पष्ट हो जाएंगी विश्वास ने उन्हें हमारे लिए बनाया है।

घर जाने की लालसा (11:13-16)

लगभग हर कोई घूम घूमकर अन्त में थक जाता है और घर जाना चाहता है जहां वह अपने जीवन के शेष दिन बिता सके। हम सब को ''स्वदेश'' की चाह करनी चाहिए। बहुत से लोग जो काम या सफलता की तलाश में बड़े नगरों में चले जाते हैं, अन्त में सेवानिवृत होकर अपने अपने नगर या देश को लौट जाते हैं। यदि पुरखाओं ने सांसारिक धन की ही तलाश की होती तो वे ऊर देश को या मिस्र देश को लौट जाते, जैसे अब्राहम ने थोड़ी देर के लिए किया। परन्तु वे जानते थे कि परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं उसकी शर्तों को मानने पर टिके हैं, जिस कारण उनका वापस जाने का कोई इरादा नहीं था।

कितनी बार हम अपने बचपन के उन अच्छे दिनों की बात करते हुए घर लौटना चाहते हैं! बेशक हम कभी लौट नहीं सकते। एक बार छोड़ दिया तो यह पहले जैसा नहीं रहता। पुरखे अपने सांसारिक घरों पर विशेषकर उस देश पर जिसे वह छोड़ आए थे, बहुत कम ध्यान देते थे (आयत 15)। उनका और हमारा घर स्वर्ग में हमारी राह देख रहा है। स्वर्ग को अपना लक्ष्य बना लेने वाले लोग ''इतने स्वर्गीय सोच वाले'' नहीं हैं ''कि वे पृथ्वी के किसी काम के न हों''; बल्कि वे ऐसे लोग हैं जिनसे पृथ्वी पर अधिकतर भलाई ही करने की उम्मीद होती है। वे किसी भी समाज का सरमाया हैं, क्योंकि उनकी प्राथमिकताएं बिल्कुल सही हैं। परमेश्वर पुरखाओं पर गर्व था और उनका परमेश्वर कहलाने में उसे कोई शर्म नहीं थी (निर्गमन 3:6)। क्या वह आपका परमेश्वर है? क्या उसे आप से किसी प्रकार की कोई शर्मिंदगी है?

क्या इस जीवन की संतुष्टि हमें अपने स्वर्गीय घर को देखने के लिए कम उत्सुक बना देती है? मैं अब अपने घर में पूरा आनन्द लेता हूं, परन्तु मेरा असली आनन्द मेरे परिवार यानी मेरी पत्नी, बच्चों और नाति पोतों से मिलता है। उनके बिना घर घर नहीं होगा। जैसे जैसे उम्र बढ़ती है मैं और स्वर्ग की ओर ताकता हूं। बूढ़े और कमज़ोर होने के साथ हमें और भी अच्छी तरह से अहसास होता है कि स्वर्ग कितना अद्‌भुत होगा।

स्वर्ग की इच्छा कैसे बढ़ती है? यह थोड़ी देर की चीज़ों के बजाय स्वर्गीय महत्व वाली बड़ी चीज़ों को देखने के हमारे विश्वास के कारण है। पुरखाओं की तरह हम ''एक उत्तम देश की इच्छा'' करते हैं, जो सदा तक रहेगा। विश्वास से हम जानते हैं कि स्वर्ग देखी हुई वस्तुओं से श्रेष्ठ है, जो हमें उस पार वाले अपने घर की इच्छा करने को विवश करता है।

इस जीवन में न तो अब्राहम को और न किसी और पुरखे को परमेश्वर की सभी प्रतिज्ञाएं भरपूरी से प्राप्त हुईं। वे ''विश्वास ही की दशा में मरे और उन्होंने प्रतिज्ञा की हुई वस्तुएं नहीं पाईं, पर उन्हें दूर से देखकर आनन्दित हुए और मान लिया ...'' (आयत 13)।

हम से नहीं लजाता (11:16)

इस्राएलियों को इस बात पर गर्व था कि परमेश्वर उन्हें अपने लोग कहने से नहीं शर्माता था और उसे ''उनका परमेश्वर'' कहना सही हो सकता था। परन्तु सदियों बाद उन्हें उसके पुत्र में विश्वास लाने से इनकार के लिए शर्म आनी चाहिए थी। क्या आपके मित्र और सहकर्मी सरेआम आपको परमेश्वर को मानने के लिए लज्जित करते हैं? यह सोचना कि हमारा प्रभु हमारे साथ संगति करने का इच्छुक है हमारे मनों को रोमांचित कर देने वाला होना चाहिए। हमें भी अपने आपको उसके साथ जोड़ने को तैयार होना आवश्यक है। जहां भी और जिससे भी आप बात कर सकें उसकी बात करें। मसीह के लिए अपने जोश को ठण्डा करने के लिए बहिष्कार या आलोचना के डर को न आगे आने दें।

अब्राहम की परीक्षा और परमेश्वर का स्वभाव (11:17-19)

क्या यह सही लगता है कि परमेश्वर प्रतिज्ञा की संतान की हत्या चाहता हो? हमारे लिए, मानवीय समझ और तर्क के साथ, ऐसा नहीं है। इमानुएल कैंट ने कहा है कि परमेश्वर अब्राहम को इसहाक की हत्या करने की आज्ञा नहीं दे सकता था क्योंकि इससे नैतिक नियम का उलंघन हो जाता।[100] अधर्मी और नास्तिक लोगों को उन विरोधाभासों को ढूंढ़ना अच्छा लगता है जो परमेश्वर के स्वभाव के उनके पूर्वनिर्धारित ज्ञान को छोड़ और कहीं नहीं हैं।

यह भेंट मनुष्य के विश्वास की सबसे बड़ी परख थी जिसे आने वाली सब पीड़ियों को नमूने के रूप में दिया गया। ''विश्वासियों के पिता'' को अपने विश्वास की सबसे बड़ी सम्भावित परीक्षा का सामना था। इस मामले में अब्राहम के लिए परमेश्वर के न्याय को चुनौती देना सोच से बाहर था और हमारे लिए भी ऐसा ही होना चाहिए। केवल प्रभु ही जानता है कि और पक्के विश्वास को बढ़ाने के लिए हमारे हृदयों को योग्य बनाने के लिए क्या बेहतर है। इस परीक्षा का सामना करने से अब्राहम का विश्वास डोला नहीं बल्कि भविष्य की सब परीक्षाओं के लिए मज़बूत हो गया। उसका परीक्षा पास कर लेना हमें दिया गया है जिससे ''दृढ़ता से हमारा ढाढ़स बंध जाए कि उस आशा को जो हमारे सामने रखी हुई है प्राप्त करें'' (6:18)। यदि आज्ञा न मानने के लिए अब्राहम ने परीक्षा को सह लिया तो हम क्यों नहीं सह सकते? परमेश्वर के लिए कुछ भी असम्भव नहीं है।

कई बार मनुष्य के कष्ट अन्तहीन और व्यर्थ लगते हैं। परन्तु विश्वास की दृष्टि से हम देख सकते हैं कि यह किस प्रकार लोगों को विनम्रतापूर्वक आज्ञा मानने के लिए ले जा सकता है (5:8, 9)। यह हमारे विश्वास को और भी बढ़ाता है एक उत्तम स्थिति को प्राप्त करें (2 कुरिन्थियों 4:16-18)। हम वैसे ही कष्ट सह सकते हैं जैसे आग कच्ची धातु को शुद्ध करके, उसे पहले से अधिक शुद्ध, खालिस, मज़बूत धातु बनाती है। इसी प्रकार से हमें प्रभु के काम आने के लिए योग्य बनाया जाता है। यीशु को हमारी सहायता करने के लिए और सिद्ध रूप से योग्य बनाने के लिए उसकी परीक्षा की गई और उसे परखा गया (इब्रानियों 2:18)।

एक अर्थ में इब्रानियों का लेखक कह रहा था, ''अपने पुरखाओं को देखो जिन्होंने इतना दुख उठाया; अब्राहम पर ध्यान करो जिसकी परीक्षा की गई।'' परमेश्वर के लिए उसे प्रतिज्ञा के अपने पुत्र को बलिदान देने के लिए कहने से बढ़कर विश्वास की परीक्षा नहीं हो सकती (उत्पत्ति 22:2)।

पिता का विश्वास पुत्र का विश्वास बन गया (11:20-22)

इसहाक बड़ा हो गया था और उसकी नज़र कमज़ोर थी, परन्तु उसने अपने पिता अब्राहम की पक्की दृष्टि और विश्वास को नहीं खोया, क्योंकि उसने भी अपने पुत्रों को आशीष दी। इसी प्रकार से अपने जीवन के अन्त के निकट पहुंच जाने पर याकूब ने एप्रैम और मनश्शै की आने वाली महानता की घोषणा की (उत्पत्ति 48:1-20)। यूसुफ विश्वास के द्वारा भविष्य में झांक सकता था। उसने इस्राएलियों के प्रतिज्ञा किए हुए देश के लिए मिस्र में से निकलने, अपनी स्वयं की मृत्यु, और अपनी हड्डियों के मिस्र में से लेजाकर कनान में दफ़नाए जलाने के ढंग को देख लिया था (आयत 22)।

हमें अपने और बच्चों के बच्चों के बच्चों को अपने इतिहास के बारे में, और उनकी विरासत के बारे में अधिक से अधिक बताना चाहिए। हमें उन्हें बताना चाहिए कि अपने विशेषाधिकारों से नीचे नहीं बल्कि उनके अनुसार जीवन बिताएं। उन्हें याद दिलाएं कि जीवन के सफ़र में परमेश्वर ने हमें किस प्रकार से आशीष दी है और किस प्रकार दुख की घड़ियां भी आम तौर पर आशिषों में बदल गई हैं।

पिताओं को चाहिए कि अपने बच्चों को वे कहानियों को सुनने को विवश करें जिन से हमारे जीवनों में परमेश्वर के प्रावधान या उपाय का पता चलता है। यदि हम उनके लिए ऐसा करते हैं तो उन्हें भविष्य के लिए बड़ा साहस और विश्वास मिलेगा।

परीक्षाओं के बीच विश्वास (11:23-27)

अपने जन्म के समय से ही खतरे में होने के बावजूद मूसा अपने माता पिता के विश्वास के कारण बचा रहा (आयत 23)। अम्राम और योकेबेद ने निर्भय और विश्वासी भाइयों शिपरा और पुआ को बुलाकर अपने विश्वास को दिखाया (निर्गमन 1:15-22)। वे अपने बच्चे को जन्म दिलाने के लिए किसी और पर भरोसा नहीं कर सकते थे।

मूसा अपने कानों में अपनी मां/आया की बातें सुन सुनकर बड़ा हुआ कि "तू एक इब्रानी है, जो परमेश्वर के चुने हुए लोग हैं, न कि मिस्री।" योकेबेद का विश्वास उसका अपना विश्वास बन गया। यह पता चलने पर कि उसके पता-पिता ने उसके लिए अपने प्राण दांव पर लगा दिए है उसका विश्वास कैसे न बढ़ता? हमारे बच्चों को याद दिलाया जाना आवश्यक है कि वर्षों से हम ने उनको खिलाया और उनकी देखभाल की, शायद उनके बीमार होने के समय रात रात भर जागकर भी। ऐसी कहानियां बताकर हम अपने बच्चों को हमारे लिए उनके महत्व को और संसार में उनके बड़े महत्व को दिखा सकते हैं।

मुझे थोड़ा-थोड़ा याद आता है कि मेरी मां मुझे *हर्लबट'स स्टोरी ऑफ़ द बाइबल* में से पढ़कर सुनाया करती थी। जहां तक मुझे पता है आज मेरे विश्वास का कारण किसी भी और बात से बढ़कर वे कहानियां हैं। हे माताओ, आपका विश्वास, प्रेम और देखभाल पीढ़ियों तक चल सकते हैं यदि आपके बच्चे इस व्यवहार को आप में देखें।

एक व्यस्क के रूप में मूसा हर खतरनाक फैसले में अधिकारियों के विरुद्ध गया, क्योंकि उसने सर्वोच्च अधिकार को मान लिया था। उसने देहाती लोगों के लिए राज्यधिकार को त्यागना चुना, महल के सुख-विलास के बजाय दुर्व्यवहार किए जाने को अपनाया, खानाबदोश होने की

निर्धनता के लिए गज़ब के खज़ानों को छोड़ दिया और यहां तक कि अपने लोगों और परमेश्वर के लिए ''मसीह की निंदा'' को स्वीकार किया। क्या हम ''अनदेखे को मानो देखते हुए'' सह लेते हैं। क्या हम अपनी पसन्द समय के आधार पर बनाते हैं या अतन्तकाल के आधार पर? क्या हम राजनैतिक रूप में आवश्यक बातों को चुनते हैं या उस मार्ग को जिसे हम जानते हैं कि परमेश्वर का मार्ग है? हम सही पसन्द चुन सकते हैं यदि हम ''प्रतिफल की ओर देखें'' और आने वाले मसीहा के साथ होने की उम्मीद रखें।

परमेश्वर के लिए अपने गहरे सम्मान के कारण मूसा ने अपने डर पर काबू पा लिया। विश्वास केवल शारीरिक अस्वस्थता या कठिनाई की ओर नहीं देख रहा। यह इस बात का दिखावा नहीं करता कि संसार में कोई बुराई नहीं है यानी कोई फिरौन नहीं है, कोई शैतान नहीं है। बल्कि यह वास्तविकता मान लेता है और उन भली वस्तुओं की खोज में रहता है जो कल्पना से लगभग बाहर है। यह प्रार्थना में स्वर्ग के कमरों में प्रवेश करने के विशेषाधिकार को देखकर उसके निकट आता है जो करुणामय और दयालु है, जो हमारी हर आवश्यकता को समझता है और अब भी सहायता करने की पेशकश करता है (इब्रानियों 4:15, 16)। ''उस अनदेखे को स्वर्ग में देखने'' से बढ़कर महिमा वाली बात नहीं हो सकती।

पाप के सुख विलास और विवेकपूर्ण पसन्दें (11:25, 26)

बेशक पाप में आनन्द तो है। जो व्यक्ति यह कहता है कि इसमें आनन्द नहीं है वह या तो झूठा है या नासमझ। परन्तु पाप का सुख छल है क्योंकि पहले यह मनभावना लगता है परन्तु अन्त में बुरी तरह से निराश करने वाला होता है। राजा दाऊद की कहानी ज़बर्दस्त उदाहरण है कि पाप किस प्रकार से दोष के बोझ को बढ़ा सकता है। राजा की नई पत्नी बतशेबा अन्त में यह सुनिश्चित करने के लिए कि उसके पुत्र को गद्दी मिल जाए, चाल चलने वाली बन गई। यह पक्का पता नहीं है कि वह और दाऊद कभी इकट्ठे खुशहाल रहे हों, वे इसके हकदार भी नहीं थे। राजा के पापों की चर्चा पूरे इस्राएल में होती होगी।

बतशेबा के साथ अपने पाप के बाद दाऊद के शासन में सचमुच में गड़बड़ी बढ़ गई। दाऊद और बतशेबा के व्यभिचार से उत्पन्न हुआ बालक जन्म के थोड़ी देर बाद मर गया। दाऊद के एक पुत्र अमनोन ने अपनी बहन तामार की इज्जत पर हाथ डाला; फिर उस लड़की के सगे भाई अबशालोम ने अमनोन की हत्या करके बदला ले लिया। बाद में अबशालोम ने अपने पिता के विरुद्ध विद्रोह किया और दाऊद के आदेश के उलट मारा गया। जनगणना के लिए राजा के आदेश के कारण जिससे उसके सेनापति से उसे रोका था एक भयानक आपदा का कारण बना। जीवन में ऐसी कहानियों की भरमार है। लगता है कि पाप से बहुत सुख और आनन्द मिलेगा पर यह जिस का वचन देता है उसके विपरीत करता है। पाप से कभी संतुष्टि या शान्ति नहीं मिलती। केवल परमेश्वर से मिली क्षमा ही यह काम कर सकती है।

एक इस्राएली के रूप में रहने की मूसा की पसन्द, किसी भी तर्कसंगत और भौतिक मानक से, मूर्खता भरा निर्णय लगता है। उसके विश्वास की महानता इस बात में देखी जाती है कि उसने आत्मिक मामलों को सोने चांदी से कहीं अधिक मूल्यवान समझा। तम्बुओं में रहते हुए अब्राहम से उसे कहीं अधिक सहना पड़ा, यहां तक कि उसकी परीक्षाओं को ''मसीह की निंदा'' के साथ

मिलाया गया है (आयत 26)। जब आप बड़ी परेशानी और दुख में हों तो ध्यान दें कि प्रभु ने कैसे सहा था। ऐसी सोच से आपको उसके पदचिह्नों पर चलने में सहायता मिलेगी। अपनी पसन्द चुनने और मिस्र से जाने में कम से कम थोड़ी देर के लिए मिस्र के राजाओं ने मूसा का कितना मज़ाक उड़ाया होगा! निर्भय विश्वास रखो! आप भी "फल" की उम्मीद कर सकते हैं (आयत 26)।

छिपा हुआ (11:27)

इब्रानियों के लेखक के लिए इस्तेमाल करने के लिए विजयी विश्वास की बहुत सी कहानियां थीं, जिस कारण उसने वह सब कहानियां नहीं बताईं। इसके बजाय उसने कुछ कहानियों को चुनना पसन्द किया। एक विवरण जो इब्रानियों की पुस्तक में नहीं दिया गया वह जलती हुई झाड़ी में मूसा की परमेश्वर से मुलाकात का है (निर्गमन 3)। जलती हुई झाड़ी को जिसमें आग तो थी पर वह लपटों से खत्म नहीं हो रही थी, देखने का मूसा को अनूठा अवसर मिला था। मूसा ने अनदेखे को देखा और उसे मालूम था कि वह बेचैनी के साथ सर्वशक्तिमान के निकट आया था। बेशक वह डर गया था, जैसे एक बार फिर सीनै पर होने वाली उथल पुथल से डरा था।

यह पता चलने पर कि वह इस्राएलियों को दासता से छुड़ाने के लिए चुना हुआ है, मूसा ने मिस्र को लौट जाने की परमेश्वर की बुलाहट को माना। वह कितना धीरज वाला होगा जिसने बड़ा आदर पाने के लिए चालीस वर्ष मिस्र में बिताए, फिर चालीस वर्ष गुमनामी में जंगल में! परमेश्वर अपने लोगों में धीरज भरे विश्वास की उम्मीद ही करता है। विश्वास से मूसा मिस्र से भाग गया था और विश्वास में ही उसने वापस आने की आज्ञा मानी थी। परमेश्वर ने मूसा को तब चुना जब उसे इसकी कोई उम्मीद नहीं होगी क्योंकि उसने आपने आप को इस काम के अयोग्य माना, जबकि चालीस वर्ष पहले उसे लगा होगा कि वह पूरी तरह से इसके योग्य है। परमेश्वर लोगों के द्वारा बड़े बड़े काम करवाने के लिए सचमुच में उनके जीवन के ऐसे पलों को चुनता है जब वे किसी काम के नहीं होते।

मेमने का लहू और बच्चों का बचाया जाना (11:28)

बच्चों को बचाने के साथ भला मेमने के लहू का क्या लेना देना हो सकता है? इसमें कोई तर्कसंगत, सीधा सम्बन्ध नहीं है। परन्तु मान लो येफूने नामक एक इब्रानी व्यक्ति के यह पता चलने के बाद कि मेमना काटकर उसका लहू अपने घर की चौखट पर लगाना है, अपने घर में आता है। वह अपनी पत्नी मारा से कहता है, "हमें सामने वाले दरवाजे पर लहू छिड़कना होगा।" वह उत्तर देती है, "मैं अपने घर में ऐसा गंद नहीं डालूंगी। हम अपने बच्चे को बचाने का कोई इससे कम गंदा तरीका ढूंढ़ लेंगे। इससे हमारा सारा घर खराब हो जाएगा। हमें और हमारे प्रियजनों को बचाने के लिए परमेश्वर के प्रेम पर भरोसा कर सकते हैं। आखिर उसने इससे बड़ी गलतियां करने वाले और लोगों को बचाया है, ऐसा करते हैं कि ऐसी गंदगी डाले बिना उसकी दया पर भरोसा करके उससे प्रेम करते रहते हैं।" परिणाम यह होता है कि वह आज्ञा नहीं मानते।

ऐसी स्थिति में क्या होगा? हम पक्का कह सकते हैं कि गोशेन में हर विश्वासी इब्रानी परिवार ने उस रात अपने घर के प्रवेश द्वार पर स्पष्ट दिखाई देने वाला लहू लगाया था।

जब इस्राएलियों को बचाया गया (11:29)

निर्गमन 14:30 कहता है, ''इस प्रकार यहोवा ने उस दिन इस्राएलियों को मिस्रियों के वश से छुड़ाया।'' कइयों को 1 कुरिन्थियों 10:1, 2 में पौलुस के तर्क से बचना अच्छा लगेगा। उसने कहा कि बादल और समुद्र में डुबकी लेने से इस्राएलियों ने ''मूसा का बपतिस्मा लिया,'' और इस प्रकार से उस समय बचाए गए थे। यह सोचने को प्राथमिकता देने वाले कि उद्धार पानी के बपतिस्मे से पहले आता है यह दावा करते हैं कि इस्राएली मिस्र में फसह के छिड़के हुए लहू के द्वारा ''बचाए'' गए थे। वे तर्क देते हैं कि हमारा उद्धार लहू के द्वारा होता है, और इस्राएली लोग पानी के समुद्र में बादल के नीचे अपनी डुबकी से पहले फसह के समय लहू तक पहुंचे थे जबकि अभी वह मिस्र में ही थे। इसके विपरीत पौलुस ने ''मसीह में'' हमारे बपतिस्मे को इस्राएल के लाल समुद्र के समय के ''बपतिस्मे'' से मिलाया।

इस्राएलियों का उद्धार पानी में से निकलने के द्वारा हुआ था और हमारा उद्धार भी ऐसे ही होता है (मरकुस 16:16; 1 पतरस 3:21)। फसह के लहू के द्वारा उद्धार पहलौठे की मृत्यु से उद्धार था न कि मिस्र की दासता से लोगों का उद्धार। वह दासता आज पाप में हमारी दासता को और स्पष्टता से बताती है; इसलिए लाल समुद्र में बपतिस्मा मसीह में हमारे बपतिस्मे जैसा है, जिसके द्वारा उद्धार मिलता है। 1 कुरिन्थियों 10:1, 2 में पौलुस द्वारा यही बात कही गई है (गलातियों 3:26, 27 भी देखें)। मूसा ने लिखा कि इस्राएल का ''उद्धार'' ''उस दिन'' था जिस दिन मिस्री डूबे थे (निर्गमन 14:30)।

ईश्वरीय अधिकार (11:29)

जहां सर्वशक्तिमान द्वारा आज्ञा न दी गई हो या शिक्षा में संकेत न हो, वहां विश्वास काम नहीं कर सकता। लाल समुद्र पर जब परमेश्वर ने कहा, ''आगे बढ़ो'' तो इस्राएली विश्वास के द्वारा उसमें से निकल सकते थे (निर्गमन 14:15, 16)। यदि परमेश्वर ने हमारे करने के लिए कोई गतिविधि प्रकट की हो, जैसे ''जाओ, सुसमाचार का प्रचार करो,'' परन्तु हमें यह न बताया हो कि कैसे जाएं, तो जाने का तरीका चुनना हमारे ऊपर है। कई इस्राएली चलकर गए, जबकि अन्य जानवरों की पीठ पर बैठकर या छोटे बच्चे अपनी माताओं की गोद में गए होंगे। जहां पर परमेश्वर ने किसी काम को करने का ढंग बता दिया हो वहां हमें किसी दूसरे ढंग को नहीं चुनना चाहिए। यह ईश्वरीय अधिकार का उल्लंघन होगा।

सूचक बातों, आज्ञाओं, उदाहरणों और अनुमान में कुछ कामों में नया नियम परमेश्वर का अधिकार हमें देता है। बाइबल की कोई भी आज्ञा आज के किसी भी जीवित व्यक्ति को सीधे तौर पर नहीं दी गई। हमें यह तय करने के लिए कि कोई आज्ञा आज हमारे ऊपर लागू होती है या नहीं, तर्कसंगत निष्कर्षों का इस्तेमाल करना आवश्यक है। उदाहरण के लिए नया नियम कहीं पर यह नहीं कहता कि ''मार्टल पेस, पापों की क्षमा के लिए तुझे मन फिराकर बपतिस्मा लेना होगा।'' परन्तु प्रेरितों 2:38 से मैं यह निष्कर्ष निकाल सकता हूं। पिन्तेकुस्त वाले दिन उपस्थित हर व्यक्ति को अपने पापों से मन फिराना आवश्यक था। मैंने पाप किया और मैं अपने पापपूर्ण कामों की क्षमा चाहता हूं। यह अनुमान लगाना तर्कसंगत है कि मुझे वही बातें करनी होंगी जो क्षमा पाने के लिए इन लोगों को करने की आज्ञा दी गई थी, चाहे मेरे पाप बिल्कुल वही न हों

जो उनके थे।

सामान्य अधिकार की परमेश्वर की आज्ञा के भीतर मसीही लोगों के पास सुविधा है। उदाहरण के लिए मसीही लोगों के लिए इकट्ठा होने की प्रेरिताई की आज्ञा थी (इब्रानियों 10:25), परन्तु ऐसे किसी इकट्ठा होने के बारे में स्पष्ट नहीं बताया गया और इस कारण यह हम पर छोड़ दिया जाता है। की जाने वाली पसन्द सुविधा है।

मिसरियों ने तर्क दिया हो सकता है, ''हम ने इस्राएलियों को समुद्र पार करते हुए देखा है। यदि इस्राएलियों को ऐसा करने का अधिकार परमेश्वर की ओर से दिया गया था तो निश्चय ही हम भी वैसे ही कर सकते हैं।'' परन्तु यह आज्ञा मिस्रियों के लिए नहीं थी। बादल के नीचे रहते हुए समुद्र में से जाने की आज्ञा केवल इस्राएलियों को थी। हम भी ऐसा ही मान सकते हैं, ''आराधना में गाने के साथ साज़ों का इस्तेमाल करने के लिए दाऊद को अधिकार दिया गया था, सो हम भी वही करने को अधिकृत हैं'' (2 इतिहास 29:25)। परन्तु दाऊद को परमेश्वर के द्वारा पुराने प्रबन्ध के अधीन अधिकार दिया गया था, और वे नियम आज हमारे ऊपर लागू नहीं होते हैं (रोमियों 7:1-6; 2 कुरिन्थियों 3:1-11; कुलुस्सियों 2:14)।

जब विश्वास काम करता है तो अनुग्रह प्रभावी हो जाता है (11:30, 31)

यहोशू को दिलेर किया गया था कि ''हियाव बान्धकर दृढ़ हो जा'' (यहोशू 1:9), परन्तु बहुत विरोध के सामने उसे अपने दिलेरी भरे जोश को बरकरार रखना था। यरदन नदी पाप करने में और यरीहो पर विजय पाने में उसने विश्वास से काम किया। यरीहो की शहरपनाह अजय लगती थी परन्तु विश्वास से उसके गिर्द चक्कर लगाने से वह ढेरी हो गई।

जब हमारा उद्धार हुआ था तो इसे विश्वास के द्वारा अनुग्रह के साथ पुरा पाया गया था (इफिसियों 2:8, 9)। परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह के प्रभावी होने के लिए जीवित विश्वास का होना आवश्यक है। अकेला विश्वास ''मुर्दा'' और ''बेकार'' है (याकूब 2:17, 20)।

हम कह सकते हैं, विश्वास के द्वारा उनके सात दिन तक इसके चक्र लगाने पर यरीहो की शहरपनाह गिर गई। इसी प्रकार से विश्वास के द्वारा अनुग्रह से रहाब धर्मी ठहराई गई, या बचाई गई, जब उसने इस्राएली जासूसों की रक्षा करके (उसे उपलब्ध प्रमाण के आधार पर) अपने विश्वास को दिखाया। याकूब 2:25 यह कहते हुए कि अपने विश्वास के साथ वह ''कर्मों से धर्मी'' ठहरी, यही बात बताता है। इब्रानियों की पुस्तक कभी नहीं बताती और न ही नये नियम की कोई और पुस्तक कि व्यक्ति केवल विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरता है। जिन्हें लगता है कि याकूब केवल अपने साथी की नज़र में धर्मी ठहरने वाले की बात कर रहा था न कि प्राण के उद्धार की, उन्होंने याकूब 2:14 पर विचार नहीं किया है: ''हे मेरे भाइयो, यदि कोई कहे कि मुझे विश्वास है कि वह कर्म न करता हो, तो उससे क्या लाभ? क्या ऐसा विश्वास कभी उसका उद्धार कर सकता है?'' याकूब उद्धार की बात कर रहा था न कि केवल दूसरों की नज़र में धर्मी ठहरने की।

नैतिकता की स्थिति?

सदियों से मसीही नैतिकता के अध्ययन में मिस्र में भाइयों द्वारा (निर्गमन 1:15-21) और

रहाब द्वारा बोले गए झूठ को शामिल किया जाता है। इन मामलों से सवाल उठते हैं क्योंकि दोनों को ही पवित्र शास्त्र द्वारा समर्थित माना जाता है। पुराने नियम में लगता है कि किसी बड़ी बुराई को रोकने के लिए झूठ बोलने को पाप नहीं माना गया। मिस्र में निर्दोष बालकों की हत्या को रोकने के लिए धाइयों ने झूठ बोला, और रहाब के झूठ से उन जासूसों की रक्षा हुई जो यरीहो में गए थे। दोनों से प्राण बचे थे।

यह बहस करना कि परमेश्वर नये नियम के अधीन अलग प्रकार से व्यवहार करता है ढीठपन हो सकता है। बेशक रहाब परमेश्वर के लोगों के साथ अपने आप को मिलाना चाहती थी और इस कार्य के द्वारा उसने अपने योग्य होने को दिखा दिया। वह अपने पापपूर्ण जीवन से घृणा करने लगी होगी और जासूसों को बचाने के समय अपने लोगों की बुराई के प्रति उसके मन में नफ़रत हो गई। उसने वैसे काम किया जैसे इस्राएल में रहने वाला कोई भी व्यक्ति करता; इस प्रकार दिल और जान से वह परमेश्वर के लोगों के साथ मिल गई।

नगरों का विनाश (11:31)

नास्तिक लोग पूरे पूरे नगर और लोगों को नष्ट करने की परमेश्वर की आज्ञा के सम्बन्ध में पुराने नियम की कहानियों की ''बुराई'' पर हमला करते हैं। वे विरोध करते हैं, ''एक धर्मी और प्रेमी परमेश्वर ऐसा कैसे कर सकता है? नये नियम के परमेश्वर से यह मेल नहीं खाता!'' ऐसे विनाश का कारण आज्ञा न मानना बताया गया है। मोटे तौर पर मनुष्य के बनाए धर्मों में पूरी तरह से लिप्त नगरों का बुराई वाले व्यवहार के साथ निपटने के लिए सत्यानाश के बजाय कोई और ढंग नहीं था। लोग पूरी तरह से परमेश्वर के साथ बगावत में उतरे हुए थे जहां से वे वापस नहीं आ सकते थे। (इब्रानियों 6:4-6 पर चर्चा देखें।) उनके पापों के लिए प्रतिज्ञा किए हुए देश में ऐसे नगरों का विनाश आवश्यक था।

परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी कि स्थानीय लोगों की दुष्टता के पूरा हो जाने पर वह देश इस्राएलियों को मिल जाना था (उत्पत्ति 15:16)। कनान देश में प्रवेश करने के समय इस्राएली लोग अमोरियों से अधिक धर्मी थे। यदि वे कनानियों को आज्ञानुसार देश में से खत्म कर देते तो उनके सामने काफिर मूर्तिपूजा का सवाल नहीं होना था। परमेश्वर के आदेश के अनुसार न कर पाने के कारण बाद में वे बेदीनी में चले गए। अपने आस पास के काफिरों की नकल करके इस्राएलियों ने सबसे पहले परमेश्वर के उन्हें देश देने के कारण को ही खत्म कर दिया।

बर्टन कॉफमैन ने इसका एक अच्छा उदाहरण दिया है। किसी समय अमेरिका में रेलगाड़ियां कोलोराडो की मॉफट सुरंग में से कॉन्टिनैंटल डिवाइड (महाद्वीपीय विभाजन) को पार करती थीं इन रेलगाड़ियों को पहाड़ चढ़ना और उतरना बड़ा कठिन होता था, जिस कारण हर मोड़ पर डिरेल यन्त्र लगाए गए थे। नीचे गांवों को नष्ट होने से बचाने के लिए ऑपरेटर चलती गाड़ी को पटरी से उतार सकता था। बेकाबू हो जाने वाली गाड़ी चाहे नष्ट हो जाए।[101] इसी प्रकार से परमेश्वर को मालूम होता है जब हम अनन्त विनाश की ओर जा रहे होते हैं। इस्राएल को प्रदूषण से बचाने के लिए उस ने कनान में रहने वाले गोत्रों के खात्मे की आज्ञा दी।

कइयों की सहायता आश्चर्यकर्मों के द्वारा हुई, जबकि अन्यों की उपाय के द्वारा (11:32-34)

11:33, 34 में दिए गए कुछ काम परमेश्वर के हस्तक्षेप के द्वारा किए जाने थे, जबकि अन्य उसके उपाय के द्वारा किया जाना प्रतीत होता है। उदाहरण के लिए, मिद्यानियों पर विजय पाने में रात को हमला करने, घड़ों को तोड़कर हाथ में मशालें लेकर शत्रु को उलझा देने में बड़ी सूझबूझ दिखाई। लगता नहीं है कि इसके लिए किसी भी प्राकृतिक शक्ति से बढ़कर परमेश्वर का सीधा हस्तक्षेप आवश्यक था। ऐसी बातें बिना आश्चर्यकर्मों के होती थीं। गिदोन के जीवन की अन्य घटनाएं बेशक आश्चर्यकर्म के द्वारा थीं (न्यायियों 6:36-40)। गिदोन को जब सूखी भूमि के विपरीत ऊन के ऊपर ओस, और फिर गीली भूमि और सूखी ऊन मिली तो उसे मालूम था कि ये आश्चर्यकर्म थे, न कि मात्र संयोग। मिद्यानी सिपाही को दिया गया प्रकाशन (न्यायियों 7:9-15) आश्चर्यकर्म होना था; भविष्य की घटनाओं की विशेष जानकारी केवल प्रकाशन के द्वारा दी जा सकती है जो कि अलौकिक ढंग से दिया जाता है। गिदोन का सिपाहियों को अपनी होने वाली पराजय की बातें करना सुनना आश्चर्यकर्म नहीं था, परन्तु यह एक उपयोगी उपाय देने वाली घटना थी। इसे आश्चर्यकर्म माना जा सकता था यदि उसने छावनी में गए बिना यह बातचीत सुनी होती (कम से कम, उस समय की उपलब्ध तकनीक के द्वारा)।

कई बार परमेश्वर अदृश्य तरीकों से काम करता था जो स्पष्ट रूप में आश्चर्यकर्म होते थे। स्त्रियों ने अपने मृतकों को जीवित पाया। यदि कोई कहता है कि उसने आश्चर्यकर्म देखे हैं तो उससे कहें कि कोई ऐसा व्यक्ति दिखाए जो कई दिन मुर्दा रहने के बाद जी उठा हो। ''विश्वास से चंगाई देने वाला'' कोई भी व्यक्ति तुरन्त किसी की खरोच भी ठीक नहीं कर सकता, और बेशक आज कोई किसी मुर्दे को जिला नहीं सकता है।

यदि कालांतर में परमेश्वर ने अपने लोगों को लाभ देने के लिए बिना आश्चर्यकर्मों के काम किए तो वह आज क्यों नहीं कर सकता? वह परदे के पीछे से इस ढंग से काम कर रहा हो सकता है जिसका हमें कोई ज्ञान न हो। हो सकता है कि हमें तब तक पता न चले कि उसने हमारे लिए क्या किया है जब तक हम न्याय के आगे उसकी उपस्थिति में न चलें जाएं। यह दावा करने में बड़ी सावधानी बरतें कि आपने आश्चर्यकर्म देखा है। परमेश्वर के चिह्न और चमत्कार हमारी सुविधा या आश्चर्य के लिए ही नहीं बल्कि ईश्वरीय संदेश या ईश्वरीय दूत की पुष्टि करने के लिए होते थे। आश्चर्यकर्म नये नियम में प्रकट किए गए संदेश का भाग थे। नया प्रकाशन और आश्चर्यकर्म साथ साथ चलते हैं।

इब्रानियों 11 में हम जिन लोगों के बारे में पढ़ते हैं उन्होंने अपने विश्वास के द्वारा बड़े बड़े काम किए। कई बार हम बिना मज़बूत विश्वास के बड़े बड़े काम करना चाहते हैं। बड़े विश्वास तक पहुंचने का सफर लम्बा हो सकता है, सो आपको इसे पाने क लिए अभी से आरम्भ कर देना चाहिए। दिन प्रति दिन विश्वास में चलना थोड़ा थोड़ा करके आप के विश्वास को बढ़ा देगा। एक दिन उठकर आप देखेंगे कि आपका विश्वास बहुत बढ़ गयाा है। आप परमेश्वर की उपस्थिति में उसके साथ होना चाहेंगे जिसके साथ आप वर्षों से चलते आ रहे हैं। भलाई के लिए आप का प्रभाव दूसरों पर बड़ा असर डालेगा।

संसार जिनके योग्य न था (11:35-40)

विश्वास कीड़ों और बीमारी से बचाए गए शीशे की पौधशाला में नहीं बल्कि वास्तविक कठिनाइयों का सामना करते हुए जीवन की जलती कुठाली में बढ़ता है। परीक्षाओं के बीच हमारा विश्वास वह भरोसा बन जाता है जो टिका रहता है। अपने विश्वास की खातिर दुख सहने वाले बहुत से लोग दण्ड से बचने के लिए ''अपने छुटकारे को मानने'' या मूसा की वाचा का इनकार करने के दोषी नहीं थे। पहली सदी ईस्वी के अन्त तक मसीही लोग भी अपने अंगीकार में *''Kurios Christos''* (''मसीह प्रभु है'') से एक शब्द में बदलाव करके *''Kurios Kaisar''* (''कैसर प्रभु है'') सम्भावित मृत्यु से छूट सकते थे। संसार हमेशा कहता है, ''हमारे साथ चलो और हम तुम्हें परेशान नहीं करेंगे। तुम अलग न रहो। हम तुम्हें सताएंगे नहीं यदि तुम वैसे ही रहो जैसे हम कहते हैं।''

हार मानकर संसार के साथ प्रसिद्ध होने की परीक्षा कितनी बड़ी है! मेरा मानन है कि जो लोग कलीसिया को किसी ऐसी चीज़ में बदलना चाहते हैं जिसके लिए इसे नहीं बनाया गया, उनके लिए यह बहुत बड़ी प्रेरणा है। इब्रानियों की पुस्तक के इन शब्दों से आरिम्भक संतों को मसीह के प्रति अपनी निष्ठा बनाए रखने के लिए बड़ा हियाव मिलता होगा। वे दृढ़ रहे और अपने उद्धारकर्त्ता के लिए उनका लहू बहाया गया। वे ''उत्तम पुनरुत्थान'' को पाने के लिए डटे रहे (आयत 35)। और पवित्र लोगों के सताए जाने और मारे जाने से कलीसिया में और जुड़ते जाते थे। बहुत से लोग सही काम करने के लिए खड़े होने को तैयार रहते हैं चाहे इसमें दुख ही मिलते हों। कई तो यीशु के संदेश को फैलाने के लिए अपने प्राण बलिदान को भी तैयार होते हैं।

जल्द ही बहुत से लोगों ने वैसे ही द:ख उठाना था (11:36-40)

दूसरी शताब्दी ई.पू. के आरम्भ में अंतियोकुस एपिफेनस के शासनकाल में सीरियाई लोगों द्वारा बहुत से यहूदियों का कत्ल किए जाने से यहूदीवाद को महिमा मिली। यहूदियों द्वारा आराधनालय की विशेष सभाओं मे इतिहास को इस काल के बराबर याद किया जाता है।

''क्लेश'' (*thlibō*; आयत 37) से बड़ा तनाव या सताव होता था। यहूदी इतिहास की घटनाओं के कारण आयतें 36 से 40 में प्रयुक्त शब्दों का चाहे महत्व है परन्तु कलीसिया के विरुद्ध ऐसा ही सताव हुआ था। पूर्व-मसीही संतों के स्वभाव को क्रूस पर यीशु की मृत्यु के बाद अपने विश्वास के कारण मरने वालों से अलग नहीं किया जा सकता। वे सब मिलकर एक ही संगति का भाग हैं, ''कि वे हमारे बिना सिद्धता को न पहुंचें'' (आयत 40)।

मसीह में आने वालों को कई बार उनके परिवारों द्वारा बताया जाता है कि वे ''मर गए'' हैं और इसके बाद उनके साथ कोई रिश्तेदार कोई सम्बन्ध नहीं रखेगा। उनके नाम परिवार के रिकॉर्ड से मिटा दिए जाते है और कभी उनका नाम नहीं लिया जाता। और भी हैं जो यह जानते हुए कि प्रियजनों द्वारा उनका बहिष्कार कर दिया जाएगा, मसीह में बपतिस्मा लेने की इच्छा रखते हुए और यह जानते हुए भी कि उन्हें बपतिस्मा लेना चाहिए ऐसा करने से इनकार कर देते हैं। क्या विश्वास को लोगों के सामने मानने के रूप में बपतिस्मा लेने की प्रभु की आज्ञा का एक कारण यह था?

परीक्षाएं हमारे मनों को शुद्ध कर देती हैं (''फटकती'' नहीं हैं, जैसे लूका 22:31-34 में

शैतान ने पतरस को फटकना चाहा था)। मजबूत होने के लिए हमारे विश्वास का परखा जाना आवश्यक है (याकूब 1:12–15)।

ऐसे कष्ट का प्रतिफल वह "उत्तम बात है" जो परमेश्वर ने हमारे लिए तैयार की है (आयत 40)। हम "जयवंतों से बढ़कर" है (रोमियों 8:37; NKJV)। "पहला पुनरुत्थान" की आशीष के कारण हम "अत्यधिक जयवंत" (NASB) हैं (प्रकाशितवाक्य 20:5, 6; देखें 2:10, 11)। प्रकाशितवाक्य में जिन लोगों के नाम दिए गए हैं वे मसीही बनकर और शहादत के बावजूद वफादार रहकर "पहला पुनरुत्थान" में भागी हुए थे। इस प्रकार से जय पाकर उन्हें "दूसरी मृत्यु" से हानि नहीं हो सकती थी (प्रकाशितवाक्य 21:8)। "जयवंत" होने का अर्थ परीक्षाओं और सतावों में डटे रहना है जिसका वर्णन आत्मिक "पुनरुत्थान" के रूप में किया गया है। "पहला पुनरुत्थान" मसीह की वापसी के समय देह के शारीरिक पुनरुत्थान से नहीं बल्कि व्यक्ति के स्वर्ग में पहुंचने से पहले मृत्यु पर जय से सम्बन्धित है।

वे अनोखे नबी (11:36–40)

नबियों का काम "भविष्यवाणी" के बजाय परमेश्वर के लिए और "बात करना" होता था। वे पाप को डांटते और प्राचीन मार्गों के अनुसार जीने का सही ढंग दिखाते थे (यिर्मयाह 6:16)। किसी विशेष आवश्यकता के समय वे परमेश्वर की ओर से सीधा संदेश पाने के लिए आशीषित थे। बेशक कुछ लोग आश्चर्यकर्म करते थे और कुछ नहीं, पर वे सभी आत्मा के द्वारा बोलते थे।

1 पतरस 1:10–12 यह दिखाता है कि जो संदेश उन्होंने बोले या लिखे वे परमेश्वर द्वारा आत्मा की प्रेरणा से दिए गए थे। उन्होंने अपने निजी विचारों का प्रचार नहीं किया बल्कि "यहोवा यों कहता है" ही बताया। परमेश्वर ने भी उन्हें केवल कुछ विचार देने के लिए उन पर भरोसा नहीं किया और कहा, "जैसे तुम्हें अच्छा लगे वैसे यह संदेश लोगों को दो।" इसके बजाय प्रचार करते हुए उन्होंने परमेश्वर का वचन बताया। लिखते समय उन्होंने केवल परमेश्वर के वचन ही लिखे। यह हो सकता है कि परमेश्वर ने हर लेखक की शब्दावली और बोलने की शैली का इस्तेमाल किया। जिस वाक्य रचना को इस्तेमाल करने के लिए नबी परिचित था और लोग सुनते थे उससे अलग वाक्य रचना में संदेश को बदलने की क्या आवश्यकता थी? 1 कुरिन्थियों 2:13 यह सुझाव देता है कि परमेश्वर ने उसके अर्थ को उनकी शब्दावलियों में "आत्मिक बातें आत्मिक बातों में मिला-मिलाकर" दीं।

या तो पवित्र शास्त्र में पूरी ("पूर्ण") प्रेरणा है, या हम इस पर बिल्कुल निर्भर नहीं हो सकते। यदि परमेश्वर ने "मौखिक, पूर्ण प्रेरणा" नहीं दी तो, हम कैसे कह सकते हैं कि हमारे पास उसका वही संदेश है जिसे वह देना चाहता था? आवश्यक संदेश को देने के लिए शब्दों का होना आवश्यक था।

टिप्पणियां

[1]डोनल्ड ए. हैग्नर, *एनकाउंटरिंग द बुक ऑफ हिब्रूज़: ऐन एक्सपोज़िशन,* एनकाउंटरिंग बिब्लिकल स्टडीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर अकेडमिक, 2002), 142. [2]डोनल्ड गुथरी, *द लैटर टू द हिब्रूज़: ऐन इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री,* द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 198 3), 227. [3]थॉमस जी. लॉन्ग, *हिब्रूज़,* इंटरप्रेटेशन (लुईसविल्ले: जॉन नॉक्स प्रैस, 1997), 113. [4]हैग्नर, 143.

[5]लॉन्ग, 113. [6]रे सी. स्टेडमैन, *हिब्रूज़,* द IVP न्यू टैस्टामैंट कमैंट्री सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1992), 116–17, एन. [7]फिलिप एजकुम्ब ह्युजस, *ए कमैंट्री ऑन द एपिस्टल टू द हिब्रूज़* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1977), 438–39. [8]हैग्नर, 142. [9]रेमंड ब्राउन, द *मैसेज ऑफ हिब्रूज़: क्राइस्ट अबव ऑल,* द बाइबल स्पीक्स टुडे (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1982), 198–99. [10]एफ़. एफ़. ब्रूस, द *एपिस्टल टू द हिब्रूज़,* द न्यू इंटरनैशनल कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1964), 279.

[11]मेरविन आर. विनसेंट, *वर्ड स्टडीज़ इन द न्यू टैस्टामैंट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1946), 4:509–10. [12]गुथरी, 225. [13]गरेथ एल. रीस, *ए क्रिटिकल एंड एक्सजेटिकल कमैंटी ऑन द एपिस्टल टू द हिब्रूज़* (मोबर्ली, मिज़ोरी. स्क्रिप्चर एक्सपोज़िशन बुक्स, 1992), 193, एन. 1. [14]ह्युजस, 441. [15]वहीं, 438. [16]थॉमस हेविट, द *एपिस्टल टू द हिब्रूज़: ऐन इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री,* द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1960), 171. [17]जेम्स मैकनाइट, *ए न्यू लिटरल ट्रांसलेशन, फ्रॉम ओरिजनल ग्रीक ऑफ़ ऑल द अपोस्टलिकल एपिस्टल्स विद ए कमैंट्री एंड नोट्स* (एडिनबर्ग: बाय द ऑथर, 1795; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1984), 560. [18]रीस, 194. [19]ब्रूस, *हिब्रूज़,* 279. [20]जेम्स टी. ड्रेपर, जूनि., *हिब्रूज़, द लाइफ दैट प्लीज़ज़ गॉड* (व्हीटन, इलिनोय: टिंडेल हाउस पब्लिशर्स, 1976), 294.

[21]हेविट, 172. [22]हेनरी अल्फोर्ड, द *न्यू टैस्टामैंट फॉर इंग्लिश रीडर्स* (शिकागो: मूडी प्रैस, 1958), 1553. [23]ब्रूस, *हिब्रूज़,* 281, एन. 24. [24]इन समूहों को लॉन्ग, 115, 119 से लिया गया था। [25]स्टेडमैन, 119. वचन में "से बढ़कर" के इस विचार के लिए देखें लूका 12:23. [26]रीस, 195, एन. 9. [27]मैकनाइट, 560. [28]ह्युजस, 455. [29]नील आर. लाइटफुट, *जीज़स क्राइस्ट टुडे: ए कमैंट्री ऑन द बुक ऑफ़ हिब्रूज़* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1976), 207, एन. 10. लाइटफुट ने ध्यान दिलाया कि इब्रानियों की पुस्तक में *laleo* ("बात करता है") "का इस्तेमाल ईश्वरीय बोल के लिए ही हुआ है।" इसलिए हाबिल आज "ईश्वरीय रूप में कहे गए पवित्रशास्त्र" के द्वारा बातें करता है। [30]उत्पत्ति 5:24 (LXX) संकेत देता है कि उठाए जाने से पूर्व हनोक ने परमेश्वर को प्रसन्न किया, परन्तु बाइबल के रिकार्ड की गवाही उसे उसके स्वर्ग में चले जाने के बाद दी गई। (ब्रूस, *हिब्रूज़,* 289, एन. 52.)

[31]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* 3रा संस्क., संशो. व संपा. फ्रैडरिक विलियम डैंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 2000), 302. [32]रीस ने कहा कि वे "बिल्कुल समानार्थी शब्द नहीं हैं" क्योंकि यहां पर "विश्वास" में परमेश्वर की इच्छा से मेल खाता जीवन जीना शामिल है। (रीस, 196, एन. 11.) 11:3 के सम्भावित अपवाद के साथ यह इब्रानियों की पुस्तक में सामान्य अर्थ के साथ मेल खाता हुआ प्रतीत होता है। [33]क्रेग आर. कोस्टर, *हिब्रूज़: ए न्यू ट्रांसलेशन विद इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री,* द एंकर बाइबल, अंक 36 (न्यू यॉर्क: डबलडे, 2001), 477. LXX में 2 मक्काबियों 8:16 में इस शब्द का इस्तेमाल अंतियोकुस एपिफेनस की शत्रु सेना के "भय" के सम्बन्ध में किया गया है। [34]बूक फॉस वैस्टकोट, द *एपिस्टल टू द हिब्रूज़: द ग्रीक टैक्स्ट विद नोट्स एंड एस्सेस* (लंदन: मैकमिलन एंड कं., 1889; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1973), 358. [35]"प्रतिज्ञा किए हुए देश" या "प्रतिज्ञात देश" अभिव्यक्ति बाइबल में केवल इब्रानियों 11:9 में मिलती है। [36]कोस्टर, 485, 494–97. [37]NIV में उत्पत्ति 12:1–3 में संकेत है कि अब्राहम से परमेश्वर ने पहले यही "कहा था।" [38]चार्ल्स रोसनबरी अर्डमैन, द *एपिस्टल टू द हिब्रूज़: ऐन एक्सपोज़िशन* (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1934), 11. [39]रॉबर्ट मिलिगन, *ए कमैंट्री ऑन द एपिस्टल टू द हिब्रूज़,* न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (सिनसिनाटी: चेस एंड हॉल, 1876; रिप्रिंट नैशविल्ल: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1975), 396. [40]ब्रूस, *हिब्रूज़,* 298–99.

[41]वहीं, 299–301. [42]रीस, 200. रोमियों 4:19 में पौलुस ने रोमियों की पुस्तक में "मरे हुए से" के लिए उसी पूर्ण कृदंत का इस्तेमाल किया है जिसका इस्तेमाल यहां पर हुआ है। (ब्रूस, *हिब्रूज़,* 302.) [43]एफ़. एफ़. ब्रूस ने टिप्पणी की कि लेखक का *pistei* ("विश्वास से") से *kata pistin* ("विश्वास में") तक बदलना "केवल साहित्यिक बदलाव के द्वारा" था (ब्रूस, *हिब्रूज़,* 302, एन. 113)। [44]एलेक्जेंडर नेयरने, द *एपिस्टल ऑफ़ प्रीस्टहुड; स्टडीज़ इन द एपिस्टल टू द हिब्रूज़* (एडिनबर्ग: टी. एंड टी. क्लार्क, 1913), 396. [45]कोस्टर, 498. [46]उत्पत्ति 22:1–14 में दिए गए विवरण को यहूदियों द्वारा लम्बे समय से "इसहाक का बन्धन" कहा जाता है। इसे "शहादत के छुटकारा दिलाने वाले प्रभाव" का बेहतरीन उदाहरण माना जाता है (ब्रूस, *हिब्रूज़,* 309)। शायद इस वचन को "अब्राहम का परखा जाना" के नाम से जाना चाहिए। परमेश्वर ने सचमुच में उसे "परखा," जिसका अर्थ है कि "किसी को किसी कठिन परिस्थिति में डालना जिससे उस व्यक्ति के स्वभाव का पता चल सके" (कोस्टर, 490–91)। [47]ह्युजस, 482, एन. 51. [48]गुथरी, 236. [49]ब्रूस, *हिब्रूज़,* 311. [50]अंत में, परमेश्वर ने अब्राहम को बलिदान पूरा

नहीं करने दिया। इसके बजाय उसने उस उद्देश्य के लिए एक मेमना उपलब्ध करवा दिया। सम्भवतया यह कंटीली झाड़ियों में फंसा होगा और खामोशी से प्रतीक्षा कर रहा होगा। अब्राहम ने मेमने को देखा और उसे परमेश्वर को भेंट चढ़ाने के लिए इस्तेमाल किया। (देखें उत्पत्ति 22:8, 13, 14.)

[51]*द एपिस्टल ऑफ़ बरनाबस* 7:3; इरेनियुस अगेंस्ट 4.5.4. [52]कोस्टर, 492. [53]ह्युजस, 487. [54]जोसेफस *एन्टिक्विटीज़* 15.7.9. [55]ब्राउन, 212. [56]इब्रानी बाइबल में ***mittah*** है जिसका अर्थ ''बिस्तर'' है, और ''लाठी'' के लिए शब्द ***matteh*** है। मूल इब्रानी भाषा में दोनों शब्द बिल्कुल वही हैं। स्वर के बिन्दु ईस्वी 900 के लगभग मेसोरटियों द्वारा जोड़े गए थे। उन्हें ही शब्द की गलती लगी हो सकती है। (जिम्मी ऐलन, *सर्वे ऑफ़ हिब्रूज़,* 2रा संस्क. [सरसी, आरकैंसा: बाय द ऑथर, 1984], 129.) [57]कोस्टर, 493. [58]गुथरी, 238. [59]माता पिता के बच्चे को छुपाने की बात तो है, परन्तु फिर वह शाही महल में बड़ा होता है। बाद में वह अपने पद का त्याग कर देता है और दुख तकलीफ़ वाले जीवन को अपना लेता है। विनाश का खतरा होता है पर शत्रु नष्ट हो जाते हैं और इस्राएल बच जाता है। (कोस्टर, 507 से लिया गया।) [60]जैसा कि ब्रूस, *हिब्रूज़,* 317, एन. 171 में लिखा गया है, LXX में माता-पिता दोनों के विश्वास का उल्लेख है।

[61]फिलो *लाइफ ऑफ मोसेस, 1* 3.9. [62]वहीं, 13.23-24; जोसेफस *एन्टिक्विटीज़* 2.9.6. [63]जोसेफस *एन्टिक्विटीज़* 2.10. [64]यूपोलेमस (लगभग 150 ई. पू.) के लेख केवल खण्डों में बचे हैं। यह बात यूसबियुस ऑफ़ कैसरिया *प्रेपरेशन ऑफ़ द गॉस्पल* 9.26.1 में सम्भाल कर रखी गई। [65]यह मनेथो (या मिस्र के सबसे बड़े इतिहासकार सबेन्नाइटोस के मनेथोन) द्वारा दी गई मिस्री राजाओं की सूची के अनुसार है। इस सूची पर विवाद है; परन्तु यदि यह सही है तो मूसा का जन्म लगभग 1525 ई. पू. में हुआ और कूच 1446-1447 ई. पू. में हुआ। थुटमोस द्वितीय और थुटमोस तृतीय नामक दो फ़िरौनों के सिंहासन के पीछे की शक्ति स्पष्टतया हैशएप्सुट ही था। अच्छा संक्षिप्त विवरण रीस, 205-6, एन. 36 में दिया गया है। [66]''भण्डार'' शब्द का मूल विचार ''गोदाम'' (***thesauros***) था। मिस्र के अनाज से बहुत धन मिलता था। (कोस्टर, 503.) पहली सदी में मिस्र रोम का अन्न-भण्डार था। (जोसेफस, *वार्स* 4.10.5.) [67]ह्युजस, 496-97. [68]लाइटफुट, 217. [69]ब्रूस, *हिब्रूज़,* 322. [70]कोस्टर, 509.

[71]मिलिगन, 412-13. [72]वैस्टकोट, 373; ह्युजस, 498. [73]एफ़. एफ़. ब्रूस, *द बुक्स एंड द पार्चमैंट्स,* संशो. संस्क. (वैस्टवुड, न्यू जर्सी: फलेमिंग एच. रेवल कं., 1963), 44. [74]केन्नथ सेमुएल वुएस्ट, *हिब्रूज़ इन द ग्रीक न्यू टैस्टामैंट फ़ॉर द इंग्लिश रीडर* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1951), 208. [75]ब्रूस, *हिब्रूज़,* 325, एन. 214. ''सरकण्डों का समुद्र'' (***yam suph***) इसके उत्तरी विस्तार के साथ शवेज़ खाड़ी और अकाबा की खाड़ी दोनों के लिए इस्तेमाल होने वाला शब्द था। ये खाड़ियां लाल समुद्र का भाग हैं, जिस कारण बाइबल इसे किसी भी प्रकार से चुने, सही ही है। (ऐलन, 132.) [76]*द न्यू इंटरनैशनल बाइबल कमैंट्री,* संपा. एफ़. एफ़. ब्रूस, एच. एल. एलिसन, एंड जी. सी. डी. हाउले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाऊस, 1986), 1528 में गेरल्ड एफ़. हाअथार्न, ''हिब्रूज़।'' [77]ब्रूस, *हिब्रूज़,* 327, एन. 226. [78]साइमन जे. किस्टमेकर, *एक्सपोज़िशन ऑफ द एपिस्टल टू द हिब्रूज़,* न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाऊस, 1984), 347. [79]कोस्टर, 517. [80]ब्रूस, *हिब्रूज़,* 332.

[81]वहीं, 33. [82]ऐलन, 133. मैं यूसुफ़ को इस श्रेणी में नहीं रख सकता; मुझे लगता है कि वह केवल एक तरुण युवा था जिसने बचपन की उत्तेजना में अपने स्वप्नों को बता दिया। [83]नाम देने का यह ढंग गुथरी, 243-44 से लिया गया है। [84]पहले इब्रानियों की पुस्तक में लगभग हर जगह ''विश्वास ही के द्वारा'' था, पर यहां यह ''विश्वास से'' है। NASB (तथा हिन्दी-अनुवादक) में अन्तर नहीं किया गया है। (रीस, 211, एन. 54.) ब्रूस ने लिखा है कि चार लोगों में से तीन पर प्रभु के आत्मा के उतरने की बात कही जाती है (गिदोन, न्यायियों 6:34; यिप्तह, न्यायियों 11:29; और शिमशोन, न्यायियों 13:25), ''और इसे उनके विश्वास के निर्णायक प्रमाण के रूप में लिया जा सकता है'' (ब्रूस, *हिब्रूज़,* 331)। [85]देखें 1 मक्काबियों 13:17-20. [86]2 मक्काबियों 26:18-28. [87]2 मक्काबियों 7. [88]जोसेफस *वार्स* 2.21.5; 6.5.3. [89]हेविट, 187. [90]1 मक्काबियों 2:38.

[91]कोस्टर, 520. [92]चार्ल्स वैसली, ''लैट अस ज्वाइन अवर फ्रैंड्स अबव'' (http://gbgm-umc.org/Umhistory/wesley/hmns/umh709.stm; इंटरनेट; 21 सितम्बर 2006 को देखा गया)। [93]ड्रेपर, 314. [94]जेम्स रस्सल लौवल (1819-91), ''द प्रैज़ेंट क्राइसिस,'' *द कम्पलीट पोयटिकल वर्क्स ऑफ़ जेम्स रस्सल लावेल,* सम्पा. होरेस ई. स्कडर (बोस्टन: हाउटन मिफलिन कं., 1897), 67. [95]ह्युजस, 462. [96]लॉन्ग, 115. [97]ब्राउन, 202. [98]''विदेशी भूमि'' में रहने का अर्थ था कि अब्राहम एक ''देशीय प्रदेशी'' था जिसके पास वर्षों तक उस देश में रहने के बावजूद, एक नागरिक वाले अधिकार नहीं थे। (कोस्टर, 494.) [99]*द एपिस्टल ऑफ़ मथेटस टू डायोग्नेटस* 5:5. हो सकता है कि ''मथेटस'' उपयुक्त संज्ञा न हो; इसका सरल अर्थ है ''एक चेला।'' [100]कोस्टर, एन. 400.

[101]जेम्स बर्टन कॉफ़मैन, *कमैंट्री ऑन हिब्रूज़* (ऑस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1971), 295.